वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 321
ISBN 978-93-80353-49-4

# जैन काव्य कथाएँ

*–रचयित्री –*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी**

भगवान शांतिनाथ जन्म, दीक्षा व निर्वाणकल्याणक दिवस–ज्येष्ठ कृ. चतुर्दशी, 11 जून 2010 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर वर्ष'' के अन्तर्गत प्रकाशित

**-प्रकाशक-**

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान**

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

फोन नं.- (01233) 280184, 292943

**Website : www.jambudweep.org**

**E-mail : ravindrajain@jambudweep.org**

| प्रथम संस्करण | वीर नि. सं. 2536 | मूल्य |
|---|---|---|
| 1100 प्रतियाँ | आश्विन शुक्ला 15 | 20/-रु. |

22 अक्टूबर 2010, शरदपूर्णिमा

**दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित**

**वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला**

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

*–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–*

**परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी**

*–: मार्गदर्शन :–*

**प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी**

*–: निर्देशन :–*

**धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज**

*–: सम्पादक :–*

**कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन**

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

**कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क**

**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**

# सम्पादकीय

**–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन**

मानव जीवन में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। उत्तम देश, कुल एवं जाति को प्राप्त करके भी यदि मानव सदाचरण रूप संस्कार को जीवन में नहीं प्राप्त करता है तो उसका जीवन पशु के समान निस्सार हो जाता है। कहा भी है–

**ज्ञानेन हीनः पशुभिः समानः।**

इससे स्पष्ट होता है कि जीवन में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए और मानव जीवन के उत्थान के लिए बाल्यावस्था से ही धार्मिक एवं नैतिक ज्ञान को ग्रहण करना अति आवश्यक है। इस दिशा में साहित्यिक दृष्टि से देखा जाए तो नाटक का मंचन सशक्त भूमिका निभाता है। प्रायः देखने में आता है कि किसी स्थान पर नाटक आदि का मंचन होता है तो उस नगर की काफी जनसंख्या उसे देखने के लिए एकत्रित हो जाती है और मनोरंजन के साथ-साथ प्रेरणास्पद घटनाओं को देखकर जीवन निर्माण हेतु सहज ही शिक्षा प्राप्त कर लेती है। जैसे– रामलीला आदि के आयोजन से लोग 10 दिन तक राम-रावण के जीवन का तुलनात्मक अध्ययन कर अंततः अन्याय पर न्याय, असत्य पर सत्य की विजय की शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं।

इस पुस्तक में ऐसे ही अनेक शास्त्रोक्त कथानक हैं जिनको पद्यमय भाषा में रचकर परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने महापुरुषों के जीवनवृत्त से परिचित कराने के साथ-साथ अच्छे आदर्शों, नैतिक मूल्यों एवं धार्मिक प्रवृत्ति को हृदय में धारण करने का सुन्दर माध्यम प्रदान किया है। अगर हम इन नाटकों में वर्णित किन्हीं भी महापुरुष के जीवन से कुछेक आदर्शों को ही ग्रहण कर लेंगे तो हमारे जीवन का निश्चित ही उत्थान होगा। इस पुस्तक में वर्णित कथाओं के माध्यम से नाटकों का मंचन करते हुए आप सभी भव्यात्मा जीव कुछ शिक्षा ग्रहण कर अपने जीवन को समुन्नत बनावें, यही इस पुस्तक और रचनाकर्त्री के श्रम की सार्थकता है।



# प्रस्तावना

**–ब्र. कु. इन्दू जैन (संघस्थ)**

जनसामान्य के परिज्ञान हेतु श्रव्यकाव्य अर्थात् शास्त्र-पुराणों को सुनने की अपेक्षा दृश्यकाव्य अर्थात् नाटक आदि का मंचन अत्यधिक उपयुक्त होता है क्योंकि दृश्यकाव्य सुनने में कर्णप्रिय तो होता ही है, साथ में अभिनय प्रधान होने के कारण यथार्थ के निकट पहुँचने में अत्यन्त सहायक होता है। भारतभूमि पर निवास करने वाला प्रत्येक मानव प्राचीनकाल से ही नाटक आदि दृश्य काव्यों के माध्यम से नैतिक शिक्षा एवं आनंद को प्राप्त करता आ रहा है। पूर्व में भी यहाँ अभिनयपूर्ण रचनाएँ ही मनोरंजन एवं लोकव्यवहार की परिचायक थीं जिनके माध्यम से नैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक शिक्षाएँ दी जाती थीं। इतिहास गवाह है कि देश की परतंत्रता के समय इन अभिनयपूर्ण रचनाओं एवं क्रांतिकारी, देशभक्ति से भरे संगीत ने स्वतंत्रता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज भी इसका परिवर्तित रूप टी.वी. चैनल्स, फिल्म आदि के माध्यम से जनता के समक्ष आता है। हाँ इतना अवश्य है कि पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित इन चैनल्स के प्रसारण ने मानव को नैतिकता एवं संस्कृति से परे ढकेलकर सभ्यता एवं संस्कृति से कोसों दूर कर दिया है और ऐसे समय में आवश्यक है कि उन्हें पुनः नये रूप में अपने तीर्थंकर महापुरुषों, देशभक्त शहीदों एवं संस्कृति को गौरवान्वित करने वाले मनीषियों के जीवन से परिचित करवाकर उनका रूझान इस ओर बढ़ाया जाये और संस्कृति और सभ्यता को अक्षुण्ण रखा जाए।

जैनधर्म का आख्यानपरक साहित्य विश्व में महत्त्वपूर्ण है। चारों अनुयोगों में निबद्ध द्वादशांगमयी जिनवाणी के प्रथमानुयोग में तीर्थंकर महापुरुषों, प्राचीन आचार्यों, महान आर्यिकाओं एवं अन्य प्रेरणास्पद चरित्रों का जो वर्णन आया है वह मानव ज्ञान के लिए सर्वथा उपादेय है। इन आख्यानों और घटनाओं को दृश्य काव्यों के रूप में उपनिबद्ध कर समय-समय पर अनेक आचार्यों एवं आर्यिका माताओं ने समाज के समक्ष ज्ञानवर्द्धन हेतु प्रस्तुत किया है जिनमें सर्वोपरि नाम आता है जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी, सरस्वती स्वरूपा गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का, जिनके द्वारा रचित लगभग 300 रचनाओं में आबाल-गोपाल, बालक, युवा, वृद्ध, विद्वान सभी के ज्ञानवर्धन के लिए इतनी सामग्री है कि पढ़ने के लिए समय कम पड़ जाए। उन रचनाओं में अनेक नाटक आदि

भी हैं जिन्हें समय-समय पर पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है।

लेखन की उसी शृंखला में गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करने वाली उनकी सुशिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी हैं जिन्होंने पूज्य माताजी की आज्ञानुसार अनेकों कृतियाँ साहित्यजगत को प्रदान की हैं और अनवरत यह शृँखला चालू है। हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका पूज्य आर्यिकाश्री आशु कवियित्री भी हैं, जहाँ उन्होंने गद्य में अनेक कृतियों की रचना की है वहीं समय की मांग को देखते हुए अनेक पद्यरूप कृतियों की भी रचना की है।

चूँकि वर्तमान युग में सांसारिक उलझनों में फंसे प्राणी के पास समय का अभाव है और कुछ क्षण समय निकालकर अगर वह मनोरंजन करना भी चाहता है, समय-समय पर नाटक आदि के माध्यम से अपनी प्रतिभा निखारना भी चाहता है तो उसमें लिखे वाक्यों का रटना उसे कठिन प्रतीत होता है और वह अपने प्राचीन ऐतिहासिक ज्ञान से वंचित रह जाता है ऐसे समय में प्राचीन शास्त्र-पुराणों में लिखित तीर्थंकर महापुरुषों, परम पूज्य संतों के जीवन चरित्र को काव्यमय झांकी में प्रस्तुत कर उसे जनमानस के समक्ष सुलभतया प्रस्तुत करने का स्तुत्य कार्य पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने किया है जिसके लिए साहित्यजगत उनका चिरऋणी रहेगा। प्रसंगोपात्त विषय को क्षणमात्र में काव्यरूप में प्रस्तुत करने वाली पूज्या माताजी ने गुरुआज्ञा से अनेक काव्यमय कथाओं का लेखन किया है जिनका संग्रह प्रस्तुत पुस्तक में किया है। इस 'जैन काव्य कथाएँ' पुस्तक में प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव, तीर्थंकर पार्श्वनाथ, तीर्थंकर महावीर, चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर महाराज, पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का जीवनवृत्त, मोक्षसप्तमी का महत्त्व, चातुर्मास स्थापना आदि कई एक कथानकों का वर्णन है, जिसके माध्यम से मंचन करने वाले एवं देखने वाले प्राणियों का मनोरंजन होने के साथ-साथ पुण्यवर्धन एवं ज्ञानवर्धन भी होगा और जीवन निर्माण की प्रेरणा प्राप्त होगी।

इन प्राचीन एवं अर्वाचीन सत्य कथाओं के माध्यम से आप सभी अपने जीवन में प्रेरणा प्राप्तकर जीवन का उत्थान करें और क्रम-क्रम से आत्मा को परमात्मा बनाने की ओर अग्रसर होवें, यही मंगल कामना है।



# परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का मंगल आशीर्वाद

संस्कार विहीन होते आज के भौतिकवादी युग में मानव को धर्ममार्ग की ओर उन्मुख करना अति आवश्यक है। पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित आज की पीढ़ी देव-शास्त्र-गुरु की भक्ति से दूर अश्लील साहित्य, फिल्में, पार्टी, क्लब आदि से स्वयं का मनोरंजन कर उसी में अनुरक्त देखी जाती है, ऐसे समय में कैसे अपनी संस्कृति, अपनी भारतीय परम्परा का परिज्ञान उन्हें करवाया जाए, यह एक ज्वलन्त समस्या हैं।

देखा जाए तो प्राणी के अंदर आज भी कहीं न कहीं अपनी संस्कृति से जुड़ने की भावना जीवित है बस काल के थपेड़ों से वह सुप्तप्राय सी है जिसे अगर कोई जागृत कर सकता है, तो वह हैं धर्मगुरु। जिन वैज्ञानिक साधनों का सहारा लेकर आज की युवा पीढ़ी गलत मार्ग का आश्रय ले रही है उसी वैज्ञानिक माध्यमों का सहारा लेकर अशुभ से शुभ की ओर उन्हें प्रवृत्त किया जा सकता है जिसमें इंटरनेट, टी.वी., समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, नाटक, भजन, कहानियाँ आदि महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और इस ओर धर्मगुरुओं ने अनेकों प्रयास किए हैं जिसके फलस्वरूप लोगों में धर्म की ओर झुकाव पहले की अपेक्षा बढ़ा है। मैंने अनुभव किया है कि कभी महोत्सव आदि के मध्य जब लोगों के मनोरंजन के लिए समिति द्वारा नाटकों का आयोजन किया जाता है तो सभी आगंतुक एकत्रित होकर बड़ी तन्मयता से उसे देखते हैं और शिक्षा भी ग्रहण करते हैं अतः मैंने लेखन प्रतिभा की धनी अपनी शिष्या आर्यिका चन्दनामती जी को समय-समय पर अनेक नाटकों को लिखने की प्रेरणा प्रदान की है और मुझे प्रसन्नता है कि उन्होंने अपनी समयोजित, सारगर्भित एवं रोचक रचनाओं के माध्यम से धर्म के मर्म को अच्छी तरह प्रस्तुत किया है, जिससे लोगों को अनेक शास्त्रोक्त एवं जीवनोपयोगी ज्ञान प्राप्त हुआ है।

वे सदैव इसी प्रकार अपनी आगमोक्त, सारभूत कृतियों के द्वारा जिनागम की सेवा करते हुए भव्य प्राणियों को धर्म एवं संस्कृति में आरुढ़ करती रहें और ज्ञान की गंगा को प्रवाहित करते हुए एक दिन स्वयं में पूर्णज्ञान–कैवल्यज्ञान को प्रकट कर संसार परम्परा को समाप्त करने में सफल होवें, यही उनके यशस्वी जीवन के लिए मेरा मंगल आशीर्वाद है।

## पुस्तक की प्रेरणास्रोत, राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

# श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

**-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती**

भारत की वसुन्धरा सदैव से तपस्या, त्याग एवं संयम की भूमि रही है। भगवान ऋषभदेव, राम, महावीर की यह भूमि आज भी ऐसे महान व्यक्तित्वों से सुशोभित है कि जो अपने जीवन में ही ऐतिहासिक बन जाते हैं।

ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व है– वर्तमान दिगम्बर जैन समाज की सबसे प्राचीन दीक्षित साध्वी-पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी। सन् 1934 में शरदपूर्णिमा के दिन जिला बाराबंकी (उ.प्र.) के टिकैतनगर ग्राम में माता मोहिनी एवं पिता श्री छोटेलाल जैन के दाम्पत्य जीवन के प्रथम पुष्प के रूप में कन्यारत्न 'मैना' का जन्म हुआ। छोटी-सी आयु से ही अपनी माँ की प्रेरणावश जैन ग्रंथों के स्वाध्याय द्वारा इस बालिका ने अपने वैराग्य को भलीभाँति दृढ़ कर लिया और 18 वर्ष की अल्प आयु में शरदपूर्णिमा के दिन ही परिवार के प्रबल विरोध के बावजूद भी आजन्म ब्रह्मचर्यव्रत एवं गृहत्याग के कठिन नियम धारण कर लिये। सन् 1953 में श्री महावीर जी (राज.) अतिशय क्षेत्र पर आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से आपने क्षुल्लिका दीक्षा लेकर 'वीरमती' नाम प्राप्त किया। पुनः 1956 में बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज की आज्ञानुसार उनके प्रथम पट्टाधीश शिष्य आचार्यश्री वीरसागर जी महाराज से माधोराजपुरा (राज.) में आपने आर्यिका दीक्षा लेकर 'ज्ञानमती' नाम प्राप्त किया। ज्ञान प्राप्ति हेतु अध्ययन-अध्यापन एवं स्वाध्याय के प्रति आपकी विशेष अभिरुचि देखकर ही गुरुवर ने आपको यह नाम प्रदान किया था। दीक्षा के प्रारंभिक वर्षों में आपने सर्वप्रथम संस्कृत व्याकरण एवं जैन आगम का तलस्पर्शी ज्ञान प्राप्त किया तथा साथ ही सहस्रनाम मंत्रों की रचनापूर्वक अपनी लेखनी का शुभारंभ भी कर दिया।

57 वर्षों से साधनारत इन महान साध्वी ने अब तक 250 से भी अधिक ग्रंथों का सृजन किया है। संस्कृत, हिन्दी, प्राकृत, कन्नड़ इत्यादि भाषाओं की प्रकाण्ड विदुषी पूज्य माताजी की काव्य प्रतिभा भी अद्वितीय है। जिनेन्द्र भक्ति के रस से भरे हुए न जाने कितनेही पूजन-विधानों की रचना पूज्य माताजी ने अपनी लेखनी द्वारा की है। सन् 1995 में डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय (फैजाबाद) ने पूज्य माताजी की विराट ज्ञान साधना को देखकर जैन इतिहास में प्रथम बार किसी साध्वी को 'डी.लिट्.' की मानद उपाधि प्रदान की।

कर्मठता, दृढ़संकल्प, अनुशासन के साथ-साथ वात्सल्य की प्रतिबिम्ब पूज्य माताजी की प्रेरणा से कौरवों-पाण्डवों की राजधानी हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.) में जैन भूगोल की अद्वितीय रचना-'जम्बूद्वीप' का निर्माण हुआ है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान कल्याणक भूमि-प्रयाग (इलाहाबाद) में 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ' का भव्य निर्माण भी पूज्य माताजी की सृजनशक्ति का ही सुन्दर प्रतिफल है। इसी प्रकार भगवान महावीर जन्मभूमि-कुण्डलपुर (नालंदा) में नंद्यावर्त महल



तीर्थ का भव्य निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा एवं ससंघ सानिध्य में मात्र 22 माह के अल्प अन्तराल में हुआ है।

2600 वर्ष पूर्व कुण्डलपुर (नालंदा) की जो धरती अहिंसा के अवतार भगवान महावीर के जन्मकल्याणक से महान उत्साह एवं हर्ष को प्राप्त हुई थी वह काल के थपेड़ों से भले ही विस्मृत जैसी हो गयी हो, परन्तु जैन समाज के श्रद्धालुओं का वहाँ जाना हमेशा से जारी रहा और अब पूज्य ज्ञानमती माताजी के महान उपकार स्वरूप यह जन्मभूमि पुनः इस प्रकार जगमगा उठी है कि आने वाला भविष्य सदैव इसकी चमक से प्रभावित रहेगा।

पूज्य माताजी की प्रेरणा से जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982) एवं भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार रथ (1998) का देशव्यापी प्रवर्तन सम्पन्न हुआ एवं कुण्डलपुर से प्रवर्तित भगवान महावीर ज्योति रथ (2003) का प्रवर्तन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ है। इन रथों के द्वारा सम्पूर्ण भारत में अहिंसामयी सिद्धान्तों की व्यापक प्रभावना हुई।

शैक्षणिक क्षेत्र में अनेकानेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ-सेमिनार इत्यादि पूज्य माताजी की प्रेरणा द्वारा समय-समय पर सम्पन्न हुए हैं। पूज्य माताजी के विराट व्यक्तित्व का अभिनंदन करने के लिए समाज ने उन्हें समय-समय पर युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, न्याय प्रभाकर, आर्यिकारत्न, गणिनीप्रमुख, युगनायिका, राष्ट्रगौरव, विश्वविभूति, वाग्देवी, भारतभूषण जैसी उपाधियों से सम्मानित करके स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया है। वर्तमान में महाराष्ट्र प्रान्त के मांगीतुंगी पर्वत पर विश्व की सबसे ऊँची 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की प्रतिमा का निर्माण पूज्य माताजी की प्रेरणा से हो रहा है।

24 घंटे में एक बार आहार लेकर, केशलोंच एवं पदविहार जैसी कठिन साधना करते हुए ब्रह्मचर्य एवं चारित्र के तेज को सर्वत्र बिखेरने वाली पूज्य ज्ञानमती माताजी भारतीय संस्कृति की महान धरोहर हैं, जिन्होंने 15 अप्रैल 2006 को अपनी आर्यिका दीक्षा के 50 वर्षों को पूर्ण किया है। 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पूज्य माताजी की प्रेरणा से आयोजित विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन भारत की प्रथम महिला राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील के करकमलों से हुआ और सन् 2009 ''शांतिवर्ष'' के रूप में घोषित हुआ। राष्ट्रपति जी ने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में पधारकर पूज्य माताजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

दीर्घकालीन तपस्विनी ऐसी पूज्यनीया माताजी ने सन् 2009 में अपने जीवन के 75 वर्ष पूर्ण किए जिसे सन् 2008 से 2009 तक राष्ट्रीय स्तर पर ''हीरक जयंती महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाया गया।

वास्तव में आज के कलिकाल में भी आध्यात्मिक ज्ञान, चारित्र, साधना एवं मोक्षपथ को साकार करने वाले गुरुओं का जितना अभिनंदन किया जाये, उतना कम है। जो बिना कुछ कहे अपनी मुद्रा द्वारा ही शांति, संयम, सदाचार का उपदेश देते हैं ऐसे साधु इस भारत वसुन्धरा की शान हैं और हम जैसे जो भी प्राणीगण परमसौभाग्य से उनके चरणों में आश्रय प्राप्त कर लेते हैं, वे भी अपने जीवन को सही अर्थों में सार्थक कर लेते हैं।

ऐसे चतुर्मुखी प्रतिमा की धनी पूज्य माताजी के श्रीचरणों में भावभीना कोटिशः नमन है।

## *पुस्तक की रचयित्री, पूज्य प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका*

# श्री चन्दनामती माताजी का संक्षिप्त परिचय

**-ब्र. कु. बीना जैन (संघस्थ)**

**नाम** – प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी

**दीक्षा पूर्व नाम** – ब्र. कु. माधुरी शास्त्री

**जन्मतिथि** – 18-5-1958 (ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या)

**जन्मस्थान** – टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

**माता-पिता** – श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जी जैन

**भाई** – चार (कैलाशचंद, स्व. प्रकाशचंद, सुभाषचंद एवं कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र जैन)

**बहन** – आठ (गणिनी आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री अभयमती माताजी सहित)

**लौकिक शिक्षा** – हाईस्कूल

**गुरुसंघ में आगमन** – सन् 1969

**आजीवन ब्रह्मचर्यव्रत** – सन् 1971, अजमेर में सुगंध दशमी को गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

**धार्मिक अध्ययन** – 1972 में सोलापुर से ''शास्त्री'' की उपाधि, 1973 में ''विद्यावाचस्पति'' की उपाधि

**द्वितीय एवं सप्तम प्रतिमा के व्रत** – सन् 1981 एवं 1987 में गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी से

**आर्यिका दीक्षा** – हस्तिनापुर में 13-8-1989, श्रावण शु. 11 को गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी से

**प्रज्ञाश्रमणी की उपाधि** – 1997 में चौबीस कल्पद्रुम महामण्डल विधान के पश्चात् राजधानी दिल्ली में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा।

**साहित्यिक योगदान** – चारित्रचन्द्रिका, तीर्थंकर जन्मभूमि विधान, नवग्रहशांति विधान, भक्तामर विधान आदि लगभग 100 पुस्तकों का लेखन, वर्तमान में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा ''षट्खण्डागम (प्राचीनतम जैन सूत्र ग्रंथ) एवं ''भगवान ऋषभदेव चरितम्'' की संस्कृत टीकाओं का हिन्दी अनुवाद कार्य, 'समयसार' एवं 'कुन्दकुन्दमणिमाला' इत्यादि ग्रंथों का पद्यानुवाद। भजन (300 से अधिक), पूजन, चालीसा, स्तोत्र इत्यादि लेखन की अद्भुत क्षमता, हिन्दी भाषा के साथ-साथ अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं की सिद्धहस्त लेखिका, गणिनी ज्ञानमती गौरव ग्रंथ की प्रधान सम्पादिका।



# दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान का परिचय

**-पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर**

जिस हस्तिनापुर में इस संस्थान द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर कार्य कलाप चल रहे हैं, प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की पारणा, कौरव-पाण्डव की राजधानी, दर्शन प्रतिज्ञा में प्रसिद्ध मनोवती का इतिहास आदि पौराणिक कथानकों से जुड़ी वह हस्तिनापुर नगरी एक ऐतिहासिक एवं पौराणिक नगरी है। **सन् 1972** में पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के नाम से दिल्ली में इस संस्था का जन्म हुआ।

**सन् 1974** से हस्तिनापुर में निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया और अब तक वहाँ अनेक भव्य रचनाएं, मंदिर, कमरे, फ्लैट, कोठियां, भोजनालय, टंकी आदि बन चुके हैं। निर्माण के अतिरिक्त संस्थान के द्वारा शिक्षा एवं धर्म प्रचार-प्रसार हेतु शिक्षण शिविर, सेमिनार, अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन आदि के आयोजन भी होते रहते हैं। पूज्य माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा लिखित चारों अनुयोगों एवं धर्मप्रभावना के समाचारों से सहित सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका का प्रकाशन **सन् 1974** से बराबर निर्बाध गति से चल रहा है। संस्थान के अंतर्गत ही **सन् 1972** में स्थापित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला से **300** से भी अधिक ग्रंथ लाखों की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं। यहां जम्बूद्वीप पुस्तकालय, णमोकार महामंत्र बैंक, गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ आदि के द्वारा धार्मिक शैक्षणिक एवं पारमार्थिक कार्यक्रम चलते रहते हैं। सन् 1975 से प्रारंभ पंचकल्याणकों में अब तक अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाएं एवं प्रति 5 वर्षों में होने वाले जम्बूद्वीप महामहोत्सव में से 4 महोत्सव हो चुके हैं। इस संस्थान द्वारा जहाँ पूज्य माताजी की प्रेरणा से सन् 1982 में दिल्ली से स्व. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा उद्घाटित जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति रथ का 1045 दिनों तक सम्पूर्ण भारत में भ्रमण एवं हस्तिनापुर में उसकी अखण्ड स्थापना हुई, सन् 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित भगवान ऋषभदेव समवसरण श्रीविहार द्वारा अहिंसामयी सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हुआ। वहीं भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) से महामहिम राज्यपाल बिहार प्रान्त द्वारा प्रवर्तित **''भगवान महावीर ज्योति''** रथ के भारत भ्रमण से जनमानस भगवान महावीर के विषय में आगमसम्मत ज्ञान से परिचित हुआ है। जम्बूद्वीप स्थल पर समय-समय पर भव्य दीक्षाएं भी सम्पन्न हुई हैं। इसी संस्थान द्वारा दिल्ली के लालकिला मैदान में 4 फरवरी सन् 2000 को प्रधानमंत्री श्री वाजपेयी द्वारा उद्घाटित ''भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव'' सम्पूर्ण देश एवं विदेशों में मनाया गया। जिसके अंतर्गत अनेक संगोष्ठियाँ, भगवान ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ निर्माण आदि कार्यक्रम हुए। सन् 2000-2001 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से

भगवान ऋषभदेव की दीक्षा एवं केवलज्ञान भूमि प्रयाग-इलाहाबाद में बनारस हाइवे पर **''तीर्थंकर ऋषभदेव दीक्षातीर्थ''** का नवनिर्माण हुआ है तथा 6 अप्रैल सन् 2001 को ही प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा उद्घाटित राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाए जाने वाले भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव वर्ष में पूज्य माताजी द्वारा रचित ''विश्वशांति महावीर विधान'' का विराट आयोजन प्रथम राष्ट्रीय आयोजन के रूप में राजधानी दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में अक्टूबर 2001 में सम्पन्न हुआ। उसी जन्मकल्याणक महोत्सव के अंतर्गत सन् 2003-2004 में संस्थान द्वारा पूज्य माताजी की प्रेरणा से भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर का विकास कार्य द्रुतगति से हुआ है। ''नंद्यावर्त महल'' नामक तीर्थ परिसर वहाँ का विशेष दर्शनीय स्थल पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

कुण्डलपुर विकास संपन्न होने के पहले ही पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने आगामी वर्ष 2005 को ''भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव वर्ष'' के रूप में मनाने का सारे देश को आह्वान किया और प्रेरणा दी। तदुपरांत पूज्य माताजी ससंघ ने कुण्डलपुर से 14 नवम्बर 2004 को भगवान पार्श्वनाथ की जन्मभूमि बनारस के लिए विहार किया और पूज्य माताजी के सानिध्य में बनारस में भगवान पार्श्वनाथ की जन्मजयंती 6 जनवरी 2005 को इस पार्श्वनाथ महोत्सव वर्ष का जोर-शोर के साथ सारे देश की जनता के बीच उत्तरप्रदेश के लोक निर्माण मंत्री-श्री शिवपाल सिंह यादव एवं अन्य अतिथियों द्वारा उद्घाटन किया गया। इस महोत्सव वर्ष के अंतर्गत सर्वप्रथम लम्बे समय से प्रतीक्षित भगवान श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि सिंहपुरी-सारनाथ में उनकी विशाल प्रतिमा का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। तदुपरांत टिकैतनगर में भगवान महावीर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारे उत्तरप्रदेश के लोकप्रिय मुख्यमंत्री माननीय श्री मुलायम सिंह यादव ने भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर 'पार्श्वनाथ वर्ष' का शुभारंभ किया और भगवान पार्श्वनाथ की वह प्रतिमा ''पार्श्वनाथ दि. जैन इण्टर कालेज'' के परिसर में स्थापित की गई है। इसी श्रृंखला में सारे देश में 3 वर्ष तक भगवान पार्श्वनाथ तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव विविध आयोजनों के साथ मनाया गया, जिसका समापन भगवान पार्श्वनाथ की केवलज्ञान भूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तिखाल वाले बाबा के महामस्तकाभिषेकपूर्वक 4 जनवरी 2008 को हुआ।

21 दिसम्बर 2008 का दिवस संस्थान के लिए विशेष गौरवपूर्ण एवं ऐतिहासिक रहा, जब गणतंत्र भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी का शुभाशीर्वाद लेने जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर पधारीं और विश्वशाति अहिंसा सम्मेलन का उद्घाटन किया।

इस प्रकार आप सबके सहयोग से संचालित हो रहा दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान अपनी चतुर्मुखी योजनाओं से समाज को सदैव लाभान्वित करता रहे यही मंगल कामना है।



# वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के सहयोगी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत ''वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला'' की स्थापना सन् 1972 में हुई। तब से अब तक लाखों की संख्या में ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और निरन्तर हो रहा है। ग्रंथमाला से पाठकों को ग्रन्थ कम कीमत में प्राप्त हो सकें, इस दृष्टि से ग्रन्थमाला में एक संरक्षक योजना अगस्त सन् 1990 से प्रारंभ की गई है। इस योजना के अन्तर्गत निम्न महानुभाव अब तक संरक्षक बनकर अपना सहयोग प्रदान कर चुके हैं।

## शिरोमणि संरक्षक

1. **श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खारी बावली, दिल्ली-6।**
2. **श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।**
3. **श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।**
4. **श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।**
5. **श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।**
6. **श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।**
7. **श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
8. **डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)**
9. **श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.**
10. **श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली**
11. **श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई**
12. **श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।**
13. **श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.**
14. **श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।**
15. **श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।**
16. **श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।**
17. **श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली।**

## परम संरक्षक

1. **श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।**
2. **डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।**
3. **श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।**
4. **श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।**
5. **श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।**
6. **श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।**
7. **श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
8. **श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।**
9. **श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।**
10. **श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।**
11. **स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।**
12. **श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।**
13. **श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।**
14. **श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।**

**15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।**
**16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।**
**17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली**
**18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली**
**19. श्री जितेन्द्र कुमार सुनीता कोटड़िया, फ्लोरिडा (यू.एस.ए.)**

## संरक्षक

1. स्व. श्री अनन्तवीर्य जैन एवं स्व. श्रीमती आदर्श जैन के सुपुत्र श्री मनोज कुमार जैन, मेरठ।
2. श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री शिखर चन्द भाई देवेन्द्र कुमार लखमी चन्द जैन, सनावद (म.प्र.)।
3. श्री चिमनलाल चुन्नीलाल दोशी, कीका स्ट्रीट, मुम्बई।
4. श्रीमती अरुणाबेन मन्नूभाई कोटड़िया, सी.पी. टैंक रोड, मुम्बई।
5. श्रीमती ताराबेन चन्दूलाल दोशी, फ्रेन्च ब्रिज, मुम्बई।
6. श्री रतिलाल चुन्नीलाल दोशी, मुम्बई।
7. स्व. श्रीमती मथुराबाई खुशाल चन्द्र जैन, द्वारा-श्री रतन चन्द खुशाल चन्द्र गाँधी के सुपुत्र श्री धन्य कुमार, अशोक कुमार, शिरीश कुमार, धर्मराज गाँधी फलटन (महा.)।
8. श्री शांतिलाल खुशाल चन्द गाँधी, फलटन (सातारा) महा.।
9. श्री अनन्त लाल फूलचन्द फड़े, अकलूज (सोलापुर) महा.।
10. श्री हीरालाल माणिकलाल गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
11. श्री जयकुमार खुशालचंद गाँधी, अकलूज (सोलापुर) महा.।
12. श्रीमती बदामी देवी मातेश्वरी श्री पदम कुमार जैन गंगवाल, कानपुर (उ.प्र.)।
13. श्रीमती कमलादेवी ध.प. स्व. श्री महेन्द्र कुमार जैन, घण्टे वाले हलवाई, दरियागंज, नई दिल्ली।
14. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री श्रवण कुमार जैन, चावड़ी बाजार, दिल्ली।
15. श्री मुकेश कुमार जैन, कटरा शहंशाही, चाँदनी चौक, दिल्ली।
16. श्री हुकमीचंद मांगीलाल शाह, धानमंडी, उदयपुर (राज.)
17. श्री किरण चन्द्र जैन, कटरा धूलियान, चाँदनी चौक, दिल्ली।
18. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री महावीर प्रसाद जैन इंजी. विवेक विहार, दिल्ली
19. श्रीमती उषादेवी ध.प. श्री अशोक कुमार जैन (खेकड़ा निवासी), बहराइच (उ.प्र.)।
20. श्रीमती लीलावती ध.प. श्री हरीश चन्द्र जैन, शकरपुर, दिल्ली।
21. श्री दुलीचन्द जैन, बाहुबली एन्कलेव, दिल्ली।
22. श्री रतिलाल केवलचन्द गाँधी की पुण्य स्मृति में, पापुलर परिवार, सूरत (गुज.)।
23. श्रीमती भंवरीदेवी ध.प. श्री सदासुख जैन पांड्या की समृति में इन्दर चन्द सुमेरमल जैन पांड्या शिलांग (मेघालय)।
24. श्रीमती सोहनीदेवी ध.प. श्री तनसुखराय सेठी, फैन्सी बाजार, गौहाटी (आसाम)।
25. श्रीमती धापूबाई ध.प. श्री कस्तूर चन्द जैन, रामगंज मण्डी (राज.)।
26. श्री मिट्ठनलाल चन्द्रभान जैन, कविनगर गाजियाबाद (उ.प्र.)।
27. श्रीमती शकुन्तलादेवी ध.प. श्री सुरेशचंद जैन (बर्तन वाले), खुड़बुड़ा मोहल्लका, देहरादून (उ.प्र.)।
28. श्री देवेन्द्र कुमार गुणवन्त कुमार टोंग्या, बड़नगर (म.प्र.)।
29. श्री दिगम्बर जैन समाज, तहसील फतेहपुर (बाराबंकी) उ.प्र.।
30. श्री मन्नालाल रामलाल जैन डूंगरवाला, भानपुरा (मन्दसौर) म.प्र.।
31. श्री इन्दर चन्द कैलाश चंद चौधरी, सनावद (म.प्र.)।
32. श्री प्रकाश चन्द अमोलक चन्द जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
33. स्व. श्री विमल चन्द जैन, रखबचन्द दसरथ सा, सनावद (म.प्र.)।



34. श्री आजाद कुमार जैन शाह (सनावद वाले), इन्दौर (म.प्र.)।
35. श्रीमती सुषमा जैन ध.प. श्री राकेश कुमार जैन, मवाना (मेरठ) उ.प्र.।
36. श्रीमती कुसुम जैन ध.प. श्री रमेशचन्द जैन, किशनपुरी, बागपत रोड, मेरठ।
37. श्रीमती किरण जैन ध.प. श्री पदम प्रसाद जैन एडवोकेट, मेरठ (उ.प्र.)।
38. श्रीमती विमलादेवी ध.प. श्री जिनेन्द्रप्रसाद जैन ठेकेदार, टोडरमल रोड, नई दिल्ली।
39. श्रीमती क्षमादेवी जैन, मथुबन, दिल्ली।
40. श्रीमती कमलादेवी ध.प. श्री राजेन्द्र कुमार जैन टोडरका, ठाणे (महा.)।
41. श्री अजित प्रसाद जैन बब्बेजी, श्री राजकुमार श्रवण कुमार जैन, लखनऊ।
42. श्री प्रभा चन्द गोधा, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर-6 (राज.)।
43. श्री गोपीचन्द विपिन कुमार जैन, सरधना टैन्ट हाउस, गंजमंडी, सरधना।
44. श्रीमती रतनसुन्दरी देवी ध.प. श्री वीरचन्द जैन (चिकन वाले), चूड़ीवाली गली,चौक बाजार, लखनऊ।
45. डॉ. सुभाषचन्द जैन, रातानाड़ा क्लीनिक, रातानाड़ा बाजार, जोधपुर (राज.)।
46. श्री प्रमोद कुमार जैन (मुजफ्फरनगर वाले) 35 एच.वी.रोड, न्यू मार्केट, थरपकना, रांची (बिहार)।
47. श्री विजेन्द्र कुमार जैन, के.-1/20 मॉडल टाउन, दिल्ली।
48. श्री कैलाश चंद जैन, 45 भगत वाटिका, सिविल लाइन, जयपुर (राज.)।
49. श्री सुभाषचंद जैन, श्री दि. जैन पार्श्वनाथ चैत्यालय, 405 डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली।
50. श्री सुभाष चन्द जैन सर्राफ, टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.।
51. श्री चन्द्रसेन जैन, द्वारा-सुमेरचन्द, चन्द्रसेन जैन, सब्जी मण्डी, नहटौर (बिजनौर)।
52. श्री सुधीर कुमार जैन जे.ई., नन्द किशोर जैन, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर।
53. श्री सुकुमालचंद जैन, मोती ट्रेडिंग कम्पनी, टी.आर. फुकन रोड, फैन्सी बाजार, गौहाटी।
54. श्री अनिल पुलकित सेठी, बी 1/122, फेज-2, अशोक विहार, दिल्ली-110052।
55. श्री चन्द्रमोहन बंसल, 11, पूसा रोड, करोलबाग, नई दिल्ली-5।
56. श्री गिरधर प्रसाद आमोद प्रसाद जैन, जैन वस्त्रालय, काली मार्केट, सिवान (बिहार)।
57. श्री सतीश चन्द जैन, 31 सिविल लाइन, म.नं.-10, सेक्टर-2, टाइप-5 झांसी।
58. श्री स्वरूप चन्द कासलीवाल, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
59. श्री हुलास चन्द सेठी, अयोध्या शुगर मिल्स, राजा का सहसपुर, बिलारी (उ.प्र.)।
60. श्रीमती किरण देवी जैन ध.प. श्री नरेन्द्र कुमार जैन, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
61. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री प्रवीण कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
62. श्री सूरजमल पुत्र श्री विनीत कुमार जैन, मोहल्ला गंजकटरा पूरणटरा पूरणजाट, जैन विला, मुरादाबाद (उ.प्र.)।
63. स्व. श्री शिखर चन्द जैन, 'टिम्बर कमीशन एजेन्ट', शंकरगंज, हापुड़ (उ.प्र.)।
64. श्रीमती राजेश्वरी जैन मातेश्वरी श्री राकेश जैन 31, सिविल लाईन, सीतापुर।
65. श्री राजकुमार जैन, मैसर्स रविदत्त प्रेमचन्द जैन बारदाने वाले, श्यामगंज, बरेली।
66. श्री बलवीर जैन, द्वारा-जानकी एक्सटेंशन रिफाइनरी, गाँधीगंज, शाहजहाँपुर।
67. श्री पन्नालाल सेठी, डीमापुर (नागालैंड)।
68. श्री वीरेन्द्र कुमार जैन, ईदगाह कालोनी, आगरा (उ.प्र.)।
69. श्री पोखपाल जैन, द्वारा-नावेल्टी मेटल इंडिया, मानसिंह गेट, अलीगढ़ (उ.प्र.)।
70. श्रीमती रश्मि जैन ध.प. श्री विजय कुमार जैन, दरियागंज, नई दिल्ली।
71. श्रीमती विमला देवी ध.प. श्री प्रमोद कुमार जैन इंजी., शाहजहाँपुर (उ.प्र.)।
72. स्व. श्रीमती कैलाशवती जैन ध.प. श्री कैलाश चन्द जैन इंजी., तोपखाना बाजार, मेरठ।
73. श्रीमती अरुण कुमार नांद्रेकर ध.प. भाऊ साहेब नांद्रेकर, मुलुन्ड (वेस्ट) मुम्बई।
74. श्री भागचन्द मनीष कुमार ठोलिया, द्वारा-किरन एजेंसी, पो. बुरहानपुर, (म.प्र.)।
75. श्री कैलाशचन्द राजकुमार जैन रावंका, पो. बिसवां (सीतापुर) उ.प्र.।

76. श्रीमती विद्यावती जैन, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली।
77. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) एवं सुपुत्र श्री मदन कुमार, प्रदीप कुमार एवं प्रवीण कुमार जैन, धर्मपुरा, गाँधीनगर, दिल्ली।
78. श्रीमती अरुणा जैन, ध.प. प्रवीन्द्र कुमार जैन, प्रीतमपुरा, दिल्ली।
79. श्रीमती पुष्पादेवी, ध.प. महेन्द्र कुमार जैन, पुष्पांजली एन्क्लेव, दिल्ली।
80. श्री बाबूलाल तोताराम जैन, भुसावल (महा.)।
81. डॉ. अनुपम जैन, सुदामा नगर, इंदौर (म.प्र.)।
82. श्री विनय कुमार जैन, ज्वैलर्स, दरीबाकलां, दिल्ली।
83. स्व. श्री आनन्द प्रकाश जैन 'शान्तिप्रिय', जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.।
84. श्रीमती राजुलबाई ध.प. श्री नेमीचन्द जैन लोहाड़े, पो. कोपरगाँव (महा.)।
85. श्री धन्नालाल गोधा, मल्हारगंज, इंदौर (म.प्र.)।
86. श्री सुनील कुमार मनोज कुमार जैन, झिलमिल कालोनी, दिल्ली।
87. श्रीमती आशा जैन ध.प. श्री राजेश कुमार जैन बरुआ सागर (उ.प्र.)।
88. श्री पारसमल डूंगरमल जी पाटनी पो. मेड़तासिटी, नागौर (राजस्थान)।
89. श्री अनिल कुमार जैन (गुड़गांव वाले) प्रियदर्शनी विहार, दिल्ली-92।
90. श्रीमती कृष्णा बाई नेमीनाथ जैन, पी. वाले, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
91. श्रीमती मंजूलता जैन ध.प. श्री प्रभात चन्द गोधा, नया बाजार, अजमेर (राज.)।
92. श्री प्रमोद कुमार जैन, पारस प्रिन्टर्स, शाहदरा-दिल्ली।
93. श्री चांदमल अनिल कुमार सरावगी, किशनगंज (बिहार)।
94. कुमारी अदिती सुपुत्री श्री अपोलो जी जैन सौगानी, इंदौर।
95. श्रीमती मंजूलता ध.प. प्रभाचन्द गोधा-नया बाजार, अजमेर।
96. श्री सुचेद्र कुमार शैलेन्द्र कुमार जैन, डाल्टनगंज (झारखंड)।
97. श्रीमती जतनदेवी लक्ष्मीचंद जैन, चेन्नई (तमिलनाडु)।
98. श्रीमती सखाई जैन ध.प. श्री जीतमल जैन, मड़ाना (कोटा) राज.।
99. श्री मोहित जैन पुत्र मुकेश जैन, जगन्नाथ जैन पहाड़िया, फतेहपुर (शेखावटी) राज.।
100. श्री नरेश जैन बंसल, गुड़गाँवा (हरि.)।
101. श्रीमती रतनबाई ध.प. राजेन्द्र प्रकाश कोठिया, कोटा (राज.)।
102. श्रीमती संतोष जैन ध.प. श्री अजीत कुमार जैन, भिवाड़ी (राज.)।
103. श्रीमती प्रेमलता जैन ध.प. श्री सुशील कुमार जैन, मलाड़ (मुम्बई)।
104. श्री राजेन्द्र कुमार पंचौलिया, इंदौर (म.प्र.)।
105. स्व. श्री मोहनलाल हेमचंद गांधी, सतारा (महा.)।
106. श्रीमती आरती जैन ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन 'शीशे वाले', इलाहाबाद (उ.प्र.)
107. डॉ. विमला जैन ''विमल'' ध.प. श्री प्रकाशचंद जैन, फिरोजाबाद (उ.प्र.)



# विषयानुक्रमणिका


| विषय | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | ऋषभदेव नृत्य नाटिका | 1 |
| 2. | भगवान पार्श्वनाथ दशभव की काव्य कथा | 17 |
| 3. | माता त्रिशला और महावीर का संवाद | 31 |
| 4. | बाहुबलि वैराग्य | 35 |
| 5. | सीता की अग्नि परीक्षा | 42 |
| 6. | आज के मानव में कलियुग का रूप दिखाई देता है : काव्य रूपक | 47 |
| 7. | मोक्षसप्तमी पर नृत्य नाटिका | 51 |
| 8. | चातुर्मास (वर्षायोग) का महत्व : नृत्य नाटिका | 53 |
| 9. | प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर काव्य कथानक | 55 |
| 10. | माता मोहिनी और पुत्री मैना का संवाद | 65 |
| 11. | मैना से ज्ञानमती : काव्य कथा | 67 |
| 12. | मातृभक्ति | 69 |
| 13. | कहानी चार अनुयोगों की : काव्य कथा | 77 |
| 14. | गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की काव्य वार्ता | 79 |

# ऋषभदेव नृत्य नाटिका

**–प्रार्थना–**

(सामूहिक स्वर में)

***तर्ज–बहुत प्यार करते हैं.....***

ऋषभदेव प्रभु को है, मेरा नमन।
चरण में समर्पित-2, हैं भक्ति सुमन।।ऋषभदेव.।।

मरुदेव माता के घर, रत्न खूब बरसे।
अयोध्यापुरी में पिता, नाभिराय हरषे।।
चैत्रवदी नवमी को-2, हुआ प्रभु जन्म।।ऋषभदेव.।।1।।

इस युग के आदिब्रह्मा, ऋषभदेव स्वामी हैं।
पुरुदेव तीर्थंकर की, पदवी से नामी हैं।
अवध की प्रजा व धरती-2, हुई धन्यधन।।ऋषभदेव.।।2।।

राजसुख को भोग उसको, त्याग दिया क्षण में।
बन करके जिनवर राजे, समवसरण में
''चन्दना'' हुए वे अपने, आप में मगन।।ऋषभदेव.।।3।।

***–शंभु छंद–***

(सूत्रधार के द्वारा)

यह भारत आज नहीं युग से ऋषियों की गाथा कहता है।
यहाँ गंगा यमुना सरस्वती नदि का पावन जल बहता है।।
इस धरती की चंदन रज को मेरा मन वन्दन करता है।
सूरज भी अपनी किरणों से इसका अभिनंदन करता है।।1।।



इसकी पावनता को शब्दों की सीमा नहिं कह सकती है।
सतयुग से आज के कलियुग तक दिख रही यहाँ तप शक्ती है।।
चाहें हो पुरुष या नारी हो, सबने कर्तव्य निभाया है।
भारतीय संस्कृति का महत्व सारे जग में बतलाया है।।2।।

जैसे त्रिलोक में गिरि सुमेरु सबसे ऊँचा कहलाता है।
धर्मों में धर्म अहिंसा ज्यों प्राकृतिक धर्म कहलाता है।।
देशों में भारत देश जो सोने की चिड़िया कहलाता है।
वैसे ही ऋषभदेव प्रभु का माहात्म्य श्रेष्ठ सुखदाता है।।3।।

जिनवर में श्रेष्ठ व ज्येष्ठ प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव माने।
उनको ही आप युगादी के स्रष्टा पुरुदेव देव जानें।।
असि मसि कृषि आदि क्रियाओं के वे आदिविधाता कहलाए।
कृतयुग की आदी में जन्मे वे आदिब्रह्म भी कहलाए।।4।।

उन ऋषभदेव के जीवन पर कुछ अभिनय यहाँ दिखाना है।
बीते युग की बातों का ही स्मरण तुम्हें करवाना है।।
हे बन्धु! मेरा यह लघु प्रयास सूरज को दीप दिखाना है।
बस भाव मेरा प्रभु संदेशों को जन-जन में पहुँचाना है।।5।।

***(देखें अब, तृतीयकाल के अन्त का दृश्य, जब धरती पर भोगभूमि का समापन एवं कर्मभूमि का शुभारंभ हो रहा था)***

***तर्ज–दीदी तेरा.....***

बीते युग की बातें बताऊँ, ऋषभदेव के गुणों को मैं गाऊँ।
तीर्थंकर की महिमा बताऊँ, ऋषभदेव के गुणों को मैं गाऊँ।।

जय जय जय, जय जय जय जय हो प्रभो.....।।टेक.।।

धरा पर थी जब भोगभूमी व्यवस्था, सभी कल्पवृक्षों से फल मांगते थे।
विषय भोगों के सुख बहुत थे वहाँ पर, न वे कर्मभूमी के दुख जानते थे।।

वही गाथा तुमको सुनाऊँ, ऋषभदेव के गुणों को मैं गाऊँ।।बीते....।।1।।

तभी एक दिन ऐसा आया कि जब, कल्पवृक्षों ने फल देना बंद कर दिया था।
सभी भोगभूमि के नर नारियों को, परिस्थिति ने चिन्तामगन कर दिया था।।
उनका दुःख अब कैसें बताऊँ, ऋषभदेव के गुणों को मैं गाऊँ।।बीते.....।।2।।

*(भोगभूमि में पहले माता के गर्भ से पुत्र-पुत्री का युगल जन्म होता था किन्तु वहाँ संयम न होने से मोक्ष की परम्परा नहीं चलती थी, पुनः)*

**धीर-धीरे भोगभूमि में,**
**बारह कुलकर के पश्चात्**
**तेरहवें कुलकर प्रसेनजित,**
**पैदा हुए एक सन्तान।**
**बस, वहीं से भोगभूमि के,**
**युगलिया की परम्परा हट गई।**
**प्रसेनजित के शुभ विवाह से,**
**कर्मभूमि प्रारंभ हो गई।।**

फिर इसके पश्चात् क्या हुआ था? आप जानना चाहते हैं न!

**नाभिराय भी जन्में अकेले,**
**धरती के कुलकर चौदहवें।**
**उधर मरुदेवी पुत्री भी माता-पिता की लाडली थी,**
**दोनों ने जब युवावस्था प्राप्त की थी।।**

***–शंभु छंद –***

सौधर्म इन्द्र ने जाना जब, ये तीर्थंकर को जन्म देंगे।
मरुदेवी के ही आंगन में, प्रभु ऋषभदेव जी खेलेंगे।।
तब स्वर्गपुरी से आ उसने, दोनों का ब्याह रचाया था।
सारी नगरी को देवों ने, तोरण आदिक से सजाया था।।6।।

गंधर्व सुरों के वाद्य बजे, किन्नरियों ने संगीत रचा।
अप्सरियाँ नृत्य करें सुन्दर, स्वागत करें नाभिराय जी का।।
रचता है नगर अयोध्या जब, सौधर्म इन्द्र मानो फिर से।
शाश्वत नगरी को नूतन कर, ऊँचे जिनभवन बना करके।।7।।

सर्वतोभद्र नामक इक्यासी खन का महल बना सुन्दर।
राजा रानी को इन्द्र ने उसमें बसा दिया उत्सवपूर्वक।।
करके राज्याभिषेक उनका सुरपति निज अलकापुरी चला।
अब नाभिराय मरुदेवी को सांसारिक सुख साम्राज्य मिला।।8।।



**कालचक चलता रहा,**
**बीत रहे जीवन के सुख क्षण**
**पता नहीं कुछ चला किसी को,**

तभी एक दिन होता क्या है ?–

**(ऊपर आकाश से रत्नों की धार गिरती हुई दिखाएं)**

***–शंभु छंद –***

मरुदेवी माँ के आँगन में, रत्नों की धार बरसती है।
माँ समझ गई उसका कारण ,निज भाग्य को धन्य समझती है।।
अब से छह माह बाद गर्भ में तीर्थंकर शिशु आएगा।
तब मेरा एवं जग भर का, सौभाग्य स्वयं जग जाएगा।।9।।

**इक दिन माता शयन कर रही,**
**आषाढ़ वदी दुतिया की तिथि थी।**
**रात्रि के पिछले प्रहर में,**
**इक घटना घटती है–**

## गर्भकल्याणक

इक दो या तीन नहीं सोलह, सुपने देखे मरुदेवी ने।
मीठी-मीठी निंदिया से उठ प्रभुध्यान किया मरुदेवी ने।।
आ गये रात के स्वप्न याद तब सखियों से वह कहती हैं।
ले चलो मुझे पतिदेव पास जहाँ राजलक्ष्मी रहती है।।10।।

**गई कान्त के निकट,**
**और बैठी निज आसन पर जाकर।**
**पूछने पर नाभिराय के,**
**कहने लगी सुनो मम प्रियतम्!**

**(गीत)**

***तर्ज –झुमका गिरा रे.....***

सपने देखे रे,
हे स्वामी! मैंने आज रात में सपने देखे रे।
पहले में ऐरावत हाथी पुनः बैल अरु शेर दिखा।

लक्ष्मी देवी हार युगल चन्द्रमा तथा इक सूर्य दिखा।।
इक मछली का युगल कलश दो भरे हुए जल के देखे।
कमलों से संयुक्त सरोवर सागर अरु सिंहासन थे।।
हाँ सागर अरु सिंहासन थे.....
सपने देखे रे, हे स्वामी मैंने आज रात में सपने देखे रे।।1।।
स्वर्ग से आता इक विमान, नागेन्द्र भवन व रतनराशी।
बिना धुएं की अग्नि स्वप्न में, कहती क्या बातें सांची।।
इन स्वप्नों के बाद नाथ इक, बैल ने मुख में प्रवेश किया।
इनका फल हे प्रभो! आपसे, सुनने का शुभ भाव हुआ।।
हाँ सुनने का शुभ भाव हुआ.....
सपने देखे रे, हे स्वामी मैंने आज रात में सपने देखे रे।।2।।

**धन्य हो, धन्य हो, देवी! तुम धन्य हो,**
**तुम्हारे उदर से तीर्थंकर का जन्म हो।**
**देवी तुम धन्य हो, देवी तुम धन्य हो।**
**स्वप्न का फल सुनो!**
**तुम्हीं एकमात्र नहीं,**
**सभासदों! तुम भी सुनो!**

***–शंभु छंद–***

हे मरुदेवी! तुम प्रथम स्वप्न फल में त्रिभुवन गुरु पाओगी।
जग भर में ज्येष्ठ, प्रतापी तीर्थंकर की माँ कहलाओगी।।
वह धर्मतीर्थकर्ता, सुमेरु पर्वत पर हो जन्माभिषेक।
जग को आनन्दप्रदायक रवि सम कान्ति धरा का सूर्य एक।।11।।

सब निधियों का स्वामी एवं वह परम सुखों को पाएगा।
वह सहस लक्षणों से शोभित, केवलज्ञानी बन जाएगा।।
सिंहासन का फल हे देवी! वह जगद्गुरू कहलाएगा।
अवतीर्ण स्वर्ग से होगा अवधिज्ञान सहित वह आएगा।।12।।

रत्नों की राशि देखने से सम्पूर्ण गुणों का आकर है।
निर्धूम अग्नि से कर्म जलाएगा वह स्वयं प्रभाकर है।।
मुख में जो बैल प्रविष्ट हुआ उसका फल यही समझ लो तुम!।
सुरपति वंदित वे तीर्थंकर बस गर्भ में आन बसेंगे तुम।।13।।



***(कुबेर द्वारा रत्नवृष्टि, जयजयकार –भगवान् ऋषभदेव की जय, मरुदेवी माता की जय, अयोध्या नगरी की जय)***

## गर्भकल्याणक का सामूहिक नृत्यगीत

धरती का तुम्हें नमन है, अम्बर का तुम्हें नमन है।
चन्दा सूरज करें आरती, छुटते जनम मरण हैं।। सौ-सौ बार नमन है.....
ऋषभदेव जिनवर को युग का सौ-सौ बार नमन है।। धरती.....।।टेक.।।

प्रभु का गर्भकल्याणक उत्सव इन्द्र मनाया करते।
छह महिने पहले कुबेर रत्नों की वर्षा करते।।
तीर्थंकर माँ के आंगन में, बरसे खूब रतन हैं।। सौ-सौ बार.....।।1।।

पिता उन्हीं रत्नों को, जनता में वितरित कर देते।
रत्न प्राप्तकर सभी लोग, निज भाग्य धन्य कर लेते।।
धरती रत्नमयी बन जाती, पुलकित हुआ गगन है।।सौ-सौ बार.....।।2।।

## जन्मकल्याणक

शुभ चैत्रवदी नवमी तिथि का पावन पवित्र दिन है आया।
जब तीर्थंकर श्री ऋषभदेव सा सुत मरुदेवी ने पाया।।
बज उठे नगाड़े स्वर्गों में इन्द्रों के आसन कांप उठे।
सुरकल्पवृक्ष से पुष्प स्वयं गिरकर प्रभु का सम्मान करें।।13।।

उस क्षण की खुशियों का वर्णन, नहिं सरस्वती भी कर सकती।
तीर्थंकर के पितु मात की महिमा, यह जिह्वा क्या कह सकती।।
कोटी-कोटी जन्मों में संचित, पुण्य उदय अब आया है।
इसलिए पिता-माता बनने का, स्वर्णिम अवसर पाया है।।14।।

श्री नाभिराय जी पुत्र जन्म का, उत्सव अद्भुत मना रहे।
सारी जनता को दान किमिच्छक, बाँट-बाँट धन लुटा रहे।।
आ गया स्वर्ग से इन्द्र तभी, ऐरावत हाथी पर चढ़कर।
जय जयकारों से गुंजा दिया, देवों ने नगरि अयोध्या तब।।15।।

**कर नमस्कार पितु नाभिराय को,**
**जन्मोत्सव मनाने की आज्ञा मांगी।**

**शचि को भेजा प्रसूतिगृह में,**
**जिनशिशु देखने की इच्छा जागी।**
**कहता है इन्द्र तब–**

***–शंभुछंद –***

हे इन्द्राणी जाओ अन्दर, तुम प्रथम प्रभू का दर्श करो।
निज स्त्रीलिंग छेद हेतू, तीर्थंकर का स्पर्श करो।।
जल्दी लाकर दे दो मुझको, प्रभु दर्शन इच्छा पूर्ण करूँ।
प्रभु को सुमेरु पर ले जाकर, उनका जन्मोत्सव खूब करूँ।।16।।

**हौले-हौले शची गई अन्दर,**
**माता को मायामय निद्रा में सुलाकर,**
**उनके पास से प्रभु को उठाकर।**
**देख लिया पहले जी भरकर,**
**फिर वह लेकर आई बाहर।**
**इन्द्र करे मनुहार,**
**दे दे प्रभु को मुझे मेरी नार।**
**मेरी आकलुता का नहीं है अब पार,**
**अब मुझे प्रभु का जन्मोत्सव मनाने का**
**मिला है पूरा अधिकार**
**इन्द्राणी की गोदी से लेकर**
**झूम उठा इन्द्र अपनी विजय पर**
**कहने लगा वह नाच कर–**

**भजन**

नाम तिहारा तारनहारा, कब तेरा दर्शन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तून कितना सुन्दर होगा।।
जाने कितनी माताओं ने, कितने सुत जन्में हैं।
पर इस वसुधा पर तेरे सम, कोई नहीं बने हैं।।
पूर्व दिशा में सूर्यदेव सम, सदा तेरा सुमिरन होगा।
तेरी प्रतिमा इतनी सुन्दर, तू कितना सुन्दर होगा।।



***–शंभु छंद –***

ले चला इन्द्र ऐरावत पर, तीर्थंकर प्रभु जिनबालक को।
चारों निकाय के देव देवियाँ, उत्सव चले मनावन को।।
सिर पर है छत्र चंवर ढुरते, प्रभु के वैभव का पार नहीं।
सौधर्म इन्द्र सम जन्मोत्सव नहिं मना सके संसार कहीं।।17।।
मेरू की पांडुशिला ऊपर प्रभु को ले जाकर बिठा दिया।
ऊपर से नीचे क्षीरोदधि तक देवपंक्ति को बना दिया।।
क्षीरोदधि के इक सहस आठ कलशों को प्रभु पर ढुरा दिया।
विक्रिया ऋद्धि से एक साथ उन सब कलशों को उठा लिया।।18।।
फिर शचि ने कर शृँगार शिशू को वस्त्राभूषण पहनाए।
लाकर माँ को सौंपा बालक फिर सब मिल पलना झुलवाएं।।
मरुदेवी चूमे बार-बार अपने ललना को पलना में।
कहिं नजर न लग जावे लल्ला को नजर उतारे पलना में।।19।।

## पालना गीत

आदीश्वर झूले पालना, मरुदेवी लोरी गावें।
मरुदेवी लोरी गावें, सब देवी उन्हें झुलावें।।आदीश्वर.।।टेक.।।
कहाँ प्रभू को जनम भयो है-2
कौन झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें। आदीश्वर.।।1।।
नगरि अयोध्या में जनम भयो है-2
इन्द्र झुलावे पालना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर.।।2।।
नगरि अयोध्या के नर-नारी-2
सभी झुलावें पालना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर.।।3।।
यही ''चन्दना'' मैं भी चाहूँ-2
पाऊँ प्रभु सा पालना, मरुदेवी लोरी गावें।।आदीश्वर.।।4।।

**देखो! प्रभु अब बढ़ने लगे,**
**धरती पे थोड़ा सरकने लगे,**
**थोड़ा घुटनों के बल वे तो चलने लगे,**
**तोतली बोली में बात करने लगे,**

**उनकी बाल क्रीड़ा लखकर,**
**माँ फूली नहीं समाती है।**
**तीर्थंकर बालक को पाकर,**
**वह धन्य धन्य हो जाती है।**

***–शंभुछंद –***

धीरे-धीरे शिशु ऋषभदेव की दूज चन्द्र सम कांति बढ़ी।
पलने से निकलकर घुटनों के बल चलने की प्रक्रिया बढ़ी।।
स्वर्गों से सुरबालक आकर प्रभु के संग खेल खेलते थे।
भोजन वे घर का नहिं करते स्वर्गों से इन्द्र भेजते थे।।20।।

वे स्वयंबुद्ध ब्रह्मा खुद ही सब विद्याओं में प्रवीण हुए।
बचपन से युवा अवस्था पाने, तक सबमें परिपूर्ण हुए।।
धरती पर तब तक कल्पवृक्ष का, अन्त काल भी आ पहुँचा।
सम्पूर्ण प्रजा में त्राहि त्राहि, जीवन रक्षास्वर गूँज उठा।।21।।

सब नर नारी पितु नाभिराय के पास में जा अरदास किया।
तब नाभिराय ने ऋषभदेव के निकट सभी को भेज दिया।।
बोले! जाओ तीर्थंकर प्रभु अब समाधान इसका देंगे।
धरती पर मानव को जीवन जीने की कला सिखाएंगे।।22।।

**गई प्रजा प्रभु के सम्मुख,**
**हमें सिखाओ आप ही कुछ,**
**हे प्रभो! जियें कैसे?**
**क्या खाएं व रहें कैसे? रक्षा करो, रक्षा करो।**

***–शंभुछंद –***

बोले प्रभु समझ गया मैं सब कुछ तुम सब चिन्तामुक्त रहो।
हे प्रजाजनों, अब कल्पवृक्ष जा रहे, वृक्ष की शरण गहो।।
धरती तुमको सब कुछ देगी कुछ कर्म तुम्हें करना होगा।
अब भोगभूमि से कर्मभूमि का मनुज तुम्हें बनना होगा।।23।।

खेतों में अन्न उगाओ तुम, इस गन्ने का रसपान करो।
गेहूँ, चावल, मेवा, फल को, खा जीवन में कुछ काम करो।।



असि, मसि, कृषि, विद्या, शिल्प और वाणिज्य क्रिया बतलाता हूँ।
इनसे जीवन संचालित करने की ही विधी बताता हूँ।।24।।
(जय हो भगवान ऋषभदेव की जय हो, परमपिता परमेश्वर की जय हो)
सामूहिक स्वर– **प्रभो! तुमने जो बताई कलाएं हमें हैं!**
**तदनुसार जीवन में हम चल पड़ेंगे।**
**तुम्हीं हो विधाता प्रजा के हो पालक!**
**तुम्हीं कर्मभूमि के सच्चे सुधारक!**
**तुम्हारी सुकीर्तिपताका जगत में!**
**सदा फैलती ही रहे इस गगन में!**
(जय प्रभो, जय प्रभो सब मिलकर बोलो–जय आदीश्वर, जय वृषभेश्वर-2)

(बस यहाँ से कर्मभूमि का मानव अपने पुरुषार्थपूर्वक जीवन का संचालन करने लगा। व्यापार करना, खेती करना, तलवार चलाना, मुनीमी करना, लिखना-पढ़ना, शस्त्र चलाना, चित्र बनाना ये सारी क्रियाएँ भगवान ऋषभदेव ने ही तो बताई थीं जो आज तक भी चली आ रही हैं। इसलिए इन्हें हम सम्पूर्ण संस्कृति के आद्यप्रणेता कहते हैं।)

***–शंभु छंद –***

कुछ और काल बीता वैवाहिक क्षण भी जीवन में आए।
सौधर्म इन्द्र पितु नाभिराय की आज्ञा लेने को आए।।
पितु आज्ञा से प्रभु की स्वीकृति मिलते ही घड़ियाँ बदल गईं।
साकेतपुरी में ऋषभदेव की परिणय बेला प्रगट हुई।।25।।

दो सुन्दर बाला इसी देश के राजा की कन्याएं हैं।
तीर्थंकर सा पति पाने को जिनकी उत्कट इच्छाएं हैं।।
अपना सौभाग्य सराह रहीं वे यशस्वती व सुनन्दा हैं।
उनका तो जीवन धन्य हुआ लगती वे सूरज चंदा हैं।।26।।

श्री ऋषभदेव ने निज गृहस्थ जीवन को अब प्रारंभ किया।
सम्यग्दृष्टि के योग्य विषय भोगों का कुछ आनन्द लिया।।
भरतादि पुत्र शत एक पुत्रि को यशस्वती ने जन्म दिया।
सुत बाहुबली व सुन्दरी ने, सुनन्दा माँ से जन्म लिया।।27।।

चल रही कथा उन ऋषभदेव की जो तन सुख में डूबे हैं।
श्री नाभिराय भी पुत्र-पौत्र के संग सुखों में डूबे हैं।।

इक दिन विचार आया उनको निज राजमुकुट तजना चहिए।
युवराज ऋषभ को राजा कहकर राजतिलक करना चहिए।।28।

बस शुभ मुहूर्त में इन्द्र ने आ राज्याभिषेक करवाया है।
अब राज्य संभालो राजकुंवर तुमसे न छिपी कुछ माया है।।
सब देश-देश के राजागण निज भेंट चढ़ाने आते हैं।
प्रभु के चरणों में शीश झुका पितु की भी प्रशंसा गाते हैं।।29।।

**सिंहासन पर महाराज विराजे,**
**नाभिराय के पुत्र विराजे।**
**जहाँ का हो राजा तीर्थंकर,**
**इन्द्र जहाँ हो उनका किंकर।**
**वहाँ कमी क्या हो सकती है ?**
**सभी प्रजा में प्रेम परस्पर।**

## सामूहिक गीत

***तर्ज –लिया प्रभु अवतार.....***

लगा प्रभू दरबार, जयजयकार जयजयकार जयजयकार।
अवध के ऋषभकुमार, जयजयकार, जयजयकार जयजयकार।।
आज खुशी है आज खुशी है, हमें खुशी है तुम्हें खुशी है।
खुशियाँ अपरम्पार, जयजयकार जयजयकार जयजयकार।।1।।

पुष्प और रत्नों की वर्षा, सुरपति करते हर्षा-हर्षा।
बजे दुन्दुभी सार, जयजयकार जयजयकार जयजयकार।।2।।
आवो हम सब प्रभु गुण गाएं, सत्य अहिंसा ध्वज फहराएं।
सब जग मंगलकार, जयजयकार जयजयकार जयजयकार।।3।।

***–शंभु छंद –***

प्रभु आज्ञा से सुरपति ने आ सब नगर ग्राम भी बना दिए।
प्रभु ने अनेक राजाओं को फिर पृथक्-पृथक् थे राज्य दिए।।
उन सबको दे उपदेश धर्ममय राजनीति बतलाई है।
खुद न्यायनीति संचालित कर राजा की प्रथा निभाई है।।30।।



## दीक्षाकल्याणक

***–दोहा –***

बहुत समय तक राज्य में, बीता प्रभु का काल।
एक दिवस तब इन्द्र को, आया उनका ख्याल।।31।।

***–शंभु छंद –***

सोचा उसने प्रभु के सम्मुख, ऐसा निमित्त प्रस्तुत कर दूँ।
हो जावें वैभव से वे विमुख, ऐसा सुकृत्य मैं अब कर दूँ।।
जब राजसभा में आदिनाथ, सिंहासन पर थे शोभ रहे।
अपनी जनता की खुशियों को सुन, सुखसागर में डोल रहे।।32।।

सुरपति ने नृत्यहेतु अल्पायू नीलांजना को भेज दिया।
उसके मरते ही तत्क्षण दूजी, देवांगना का प्रवेश हुआ।।
नहिं जान सका कोई लेकिन, वृषभेश्वर ने पहचान लिया।
बस उसी समय उनको इस चंचल, वैभव से वैराग्य हुआ।।33।।

## (भजन)

***तर्ज –दिल के अरमाँ.....***

प्रभु जी सिद्धीकांता वरने चल दिए,
संग में चार हजार राजा चल दिए।।टेक.।।
सारी धरती पर प्रभू का राज्य था, किन्तु प्रभु को हो गया वैराग्य था।
तज के सब संसार वे तो चल दिए,
संग में चार हजार राजा चल दिए।।
वन में जाकर नग्न दीक्षा धार ली, अवध की जनता भी दुखी अपार थी।
पंचमुष्टी केशलुंचन कर लिए,
संग में चार हजार राजा चल दिए।।

***–शंभु छंद –***

वह तिथि थी चैत्र वदी नवमी, जब दीक्षा प्रभु ने ग्रहण किया।
षट्मास योग में लीन हुए, नगरी प्रयाग को धन्य किया।।
उनके संग चार हजार और, राजा भी दीक्षित हुए तभी।
पर भूख प्यास की बाधा ने, सबको विचलित कर दिया कभी।।34।।

षट्मास योग पश्चात् प्रभो मुनिचर्या बतलाने निकले।
लेकिन कोई नहिं जान सके क्यों नाथ भ्रमण करने निकले।।
कोई कहते प्रभु मेरी कन्या ग्रहण करो भोजन कर लो।
कोई देते वस्त्राभूषण कुछ कहते प्रभो! वचन बोलो।।35।।

पर तीर्थंकर तो दीक्षा के पश्चात् मौन ही रहते हैं।
केवलज्ञानी बनकर ही वे ॐकार दिव्यध्वनि कहते हैं।।
उनको न चाहिए था वैभव, वस्त्राभूषण वे क्या करते।
जो इच्छा थी वह कुछ न मिला, छह मास भ्रमण करते-करते।।36।।

संयोग देखिए एक दिवस हस्तिनापुरी वे पहुँच गए।
सोमप्रभ नृप श्रेयांस उसी क्षण इंतजार में खड़े हुए।।
कुछ पूर्वभवों की स्मृतिवश श्रेयांस तुरत ही बोल पड़े।
हे स्वामी! अत्र तिष्ठ आदिक उनके स्वर झरने फूट पड़े।।37।।

था इन्तजार इस क्षण का ही आदीश मुनी हो गए खड़े।
नवधाभक्ती की शक्ती से प्रभु चरण सोम के महल पड़े।।
उस प्रथम पारणा में राजा ने इक्षूरस आहार दिया।
पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई, जग भर में जयजयकार हुआ।।38।।

वैशाख सुदी तृतिया अक्षयतृतिया संज्ञा से प्रसिद्ध हुई।
आहारदान की विधी धरा पर पहली बार प्रसिद्ध हुई।।
भरतेश ने उन राजा श्रेयांस का, बहुत बड़ा सम्मान किया।
तुम दानतीर्थ के प्रवर्तक हो, यह कहकर जग में नाम दिया।।39।।

आहार विधी जब ज्ञात हुई तब से मुनिधर्म चला जग में।
वह अब तक भी चल रहा युगों तक चला करेगा क्रम-क्रम से।।
हस्तिनापुरी की यह घटना सतयुग से कलियुग है आया।
पर इस धरती के इक्षूरस ने अक्षयता को है पाया।।40।।

## केवलज्ञान कल्याणक

अब आगे मैं ले चलूँ प्रभू की तपशक्ती बताने को।
तप करते करते बीत गए इक सहस वर्ष तीर्थंकर को।।
वे एक दिवस थे "पुरिमतालपुर" के उद्यान में खड़े हुए।
तब शुक्लध्यान की अग्नी से उन घाति कर्म सब नष्ट हुए।।41।।



तत्क्षण कैवल्यरमा ने आ उनको वरमाला पहनाई।
धनपति ने समवसरण रचना कर दिव्य विभूती प्रगटाई।।
अन्तर बाहर दोनों लक्ष्मी जिनवर के चरण पखार रहीं।
प्रभु जी की दिव्यध्वनि सुनने को जनता उन्हें निहार रही।।42।।

आकाशगर्जना सम दिव्यध्वनि ॐकारमय प्रगट हुई।
पशु-पक्षी, देव-मनुज सबने निज-निज भाषा में ग्रहण करी।।
उस जिनवर वाणी को ही अब सारे जग में पहुँचाना है।
इस समवसरण के माध्यम से प्राकृतिक धर्म फैलाना है।।43।।

**मेरे प्यारे भाइयों, बहनों!**
**आज न सच्चा समवसरण है।**
**और न तीर्थंकर दर्शन है,**
**फिर भी जिनप्रतिमा में अतिशय**
**समवसरण रचना में अतिशय**
**इसकी ही भक्ति करो**
**फल पाओगे और**
**इक दिन अमर बन जाओगे,**
**तो गाओ सब मिल करके–**

## भजन

*तर्ज –फूलों सा चेहरा तेरा.....*

जिनवर की वाणी अमर, जग को सुनाना है,
आप स्वयं भी जिओ, दूसरों को जीने दो, सबको बताना है।।टेक.।।

कलियुग में जिनवर होते नहीं पर,
मुनिवर की पदवी दुर्लभ नहीं है।
जिनवर के लघुनन्दन मुनिवरों की,
वाणी सभी को सुलभ हो रही है।।

ज्ञान पिपासू को, आत्मजिज्ञासू को, भाती है प्रभु की अमर भारती।
माँ वाणी को मन में धर, जीवन बनाना है।
आप स्वयं भी जिओ, दूसरों को जीने दो.....।।1।।

**ऋषभदेव की दिव्यसभा में,**
**गणधर मुनिवर ही प्रधान थे।**
**जो भी आता वह ठगा वैभव को देखकर।**
**वह तिथि धन्य हुई,**

***–शंभु छंद –***

फाल्गुन कृष्णा ग्यारस तिथि थी जब प्रभु को केवलज्ञान हुआ।
प्रभु समवसरण के श्रीविहार से जन-जन का कल्याण हुआ।।
रत्नों की वृष्टि करे कुबेर जन-जन को भी वितरित करता।
सौधर्म इन्द्र किंकर बनकर प्रभु सम्मुख सदा खड़ा रहता।।44।।

जब समवसरण विघटित होता जिनराज अधर ही चलते हैं।
उन चरण कमल तल स्वर्ण कमल स्वयमेव इन्द्र तब रचते हैं।।
कमलों से ऊपर अधर चार अंगुल उनके पग पड़ते हैं।
वैभव में रहकर वीतरागता का आनंद वे चखते हैं।।45।।

दुनियाँ में सबसे उत्तम एवं हितकारी है समवसरण।
इसलिए ज्ञानमती गणिनी माताजी का है यह सत्य कथन।।
प्रभु ऋषभदेव के समवसरण का श्रीविहार हुआ भारत में।
हिंसा का तांडव न्यून हुआ करुणा का स्रोत बहा जग में।।46।।

जहाँ शेर गाय भी वैर भाव तज एक घाट जल पीते हैं।
जहाँ सर्प नेवला क्रूर पशू भी साथ-साथ ही जीते हैं।।
उस समवसरण का कुछ प्रभाव मानव मन पर निश्चित होगा।
जो दर्शन इसका कर लेगा, उसके पापों का क्षय होगा।।47।।

## मोक्षकल्याणक

ये श्रीविहार की चर्चाएं जितनी भी सुनो उतनी कम हैं।
लेकिन निर्वाणकल्याणक भी देखो अब तुम्हें समय कम है।।
सबको शिवपथ बतलाने में श्रीजिनवर कभी न थकते हैं।
निज आयुकर्म को निकट जान कैलाशगिरी जा बसते हैं।।48।।

तीनों योगों की क्रिया रोक एकाग्र ध्यान में रमते हैं।
चौदह दिन के पश्चात् ऋषभ प्रभु शिवलक्ष्मी को वरते हैं।।



आत्मा ने सिद्धशिला पर जाकर सिद्धधाम को प्राप्त किया।
अक्षय अनन्त सुख में निमग्न, नहिं पुनर्भवों का साथ दिया।।49।।

वे मोक्ष गये तब भी इन्द्रों ने दीपावली मनाई थी।
निर्वाणकल्याणक की पूजाकर जग में धूम मचाई थी।।
फिर उनके गणधर वृषभसेन ने भरतराज को सम्बोधा।
अफसोस करो मत हे राजन्! तुमने तो बहुत ज्ञान सीखा।।50।।

उनके सुत भरत प्रथम चक्री जिनसे यह देश प्रसिद्ध हुआ।
थे कामदेव प्रभु बाहुबली जिनका तप त्याग प्रसिद्ध हुआ।।
सुत वृषभसेन प्रभु समवसरण में गणधर प्रथम कहाए हैं।
अनन्तवीर्य सुत इस युग में ही प्रथम मोक्षपद पाए हैं।।51।।

पुत्री ब्राह्मी गणिनी पहली आर्याओं में अग्रणी हुईं।
सुन्दरी भी दीक्षा धारण कर संयम पथ की इक मणी हुईं।।
यह गाथा तीर्थंकर कुल की सब पुत्रों ने शिवधाम लिया।
भव भव के संस्कारों ने इस भव में आकर विश्राम लिया।।52।।

प्रभु ऋषभदेव तो मोक्ष गए सबको भी वह पथ दिखा गए।
चौदह लख राजा उसी शृँखला में क्रम-क्रम से मोक्ष गए।।
हे नाथ! मुझे भी परम्परा से मुक्तिधाम दिलवा दीजे।
''चन्दनामती'' उससे पहले तुम भक्ती की शक्ती दीजे।।53।।

***–दोहा –***

ऋषभदेव प्रभु का चरित, यह संक्षिप्त सुजान।
तृतियकाल के अन्त का, है यह कथन महान।।54।।

# भगवान पार्श्वनाथ दशभव की काव्यकथा

**प्रिय पाठकों!** जैनधर्म के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के संघर्षशील जीवन से आप सभी को परिचित कराने हेतु यहाँ पर उनके दश भवों का कथानक काव्य में प्रस्तुत किया जा रहा है। मरुभूति की पर्याय से उन्होंने किस प्रकार अपने भाई कमठ के द्वारा किये गये उपसर्गों को सहन कर-करके स्वयं को तीर्थंकर पार्श्वनाथ बनाया, यह बात इस काव्यनाटिका के द्वारा दर्शायी गयी है। पार्श्वनाथ के जन्मकल्याणक, मोक्षकल्याणक आदि अवसरों पर इस नाटिका का मंचन कराने से इसका प्रभाव साक्षात्रूप में सामने आएगा। दश पात्रों के द्वारा एक-एक भवों की मोनो ऐक्टिंग भी प्रस्तुत कराई जा सकती है।

## (1)

***तर्ज–चाँद मेरे आ जा रे.....***

**सुनो इक कथा सुनाते हैं-2,**
**पारस प्रभू के दस-दस भवों की गाथा गाते हैं।।सुनो.।।**
**मरुभूति-कमठ दो भाई, इक राजा के मंत्री थे।**
**दिन और रात के सदृश, दोनों ही भिन्न मती थे।।**
**पुण्य और पाप कमाते हैं,**
**दोनों ही अपने-अपने करम के फल को पाते हैं।।सुनो.।।1।।**
**मरुभूति के संग इक दिन, राजा चले रणभूमि में।**
**तब मंत्री कमठ को सौंपा, था राज्यभार सब नृप ने।।**
**मौज तब कमठ उड़ाते हैं,**
**अरविंद राजा के राज्य में अन्याय चलाते हैं।।सुनो.।।2।।**
**इक दिन जब कमठ ने देखा, मरुभूति की सुन्दर भार्या।**
**अतिकामुक हो तब उसने, षड्यंत्र से पास बुलाया।।**
**प्यार से गले लगाते हैं,**
**अपने दुराचारों से सती को भ्रष्ट बनाते हैं।।सुनो.।।3।।**
**राजा जब आये वापस, यह बात पड़ी कानों में।**
**तब कमठ का सिर मुंडवाकर, मुँह काला किया उन्होंने।।**
**पाप का फल वे पाते हैं,**
**पापी कमठ को राजा राज्य से बाहर भगाते हैं।।सुनो.।।4।।**



**हो दुखी कमठ इक तापस, के आश्रम में जा पहुँचा।**
**''चन्दनामती'' तब उसको, मरुभूति मनाने पहुँचा।।**
**क्रोध उस पर दिखलाते हैं,**
**पत्थर शिला से मरुभूति को वे मार गिराते हैं।।सुनो.।।5।।**

एक तपस्वी के द्वारा हिंसा का यह कुकृत्य देखकर वहाँ के तापसियों ने कमठ को आश्रम से निकाल दिया। तब वह जाकर एक जंगल में भीलों के साथ मिलकर चोरी, डकैती करने लगा फिर तो कमठ का जीवन पूर्णरूप से व्यसन समन्वित हो गया।

पुनः अगले भव में दोनों भाई कहाँ-कहाँ जन्म लेते हैं, सो देखें–अर्थात् मरुभूति मरकर हाथी हुआ और कमठ का जीव कुक्कुट सर्प हो गया।

## (2)

*तर्ज–झुमका गिरा रे.....*

**हाथी आया रे,**
**जंगल में हा हाकार मचाता हाथी आया रे।।टेक.।।**
**सल्लकि वन में एक बार, अरविंद मुनि का संघ आया।**
**वज्रघोष हाथी ने वहाँ, हिंसा का ताण्डव दिखलाया।।**
**कुछ मन में आया रे,**
**वह हाथी फिर आचार्य के सम्मुख शान्ती पाया रे।।1।।**
**श्री अरविंद सूरि ने अपने, अवधिज्ञान से जान लिया।**
**मरुभूति मंत्री ही हाथी रूप में है पहचान लिया।।**
**उसको समझाया रे,**
**मुनि ने उसको समझाकर अणुव्रत ग्रहण कराया रे।।2।।**
**नदी में पानी पीते इक दिन, हाथी फंस गया कीचड़ में।**
**हाथी को डस लिया वहाँ, इक कुक्कुट सर्प कमठचर ने।।**
**स्वर्ग को पाया रे,**
**तब हाथी मरकर स्वर्ग में देव की योनि पाया रे।।3।।**

इस प्रकार शांत और वैराग्यमयी परिणामों से हाथी ने मुनिराज के उपदेश को सुना और उसे अपने पूर्व जन्म का जातिस्मरण हो गया। वह सोचने लगा कि अरे! मैं तो अपने भाई कमठ से क्षमा मांगकर उसे वापस बुलाने गया था और

उस भाई ने ही मेरी हत्या कर दी। मैं उसके मोह में मरकर इस पशु योनि में आ गया। ओह! अब मुझे इस पर्याय से छूटना है। मुनि ने उससे कहा–अरे गजराज! पिछले जन्म में तुम मेरे अत्यन्त प्रिय मंत्री थे, तुम्हारे वियोग में बहुत दिन तक मैं दुःखी रहा, फिर एक दिन मैं महल की छत पर बैठा आकाश की ओर देख रहा था कि उसमें मुझे बादलों से बना एक सुन्दर सा मंदिर दिखा। मैंने उसी तरह का मंदिर बनवाने की भावना से ज्यों ही कागज-कलम उठाया कि इसका चित्र बना लूँ, तुरंत वह मंदिर का दृश्य नष्ट हो गया। ऐसी बादलों की क्षणिक स्थिति देखकर मैंने विचार किया कि इसी प्रकार यह मेरा जीवन भी क्षण भंगुर है, न जाने कब नष्ट हो जावे, अतः मैंने दीक्षा धारण कर ली।

यह सुनकर हाथी ने अणुव्रत धारण कर समता भाव से मरण कर बारहवें स्वर्ग में देव पद प्राप्त कर लिया और कुक्कुट सर्प हिंसक परिणामों से मरकर नरक में चला गया। वह देव स्वर्ग में कैसे जीवन व्यतीत करता है पुनः कहाँ जाकर जन्म धारण करता है, यह जानना है–

**(3)**

*तर्ज–कभी तू.....*

**कभी मंदिर में जाते हैं, कभी पूजा रचाते हैं,**
**कभी देवों के संग में स्वर्गों में आनन्द मनाते हैं।**
**जय जय जिनवर स्वामी, जय हो अन्तर्यामी-2।।टेक.।।**
**मेरु सुदर्शन के सोलह, चैत्यालय का वंदन करते।**
**नन्दीश्वर में जा बावन, चैत्यालय का अर्चन करते।।चैत्यालय का.....**
**प्रभु पंचकल्याणक में, जा भक्ति भाव करते।**
**चारण ऋद्धिधारी मुनि का, उपदेश श्रवण करते।।कभी.।।1।।**
**शशिप्रभ देव स्वर्ग के नन्दन, वन में क्रीड़ा करते हैं।**
**अपनी सुन्दरियों के संग, वैभव में रमते हैं।।वैभव में रमते हैं.....**
**सब देव वहाँ उसका, आदर भी करते हैं।**
**उसके सम्यक्त्व तथा तप का, अनुमोदन करते हैं।।कभी.।।2।।**
**पुण्य-पाप की महिमा देखो, देव यहाँ सुख भोग रहा।**
**साँप बेचारा पाप के कारण, नरक में जा दुख भोग रहा।।नरक में.....**
**दो भाई का किस्सा, कैसा रोमांचक है।**
**पारस प्रभु के भव-भव का, यह सत्य कथानक है।।कभी.।।3।।**



इस प्रकार स्वर्ग में सोलह सागर की आयु भोगकर वह शशिप्रभ देव अपने पुण्य प्रभाव से जम्बूद्वीप के विदेह क्षेत्र में स्थित विजयार्ध पर्वत पर लोकोत्तम नामक नगर के विद्याधर राजा की रानी के गर्भ में आ गया। वहाँ जन्म लेकर वह अग्निवेग नाम का विद्याधर राजा हुआ। राज्य सम्पदा को भोगते हुए सहसा भरी जवानी में ही एक दिन समाधिगुप्त मुनिराज के पास वह दर्शन करने गया। धर्म का उपदेश सुनकर अग्निवेग विद्याधर क्या करता है यह देखें–

इधर कमठचर नारकी नरक से निकलकर हिमगिरि पर्वत की गुफा में अजगर सर्प हो गया फिर आगे क्या होता है? देखें–

**(4)**

**सब छोड़ कुटुम्ब परिवार, राज दरबार, बने मुनिराजा,**
**जोड़ा शिवपथ से नाता।।**
**मुनि का उपदेश श्रवण करके।**
**वैराग्य भाव धारण करके।।**
**गुरु से मांगी दीक्षा भवजलधि जिहाजा,**
**जोड़ा शिवपथ से नाता।।1।।**
**लौकिक विद्या सब छोड़ दिया।**
**शिवपथ से नाता जोड़ लिया।।**
**आध्यात्मिक विद्या पाकर हुए महाराजा,**
**जोड़ा शिवपथ से नाता।।2।।**
**घोरातिघोर तप करना है।**
**उपसर्ग परीषह सहना है।।**
**हिमगिरि पर्वत की गुफा में ध्यान लगा था,**
**जोड़ा शिवपथ से नाता।।3।।**
**वहाँ अजगर सर्प ने आकर के।**
**मुनिवर को निगल लिया उसने।।**
**फिर भी मुनिराज के तप में हुई न बाधा,**
**जोड़ा शिवपथ से नाता।।4।।**
**मुनिवर ने मरण समाधि किया।**
**स्वर्गों का वैभव प्राप्त किया।।**
**मन में अजगर प्रति शत्रुभाव नहिं आता,**
**जोड़ा शिवपथ से नाता।।5।।**

समताभाव से सल्लेखनापूर्वक मरण करके मुनिराज तो सोलहवें स्वर्ग में देव हो गये और अजगर कुटिल भावों से मर कर छठे नरक में उत्पन्न हुआ। सुख और दुःख का यह खेल अनादिकाल से प्रत्येक प्राणी खेल रहा है। देखो! अब मुनिराज स्वर्ग के देवता बनकर वहाँ कैसे जीवन बिताते हैं तथा बेचारा अजगर सर्प का जीव नरक में कैसा दुःख भोग रहा है।

स्वर्ग के सभी देवता उस नये देव को देखकर प्रसन्नतापूर्वक बोलते हैं–

## (5)

*तर्ज –माई रे माई.....*

**देखो इक मुनिराज मरणकर, स्वर्ग हमारे आये।**
**चलो इन्हें हम नये-नये, मंदिर के दर्श करायें।।**
**जय हो सिद्धप्रभू की जय, जय हो सिद्धप्रभू की जय.।।**

**पूर्व जन्म में कष्ट इन्होंने, बहुत सहे हैं भाई।**
**लेकिन इनके धैर्य के आगे, शक्ति न कुछ टिक पाई।।**
**मरुभूति से लेकर अब तक, इनके भव बतलाएं।**
**चलो इन्हें हम नये-नये, मन्दिर के दर्श करायें।।**
**जय हो सिद्धप्रभू की जय, जय हो सिद्धप्रभू की जय.।।1।।**

**हे पुण्यात्मन् देवराज! तुम, भावी तीर्थंकर हो।**
**तुम जन्मोगे मध्यलोक में, युग के क्षेमंकर हो।।**
**आज स्वर्ग में भी तुमसे, कुछ शिक्षा लेने आये।**
**चलो इन्हें हम नये-नये, मंदिर के दर्श करायें।।**
**जय हो सिद्धप्रभू की जय, जय हो सिद्धप्रभू की जय.।।2।।**

अच्युत स्वर्ग की असीम विभूति में सुखपूर्वक निवास करते हुए बाईस सागर की आयु कैसे बीत गई उस देव को पता ही नहीं चला, पुनः वहाँ से निकलकर मनुष्य गति में चक्रवर्ती का वैभवपूर्ण पद प्राप्त कर लिया–

## (6)

**इस मध्यलोक में जम्बूद्वीप के अन्दर क्षेत्र विदेह कहा।**
**वहाँ वज्रवीर्य राजा की पटरानी विजया का महल बना।।**
**इक दिन रात्री में पांच सुखद सपनों को रानी ने देखा।**
**मेरु पर्वत, रवि, शशि के संग नभ में इक देव भवन देखा।।1।।**



**जल से परिपूर्ण सरोवर लख, रानी की निद्रा भंग हुई।**
**इन स्वप्नों का फल क्या होगा, इसमें ही वह चिरमग्न हुई।।**
**फिर सोचा इन सपनों का फल, मैं अपने पति से पूछूँगी।**
**फल उनका शुभ होवे या अशुभ, आगे उनके प्रति सोचूँगी।।2।।**

**राजा की राजसभा में जा, अर्धासन पर वह बैठ गई।**
**अपने सपनों को बतलाकर, उत्तर सुनने को बैठ गई।।**
**राजा ने अतिशय खुश होकर, बतलाया तुम सुत जन्मोगी।**
**छह खण्ड धरा पति चक्रवर्ति की माँ, बनकर तुम चमकोगी।।3।।**

**नव माह प्रतीक्षा के नन्तर इक राजपुत्र का जन्म हुआ।**
**उसके पुण्योदय के बल पर वह पद्मदेश भी धन्य हुआ।।**
**शिशु वज्रनाभि स्वर्गों का वैभव छोड़ धरा पर आया है।**
**मानो वह वैभव ही फिर से उसके चरणों में आया है।।4।।**

**शैशव से बाल्यावस्था में वह वज्रनाभि जब पहुँच गया।**
**अपनी आकर्षक क्रीड़ाओं से सबके मन को मोह लिया।।**
**वह दूज चन्द्रमा के समान वृद्धिंगत हुआ गुणों में भी।**
**तब चक्ररत्न उत्पन्न हुआ उनकी आयुधशाला में ही।।5।।**

**नृप वज्रनाभि ने श्री जिनेन्द्र की पूजन कर प्रस्थान किया।**
**कुछ समय में ही छह खण्ड धरा को जीत पूर्ण सम्मान लिया।।**
**इस अतुलनीय वैभव में भी नृप चक्रवर्ति नहिं फूल गया।**
**नश्वर कंचन अरु कीर्ति कामिनी में भी धर्म न भूल गया।।6।।**

**सुखपूर्वक राजा वज्रनाभि निज राजसुखों को भोग रहे।**
**धर्मार्थ काम पुरुषार्थों को क्रमशः जीवन से जोड़ रहे।।**
**वे देवशास्त्रगुरु की सेवा कर जनता पर शासन करते।**
**निज कर्तव्यों का पालन कर वसुधा का संचालन करते।।7।।**

**इक बार राज उपवन में ही, निर्ग्रन्थ मुनी का संघ आया।**
**परिजन पुरजन के संग राजा, उनके दर्शन को खुद आया।।**
**राजा के नम्र निवेदन पर, गुरु ने उपदेश सुनाया है।**
**उपदेश श्रवण कर वज्रनाभि के, मन वैराग्य समाया है।।8।।**

वे चिन्तन करते हैं मैंने भोगों का अनुभव बहुत किया।
पर तृप्ति न मन की हुई अतः मैंने इनसे मुख मोड़ लिया।।
अविनश्वर सुख की प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ मुझे अब करना है।
नश्वर धन वैभव महल आदि का त्याग मुझे अब करना है।।9।।

यह सोच चक्रवर्ती नृप ने छह खंड राज्य को त्याग दिया।
क्षण भर विराग की संगति से वैरागी पद स्वीकार लिया।।
राजा बन गये दिगम्बर मुनि तो उनकी जय जयकार हुई।
गुरु वज्रनाभि के अन्दर सच्ची तप शक्ती साकार हुई।।10।।

वे शत्रु-मित्र सुख-दुख, स्तुति-निंदा में समता रखते हैं।
आतम सुख की प्राप्ती हेतु वे घोर तपस्या करते हैं।।
वे यत्र-तत्र कर पदविहार पुनरपि वन में ध्यानस्थ हुए।
आतापन योगों के द्वारा कर्मों के बंधन ध्वस्त किए।।11।।

थे ध्यानलीन इक दिन मुनिवर नहिं बाह्य विकल्प उन्हें कुछ था।
तब वही कमठ का जीव भील बनकर हो गया उपस्थित था।।
मुनि को लखकर उस क्रूर भील ने और क्रूरता दिखलाई।
हो कुपित तीक्ष्ण बाणों से उसने मुनि को पीड़ा पहुँचाई।।12।।

था असहनीय उपसर्ग किन्तु वे वज्रनाभि मुनि ध्यानमगन।
सह लिया देह से निस्पृह हो बारहभावन का कर चिन्तन।।
उपयोग में स्थिरता लाकर चेतन आत्मा में रमण किया।
फिर धर्मध्यान में एक तान हो नश्वर तन से गमन किया।।13।।

## (7)

मानव के तन से निकल मुनी की आत्मा ग्रैवेयक पहुँची।
अहमिन्द्र बना मध्यम ग्रैवेयक में जन्मा हो गया सुखी।।
सत्ताइस सागर की आयू तक दिव्य सुखों को भोग लिया।
फिर मध्यलोक में आकर राजा बनकर सुख उपभोग किया।।14।।

देखो! इक ओर सुखामृत है जो मरुभूति को प्राप्त हुआ।
इक ओर दुखों का सागर है जो भ्रात कमठ को प्राप्त हुआ।।



समतापूर्वक दुख सहने से आगे सुख ही सुख मिलता है।
निष्कारण दुख देने वालों को उसका फल दुख मिलता है।।15।।

वह भीलराज भी रौद्रध्यान से मरकर सप्तम नरक गया।
लाखों बिच्छू के डंक सदृश भारी कष्टों में तड़प गया।।
अत्यन्त दुखी हो हाय-हाय कहकर विलाप वह करता है।
फिर ज्ञान विभंगावधि द्वारा पूरब भव सुमिरन करता है।।16।।

पश्चात्तापों की अग्नी में वह झुलस रहा अज्ञानी है।
कैसे दुःखों को सहन करूँ रो रो कहता वह प्राणी है।।
उस नरक क्षेत्र में क्षणभर भी नहिं शांति उसे मिलने पाती।
कोटी जिह्वा मिलकर उस दुख का वर्णन भी नहिं कर पाती।।17।।

पूरबकृत पापकर्म को वह, स्मृत कर दुःख को पाता है।
इच्छा है जग भर अन्न मिले, लेकिन कण एक न पाता है।।
सागर भर पानी पी जाऊँ, ऐसी लगती है प्यास वहाँ।
लेकिन इक बूँद न जल मिलता, ऐसा नरकों का दुःख महा।।18।।

ऐसे भीषण दुःखों को उसने, पूरी आयू सहन किया।
सत्ताइस सागर की आयू, रोते-रोते ही बिता दिया।।
सागर की परिभाषा सुनकर, रोमांच हृदय में होता है।
कैसे बीता होगा यह काल, जो अनन्तकाल सम होता है।।19।।

इस प्रकार वह पापी कमठ का जीव सप्तम नरक की सत्ताइस सागर प्रमाण मध्यम आयु को भोग रहा है, वहाँ अन्य नारकी जीव पूर्व वैर के कारण उसके शरीर के तिल-तिल खण्ड कर देते हैं परन्तु वहाँ असमय में मृत्यु नहीं होने से वह शरीर पुनः पारे के समान एकमेक हो जाता है। नरकों के ऐसे असह्य दुःखों को जानने के बाद मनुष्य को हमेशा अच्छे-अच्छे कार्य करना चाहिए ताकि उसे नरक जैसी दुर्गति में न जाना पड़े।

हाँ! ये तो हुई कमठ के जीव की बात, अब आपको जानना है कि मरुभूति का जीव मध्यम ग्रैवेयक की सत्ताइस सागर प्रमाण आयु को पूर्ण करके कहाँ गया–

## (8)

*–शेरछंद –*

अब आगे सुनो तुम कथा साकेतपुरी की।
राजा थे वज्रबाहु रानी प्रभाकरी थी।।
मरुभूति का वह जीव इनका पुत्र हो गया।
आनन्द' कुमार नाम से प्रसिद्ध हो गया।।1।।

बीता समय वह पुत्र महाराजा बन गया।
गुणयुक्त महामण्डलीक राजा बन गया।।
इक बार नंदीश्वर परब में आठ दिनों तक।
राजा ने किया पाठ नन्दीश्वर का भक्तियुत।।2।।

अगणित जनों ने पाठ देख कर्मक्षय किया।
मुनिराज विपुलमती ने भी दर्श था किया।।
राजा ने मुनीराज चरण में नमन किया।
उनके मुखारविन्द से प्रवचन श्रवण किया।।3।।

पूछा मुनी से राजा ने जो उनको शंका थी।
प्रतिमाएँ अचेतन हैं कैसे पुण्य फल देतीं?
मुनि बोले–'इनकी वीतरागता में है शक्ती।
औषधि है अचेतन परन्तु रोग को हरती।।4।।

फिर मुनि ने नृप को सूर्य की महिमा भी बताई।
उसके विमान की कही लम्बाई-चौड़ाई।।
उस सूर्य के विमान में जिनभवन बने हैं।
वे भवन चमर, छत्र, भामण्डल से सजे हैं।।5।।

हैं इक सौ आठ मूर्तियाँ उनमें विराजतीं।
औ यक्ष-यक्षियों की मूर्तियाँ भी राजतीं।।
जो भव्यजीव मूर्तियों की वंदना करें।
वे क्रम से सुख को भोग मुक्तिकन्या वश करें।।6।।

मुनिराज का उपदेश सुन के राजा खुश हुए।
वे सूर्यबिम्ब के प्रती श्रद्धावनत हुए।।
नृप ने सुवर्ण सूर्य का विमान बनवाया।
उसको रतन की मूर्तियों से खूब सजाया।।7।।



श्रद्धा व भक्ति से वे सूर्य बिम्ब पूजते।
जिसके प्रसाद से वे कर्म दूर कर लेते।।
आचार्य कहते हैं जगत में उसी समय से।
सूरज को पूजने की प्रथा शुरू हुई है।।8।।

इक दिन सभा में बैठे थे दर्पण में मुख दिखा।
अपने ही सिर में एक धवल केश लख लिया।।
तत्काल वे भव-भोग से विरक्त हो गए।
संसार की असारता को वे समझ गए।।9।।

निज पुत्र को साम्राज्य सौंप मुनि निकट गए।
जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर वे भी मुनि भए।।
अट्ठाईस मूलगुण को अब वे पालने लगे।
तप-त्याग से वे कर्मों को प्रक्षालने लगे।।10।।

गुरु के निकट में बैठ के श्रुत अध्ययन किया।
फिर सोलह भावनाओं का भी चिंतवन किया।।
जिनके निमित्त उन्हें मिली तीर्थंकर प्रकृती।
फिर और भी अनेक ऋद्धियाँ उनमें प्रकटीं।।11।।

इक बार वे मुनिराज ध्यानलीन खड़े थे।
प्रतिमा का योग लेके अचल शान्त खड़े थे।।
आया तभी इक सिंह वहाँ गर्जना करता।
पापी कमठ का जीव वह नरकों से आया था।।12।।

उसने मुनी को देखा क्रोध से भड़क उठा।
टुकड़े किए शरीर के फिर खाने लग गया।।
उपसर्ग समझ वे मुनी सब सहन कर रहे।
तन से न राग शत्रु सिंह से न बैर है।।13।।

वे धीर-वीर तपोधनी ज्ञानपुञ्ज हैं।
करुणा-क्षमा की मूर्ति को मैं करूँ नमन है।।
है प्रार्थना मुझे भी ऐसी शक्ति प्राप्त हो।
ऐसी क्षमा करूँ कि सब विघ्नों का नाश हो।।14।।

वास्तव में क्षमाभाव की कितनी महिमा है! यह क्षमा जिसके हृदय में स्थापित हो जाती है उसमें न जाने कितनी सहनशक्ति आ जाती है कि वह अपने

ऊपर किए जा रहे अकारणिक उपसर्ग को भी आसानी से सहन कर लेता है।

मरुभूति के उस क्षमाशील जीव ने मुनि की पर्याय में कमठ के जीव सिंह द्वारा किए गए घोर उपसर्ग को सहन करते हुए शुभ परिणामों से मरणकर दिव्य वैक्रियिक देह धारण कर लिया अर्थात् आनत नामक तेरहवें स्वर्ग के प्राणत नामक विमान में इन्द्र हो गए। अब आगे की कथा इस प्रकार है–

## (9)

*तर्ज –आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ.....*

**आओ भक्तों! तुम्हें सुनाएँ, कथा एक इन्सान की।**
**क्षमा-धैर्य के द्वारा बनने, वाले प्रभू महान की।।**
**जय जय जिनवरं-4।।**
**आनन्द मुनिवर मध्यलोक से, ऊर्ध्वलोक में पहुँच गए।**
**आनत नामक स्वर्ग में जाकर, वे तो बहुत प्रसन्न हुए।।**
**वहाँ की धरती रत्न और मणियों से ज्योतिर्मान थी।**
**क्षमा-धैर्य के द्वारा बनने, वाले प्रभू महान की।।**
**जय जय जिनवरं-4।।1।।**
**स्वर्गपुरी में उनको सुन्दर, नवयौवन तन प्राप्त हुआ।**
**दिव्य अवधि चक्षू के द्वारा, सब बातों का ज्ञान हुआ।।**
**पहुँचे मंदिर सबसे पहले, पूजा की भगवान की।**
**क्षमा-धैर्य के द्वारा बनने, वाले प्रभू महान की।।**
**जय जय जिनवरं-4।।2।।**
**कभी मेरु पर्वत पर जाकर दर्शन-वंदन करते हैं।**
**द्वीप नन्दीश्वर में जाते अरु समवसरण में जाते हैं।।**
**दिव्यध्वनी सुन किया उन्होंने, जीवन का उत्थान भी।**
**क्षमा-धैर्य के द्वारा बनने वाले, प्रभू महान की।।**
**जय जय जिनवरं-4।।3।।**
**कभी देव-देवी के संग में, मनोविनोद किया करते।**
**वैभव अतुल भोगते फिर भी, उसमें रमा नहीं करते।।**
**भावी तीर्थंकर हैं वे तो, करते समरस पान ही।**
**क्षमा-धैर्य के द्वारा बनने, वाले प्रभू महान की।।**
**जय जय जिनवरं-4।।4।।**



ये तो आप समझ ही गए हैं कि उस पुण्यशाली जीव ने स्वर्ग में किस-किस प्रकार के दिव्यसुखों का उपभोग किया, अब आप उनके दशवें भव अर्थात् भगवान पार्श्वनाथ के जीवन के बारे में जानेंगे–

## (10)

**वाराणसि नगरी पुण्यभूमि, जहाँ अश्वसेन महाराजा थे।**
**उनकी रानी वामा देवी, सब गाते उनकी गाथा थे।।**
**उनके आँगन में धनकुबेर, रत्नों की वर्षा करते थे।**
**तीर्थंकर जन्मेंगे यहाँ पर, वे ऐसा सूचित करते थे।।1।।**
**इक रात्री में वामा देवी ने, सुन्दर स्वप्ने देखे थे।**
**नहिं एक नहीं दो नहीं उन्होंने, सोलह सपने देखे थे।।**
**प्रातः रानी वामा देवी, अपने पति देव के निकट गईं।**
**पति की आज्ञा पा करके वह, अर्धासन पर थीं बैठ गई।।2।।**
**स्वप्नों का वर्णन रानी के फिर क्रम-क्रम से बतलाया था।**
**सुनकर के राजा अश्वसेन का, रोम-रोम हरषाया था।।**
**'तुम तीर्थंकर जननी होंगी', स्वप्नों का यह फल बतलाया।**
**सुनकर वामा देवी ने सोचा, सफल हुई मेरी काया।।3।।**
**नव महिने बीत गए सुख से, माता को नहिं संक्लेश हुआ।**
**आई जब पौष वदी ग्यारस, रवि सदृश पुत्र उत्पन्न हुआ।।**
**माँ-पिता सहित तीनों लोकों की, जनता अतिशय पुलकित थी।**
**सौधर्म इन्द्र आए सह परिकर, आई शचि इन्द्राणी भी।।4।।**
**सौधर्म इन्द्र बालक को लेकर, गए सुमेरु पर्वत पर।**
**वहाँ पाण्डुकशिला बनी सुन्दर, अभिषेक किया सबने मिलकर।।**
**जन्माभिषेक के बाद इन्द्र ने, प्रभु का 'पार्श्व' नाम रक्खा।**
**दश अतिशय सहित पार्श्व प्रभु के, चरणों में मस्तक है झुकता।।5।।**
**पारस कुमार हो गए युवा, उनका शरीर अतिशय सुन्दर।**
**पितु अश्वसेन बोले-अब जल्दी ब्याह करो हे राजकुँवर!**
**पर पार्श्वकुंवर ने पितु के इस, प्रस्ताव को नहिं स्वीकार किया।**
**असिधारा व्रत जो महापूज्य, उसको ही अंगीकार किया।।6।।**

इक बार पार्श्वप्रभु मित्रों संग, वनक्रीड़ा करने निकले थे।
वहाँ देखा एक तापसी को, जो पंचाग्नी तप करते थे।।
वे तपसी और नहीं कोई, प्रभु पार्श्वनाथ के नाना थे।
उनको नहिं ज्ञान रंच भी था, वे करते तप मनमाना थे।।7।।

वे पार्श्वप्रभू निज मित्रों संग, तपसी के निकट थे पहुँच गए।
मैं हूँ इसका नाना नहिं इसने, नमस्कार है किया मुझे।।
यह सोच तापसी ने गुस्से में, लकड़ी पर था वार किया।
पारस प्रभु समझाते ही रहे, उसने लकड़ी को फाड़ दिया।।8।।

उस लकड़ी में था नागयुगल, उसके दो टुकड़े हुए तभी।
प्रभु बोले तपसी से तुम अपना, गर्व त्याग कर दो अब ही।।
तपसी बोले मैं नाना हूँ, तूने नहिं मुझको नमन किया।
मैं घोर तपस्या करता हूँ, तूने नहिं मेरी विनय किया।।9।।

प्रभुवर बोले-जिस तप में हिंसा, वह तप नहीं कुतप ही है।
तुम सम्यक् तप धारण कर लो, कल्याण तुम्हारा निश्चित है।।
उपदेश श्रवण कर नागयुगल ने, निज शरीर का त्याग किया।
धरणेन्द्र और पद्मावती बनकर, जीवन का कल्याण किया।।10।।

वह तपसी जीव कमठ का था, यह याद सभी को रखना है।
किस्सा पढ़कर यह तुम्हें किसी से, बैर कभी नहिं करना है।।
अब आगे सुनो पार्श्वप्रभु निज दरबार में इक दिन बैठे थे।
साकेतपुरी से एक दूत, आया कुछ दिव्य वस्तुएँ ले।।11।।

राजा ने कुछ क्षण बाद दूत से, पूछा हाल अयोध्या का।
उस कुशल दूत ने सुन्दर वर्णन, करना शुरू किया वहाँ का।।
वर्णन सुनते-सुनते पारसप्रभु, के मन में वैराग्य हुआ।
तत्क्षण लौकान्तिक सुर आए, जय-जय का स्वर भी गूँज उठा।।12।।

पालकि में बैठ पार्श्वप्रभु पहुँचे, अश्वनाम के उपवन में।
थी पौष वदी ग्यारस शुभतिथि, जिस दिन दीक्षा ली प्रभुवर ने।।
थे गुल्मखेटपुर के राजा, था ब्रह्मदत्त जिन नाम भला।
आहार प्रथम प्रभु को देने का, उनको ही सौभाग्य मिला।।13।।



इक बार पार्श्वप्रभु ने अपनी, आत्मा को ध्यान में लीन किया।
शंबर ज्योतिष के रूप में कमठासुर ने बहु उपसर्ग किया।।
कभी पत्थर बरसाए कभी अग्नी, आँधी कभी चलाई थी।
लेकिन प्रभु मेरु सदृश अविचल, नहिं उनको कुछ कठिनाई थी।।14।।

उपसर्ग समय सहसा धरणेन्द्र, देव का आसन काँप उठा।
निज भार्या संग प्रभु के मस्तक पर, छत्र उन्होंने तान दिया।।
धरणेन्द्र युगल को देखा ज्यों ही, त्यों ही वह पापी भागा।
प्रभु ने श्रेणी आरोहण कर, कैवल्य परम पद को पाया।।15।।

इन्द्राज्ञा से धनपति ने अद्भुत, समवसरण रचना कर दी।
जिस स्थल पर उपसर्ग हुआ, वह 'अहिच्छत्र' हो गया तभी।।
शंबर नामक वह ज्योतिषि भी, पा काललब्धि कुछ शांत हुआ।
प्रभु चरणों में कर नमस्कार सम्यग्दर्शन को प्राप्त किया।।16।।

यह देख सात सौ तपसी भी, सम्यग्दृष्टी बन गए अहो!
तुम भी अपने जीवन में कभी, मिथ्यात्व को ना आश्रय देवो।।
कुछ कम सत्तर वर्षों तक प्रभुवर, समवसरण में राज रहे।
जब एक माह की आयु बची, सम्मेदाचल पर पहुँच गए।।17।।

वहाँ छत्तिस मुनियों सहित प्रभू ने प्रतिमायोग लगाया था।
फिर श्रावण शुक्ला सप्तमि के दिन, मोक्षधाम को पाया था।।
प्रभु पार्श्व के बाद नहीं कोई, तीर्थंकर मोक्ष गए यहाँ से।
अतएव इसे ''पारसहिल'' नाम से, जाना जाता है तब से।।18।।

पारस सम मेरा भी जीवन, बन जावे यही प्रार्थना है।
मैं क्षमा, धैर्य गुण को धारूँ, बस केवल यही कामना है।।
अपकार करे कोई कितना, दुर्भाव नहीं मन में आवे।
जब तक नहिं मोक्ष मिले तब तक, 'चन्दनामती' तव गुण गावे।।19।।

इस प्रकार भगवान पार्श्वनाथ के विस्तृत जीवन चरित्र को संक्षिप्तरूप से इस काव्यकथा के माध्यम से प्रस्तुत किया है आप सभी भक्तगण इसको पढ़कर भगवान पार्श्वनाथ के जीवन से परिचित होवें तथा उनके जीवन से कुछ न कुछ प्रेरणा अवश्य प्राप्त करें, यही मंगल भावना है।

# माता त्रिशला और महावीर का संवाद

## (महावीर और त्रिशला का संवाद)

*तर्ज –बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....*

**माता त्रिशला –**

महावीर ओ वीर लाडला, आजा मेरे पास।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।
आँखों का .....।।
बेटा मेरे महलों में अब, शीघ्र बहू ले आ तू।
मेरी आशाओं का सुन्दर महल सजाएगा तू।
तुझ जैसी सुत की जननी बन, धन्य हुई मैं आज।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।1।।

**महावीर –**

भोली भाली माता मेरी, सुन ले दिल की बात।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।
अपनी.....।।
पहले तेरी गोदी में, छुप छुपकर तुझे मना लूँ।
फिर जीवन संगिनी को लेने, दूर कहीं मैं जाऊँ।।
खुशी-खुशी तू आज्ञा दे दे, तभी बनेगी बात।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।1।।

**त्रिशला –**

बेटा तू जिसमें खुश है, बस वही खुशी मेरी है।
मेरे मन की बात आज, मानो तूने कह दी है।।
लाड़ लड़ा ले चाहे जितना, पर अब चढ़े बारात।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।2।।

**महावीर –**

अब मिल गया वचन तो सुन माँ, वह दुल्हन कैसी है।
नाम है उसका सिद्धिप्रिया, वह सिद्धमहल रहती है।।
उसको वरने जाऊँगा, मैं ले दीक्षा बारात।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।2।।



**त्रिशला –**

यह कैसी अनहोनी बातें, करता तू महावीरा।
अपनी भोली माता से, क्यों छल करता है वीरा।।
सह नहिं पाऊँगी मैं बेटा, असमय में ये मजाक।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।3।।

**महावीर –**

जिसे तू कहती है अनहोनी, होना वही है माता।
मैं ना ब्याह रचाऊँ दूजा, सच कहता हूँ माता।
सिद्धिप्रिया से प्रेम है मुझको, सुन ले दिल की बात।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।3।।

**त्रिशला –**

इन महलों में क्या कमियाँ, दिखती हैं बेटा तुझको।
क्यों सोचा वन में जाने की, क्यों तू सताता मुझको।।
नहीं कमी हैं सुन्दरियों की, वीर मान ले बात।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।4।।

**महावीर –**

महल का सुख नश्वर है माता, आतमसुख अविनश्वर।
तू अधीर क्यों होती है माँ, मोहचक्र में फँसकर।।
मेरी अच्छी माता मुझको, दे दे आशिर्वाद।
अपनी पंसद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।4।।

**त्रिशला –**

मेरा यह सुकुमार पुत्र, कैसे जंगल में रहेगा।
भूख प्यास सर्दी गर्मी, तू कैसे सहन करेगा।
मैं रो रोकर दुःख पाऊँगी, कैसे करूँ बर्दाश्त।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।5।।

**महावीर –**

वीर की माता त्रिशला का दिल, महावीर बलशाली।
फिर तू माता ऐसे क्यूं, अपना मन करती खाली।।
तेरा पुत्र अनन्त बली है, भूल गईं क्या मात।
अपनी पंसद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।5।।

**त्रिशला –**

बेटा हर माँ को अपना, घर-आँगन प्रिय लगता है।
बहू की छम छम पुत्र पौत्र के, संग ही मन रमता है।।
माता के सपनों का तू नहिं, समझ सकेगा राज।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।6।।

**महावीर –**

हर माता की तरह तू अपनी, गणना मत कर माता।
तेरे पग में तो हर माँ, रखती है अपना माथा।
तुझ सम सोलह स्वप्न किसी ने, देखे हैं क्या मात।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।6।।

**त्रिशला –**

बड़ी-बड़ी बातें करके तू, मुझको समझाता है।
मेरे दिल की धड़कन तू क्यों, समझ नहीं पाता है।।
अपने पितु का एक सहारा, तू ही तो है लाल।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।7।।

**महावीर –**

जाने कितने मात पिता, भव भव में पाए हमने।
मिथ्या भ्रान्ति तजो माता अब, देखो शाश्वत सपने।।
एक सूर्य का ही होता है, पूर्ण धरा पर राज।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।7।।

**त्रिशला –**

तुझसे पहले वीरा तेइस, तीर्थंकर जन्में हैं।
उनमें से उन्निस तीर्थंकर, ने तो ब्याह किये हैं।।
इसीलिए तुझसे भी बेटा, कहती तेरी मात।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।8।।

**महावीर –**

ब्याह बुरा नहिं है लेकिन, अविवाह है उससे अच्छा।
ब्रह्मचर्य में सुख है शाश्वत, भोगों में नहिं सच्चा।
वासुपूज्य मलि नेमि पार्श्व ने, तभी किया सब त्याग।
अपनी पसंद की दुल्हन, लाऊँगा कुछ दिन बाद।।8।।



**त्रिशला –**

पुत्र तेरा यह दृढ़ निश्चय, लगता अब नहिं बदलेगा।
तेरे संग अब मेरा भी, जीवन उपवन महकेगा।।
तेरे असिधारा व्रत से, होगा जग का उद्धार।
आँखों का तारा मेरा, कुण्डलपुरी का युवराज।।9।।

**महावीर –**

अब तूने माँ का असली, कर्तव्य निभाया है।
सिद्धारर्थ की रानी का, गौरव तूने पाया है।।
करे ''चन्दना'' भी उस माँ को, अपने मन में याद।
अपनी पंसद की दुल्हन, लेने चला मैं माता आज।।9।।
अपनी.....।।

# बाहुबलि वैराग्य

युग की आदी में नाभिराज ने जन्म लिया इस पृथ्वी पर।
रानी मरुदेवी सहित राज्य करते थे अयोध्या नगरी पर।।
श्री ऋषभदेव तीर्थंकर जब मरुदेवी गर्भ पधारे थे।
षट्मास पूर्व से रत्नवृष्टि कर रहे देवगण सारे थे।।1।।

वह था पवित्र दिन घड़ी धन्य आदीश प्रभू ने जन्म लिया।
सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी सह दर्शन कर जीवन धन्य किया।।
जन्माभिषेक तीर्थंकर का सुरगिरि पर करते देव सभी।
वस्त्राभूषण सह दिव्य रूप लख मुदित हुईं मरुदेवी भी।।2।।

देवों के संग में खेल खेल कर ऋषभदेव कुछ बड़े हुए।
उनकी अनुपम आभा अप्रतिम छवि नाभिराज भी देख रहे।।
यौवन की देहली पर शिशु के पग रखते ही माता बोलीं।
हो दूज चन्द्र सम चन्द्रबदन कर ब्याह भरो मेरी झोली।।3।।

कुछ दिवस बाद श्रीनाभिराज के महलों में खुशियाँ छाईं।
वृषभेश कुंवर का ब्याह हुआ दो रूप यौवना थी आईं।।
पहली रानी थीं यशस्वती सुरललनाओं से भी सुन्दर।
थी प्रिया सुनंदा आनंदित तीर्थंकर जैसा पति पाकर।।4।।

बस एकछत्र शासन जग में आदीश्वर का ही फैला था।
इक्ष्वाकुवंश का एक सूर्य कोटी सूर्यों सम दिपता था।।
था समय बीतता जाता प्रभु जीवन की मधुरिम घड़ियों में।
तब भरतराज और बाहुबलि ने जन्म लिया था महलों में।।5।।

माँ यशस्वती ने भरत आदि निन्यानवे पुत्र एक पुत्री।
ब्राह्मी को जन्म दिया तब से ही धन्य हो गई यह धरती।।
सुन्दरि कन्या और बाहुबली जन्मे थे मात सुनन्दा से।
चक्रीश प्रथम और कामदेव भी प्रथम धरा पर आए थे।।6।।

प्रभु राज्यसभा में एक दिवस इक सुरललना ने नृत्य किया।
कुछ ही क्षण में हो गई विलीन प्रभु को तब अवधिज्ञान हुआ।।



यह जग असार नश्वर वैभव क्षणभंगुर जीवन सपना है।
केवल है सिद्ध शरण अपनी बाकी नहिं कुछ भी अपना है।।7।।

भरताधिप का राज्याभिषेक कर राजा उनको बना दिया।
साकेतपती बन गए भरत सब राजनीति भी समझ लिया।।
युवराज बाहुबलि को पोदनपुर राज्य दिया वृषभेश्वर ने।
सब पुत्रों को भी भेज दिया निजनिज सत्ता के शासन में।।8।।

आदिब्रह्मा श्री ऋषभदेव कैलाश गिरी पर जाते हैं।
बस नमः सिद्ध का उच्चारण कर वह दीक्षित हो जाते हैं।।
वृषभेश्वर तप करते-करते केवलज्ञानी बन जाते हैं।
भरताधिप को त्रय समाचार युगपत् ही दूत सुनाते हैं।।9।।

प्रभु आदिनाथ को केवलरवि किरणों से प्रगटित ज्ञान हुआ।
पुत्रोत्पत्ति औ चक्ररत्न उत्पत्ति हुई यह ज्ञात हुआ।।
भरताधिप कुछ चिन्तन करके पहले प्रभु समवसरण पहुँचे।
आश्चर्यचकित हो गए वहाँ की दिव्यविभूती को लखके।।10।।

जन्मोत्सव पुत्र मना करके विधिवत् षट्खंड को जीत लिया।
नगरी साकेत बनी दुल्हन पर चक्ररत्न न प्रवेश किया।।
भरतेश्वर ने शीघ्रातिशीघ्र सब ज्योतिर्विद को बुला लिया।
बोले ज्योतिषी तभी राजन्! अनुजों को तुमने वश न किया।।11।।

ज्योतिर्विद के इस उत्तर से भरतेश हताश हुए मन में।
फिर कर विचार चक्राधिप ने संदेश भाइयों को भेजे।।
सब भाई यह घटना सुनकर वृषभेश निकट को जा करके।
दीक्षा जैनेश्वरि ग्रहण किया वैभव को छोड़ दिया सबने।।12।।

अफसोस हुआ भरतेश्वर को सब भाई मुझसे रुठ गये।
मेरे ही कारण जग संपति वैभव से नाता तोड़ गये।।
बस एक बाहुबलि शेष बचे कैसे उनको वश में करना।
भाई-भाई का प्रेम रहे पूरा हो चक्रवर्ति सपना।।13।।

इक राजदूत को भेज दिया जाओ भुजबलि से कह देना।
षट्खंडाधिप चक्रेश्वर ने स्मरण किया भाई अपना।।

बस यही निमंत्रण बाहुबली का स्वाभिमान बतलाता है।
उनका ही अब संवाद सुनो जो जग में गाया जाता है।।14।।

**दूत–** मेरा प्रणाम स्वीकार करो हे बाहुबली महिमाशाली।
सर्वत्र चाँदनी फैल रही जिनके यश की गौरवशाली।।
हे राजन्! श्रीभरतेश धरा छहखंड विजय कर आए हैं।
निज अनुज बाहुबलि स्मरण किया वे चक्रवर्ति कहलाए हैं।।15।।

**बाहुबली–** हैं पिता सदृश श्रीभरतेश्वर भाई उनको कह सकता हूँ।
भाई के नाते से भाई को मैं प्रणाम कर सकता हूँ।।
लेकिन राजाधिराज को मैं नहिं अपना शीश झुका सकता।
मेरा गौरव मेरे में है नहिं नमस्कार मैं कर सकता।।16।।

जावो राजन् से कह देना युद्धस्थल में निर्णय होगा।
हो गर्व यदी निज वैभव का तो युद्ध उन्हें करना होगा।।

**दूत–** ऐसा भी क्या हठ है राजन् आखिर तो वे चक्राधिप हैं।
स्वीकार करो आज्ञा उनकी नहिं घट सकता तव गौरव है।।17।।

सब देश-देश के राजागण उनके ढिग शीश झुकाते हैं।
तज गर्व भाई से गले मिलो हम यही तुम्हें समझाते हैं।।

**बाहुबली–** रे दूत! तेरा यह दुःसाहस तू मुझे सीख देने आया।
मेरी सत्ता और गौरव से तू खेल खेलने है आया।।18।।

जा शीघ्र भरत से कह देना भुजबलि को नहीं बुला सकते।
यदि मोह अनुज से है तो क्या वे नहीं यहाँ तक आ सकते।।
*(दूत जाकर भरत को बाहुबली का संदेश देता है)*

**दूत–** हे षट्खंडाधिप चक्रेश्वर! मेरा प्रणाम स्वीकार करो।
भुजबलि नहिं वश में हो सकते यह निश्चित अंगीकार करो।।19।।

उस कामदेव का गौरव भी नहिं चक्रवर्ति से न्यून कहीं।
हे नाथ! आप नहिं पा सकते उस बाहुबली का राज्य कभी।।

**भरत–** यह चक्र अयोध्या नगरी में कैसे प्रवेश कर सकता है।
यदि मेरी सत्ता पर भुजबलि का शीश नहीं झुक सकता है।।20।।



हे मंत्रिन्! सेना पहुँचावो तुम पोदनपुर के प्राांगण में।
अभिमान बाहुबलि को उसका दिखलाऊँगा युद्धस्थल में।।

*(दोनों ओर की सेनाएं आ जाती हैं युद्ध भेरी बजती है)*

दोनों पक्षों के मंत्रीगण आपस में अचरजयुक्त कहें।
कैसे बन सकती हार जीत सम वीर्य पराक्रमयुत हैं ये।।21।।

*(मंत्री जाकर भरत से निवेदन करते हैं)*

**मंत्री–** हे देव! सुनो मेरी विनती तीर्थंकर सुत दोनों भ्राता।
यह हिंसाकांड व्यर्थ करने से रो देगी धरती माता।।
है उचित न्याय यह तुम दोनों भाई आपस में युद्ध करो।
हैं दृष्टियुद्ध जल मल्लयुद्ध इनमें विजयी बन राज्य करो।।22।।

***भरत-*** मंत्रिन्! तब श्रेष्ठ युक्ति मुझको भा गई यही हम करते हैं।
नहिं होने देंगे हिंसा हम त्रय धर्मयुद्ध कर सकते हैं।।
हे बाहुबली! तुम भी बोलो ये तीन युद्ध स्वीकार तुम्हें।
मैं समझ गया निज सत्ता का कितना है स्वाभीमान तुम्हें।।23।।

**बाहुबली–** बस अधिक नहीं कहना मुझको यह युद्ध तुम्हें निर्णय देगा।
वृषभेश्वर पूज्य पिताकृत है गौरव मेरा बतलाएगा।।
तुम चक्रवर्ति षट्खंडपती मुझको नहिं लेना तव शरणा।
मेरी प्यारी दुनिया पोदनपुर मुझको उसमें ही रहना।।24।।

*(दोनों भाई आमने-सामने खड़े होकर अनिमिष दृष्टि से एक दूसरे को देखते हैं)*

दो सदृश बलशाली भ्राता हैं आदिचक्रपति आदिमदन।
आपस में अनिमिष दृष्टी से लख तृप्त नहीं होता है मन।।
सब देश-देश के राजा औ स्वर्गों से देव उमड़ आए।
दोनों में विजयी कौन बनेगा यह निर्णय नहिं कर पाए।।25।।

भरताधिप के उन्नत शरीर की पंचशतक धनु ऊँचाई।
उनसे कुछ ऊँचे बाहुबली उनकी दृष्टी नहिं झुक पाई।।
दोनों के निर्निमेष नयनों में प्रथम भरत कुछ झेंप गए।
हो गई घोषणा दृष्टियुद्ध में बाहुबली जी जीत गए।।26।।

इक भव्य सरोवर में उतरे दोनों बंधू जलयुद्ध करें।
अग्रज नहिं जीत सके इसमें भी बाहुबली विजयी ठहरे।।
सब जनता जयजयकार करे जय बाहुबली जय बाहुबली।
अब अंतिम निर्णय शेष रहा है मल्लयुद्ध जो कायबली।।27।।

दो बिछुड़े भाई आपस में आलिंगन मानो करते हैं।
दो चरमशरीरी बंधु राज्य के लिए युद्ध यह करते हैं।।
बस निमिषमात्र में बाहुबली ने भरतेश्वर को उठा लिया।
अग्रज चक्रीश मान रखने को निज कंधे पर बिठा लिया।।28।।

तीनों युद्धों की पूर्ण विजयश्री बाहुबली को प्राप्त हुई।
जनता की जयजयकार ध्वनी से मात सुनंदा धन्य हुई।।
लज्जित होकर चक्रेश्वर ने निज गौरव को भी भुला दिया।
क्रोधित हो करके बाहुबली पर चक्ररत्न भी चला दिया।।29।।

धिक्कार रही दुनिया सारी भरतेश्वर यह क्या करते हो।
अपने ही वंशज के ऊपर क्या चक्र चला तुम सकते हो।।
अन्याय तुम्हारा यह पृथ्वी भी सहन नहीं कर सकती है।
क्या वैभव का मद ऐसा ही होता यह कैसी शक्ती है।।30।।

वह चक्र बन गया बाहुबली का कीर्तिचक्र महिमाशाली।
बन गया शिष्य सम बाहुबली की त्रय प्रदक्षिणा कर डाली।।
यह दृश्य देख भरतेश्वर को भी आत्मग्लानि होने लगती।
ओहो! मैंने यह कर डाली कैसी अनहोनी सी गलती।।31।।

*(बाहुबली को वैराग्य हो जाता है और वह भरत से दीक्षा की आज्ञा मांगते हैं)*

**बाहुबलि–** नहिं मुझे चाहिए यह वैभव, वैभव तो चक्री का ही है।
अपराध माफ कर दो मेरा, हे बंधु कह रहा भाई है।।
मैं तो केवल योगी बनकर, कैलाशगिरी पर जाऊँगा।
हे भ्रात! मुझे दो आज्ञा मैं, वृषभेश्वर सम बन जाऊँगा।।32।।

*(भरत अत्यंत दुखित होकर बाहुबलि को वन जाने से रोकते हैं)*



***तर्ज –धरम के लिए प्राण अपने गंवाओ.....।***

**भरत-** सुनो बाहुबलि तुम अभी वन न जाओ।
करो राज्य कुछ दिन मेरे संग आओ।।
किया मैंने अन्याय किससे छिपा है।
ये वैभव तुम्हारा तुम्हारी प्रजा है।।
सभी रो रहे बाहुबलि तुम न जाओ।
करो राज्य कुछ दिन मेरे संग आओ।।
जो होनी थी सो हो गई यह तुम्हारी।
नही उम्र दीक्षा की है यह तुम्हारी।।
चलो माँ सुनंदा को धीरज बंधाओ।
करो राज्य कुछ दिन मेरे संग आओ।।

**बाहुबलि–** नहीं भ्रात! ऐसा न दुःख तुम मनाओ।
दो आशीष मुझको मेरे बंधु आओ।।
नहीं राज्य लक्ष्मी अचल रह सकी है।
न संसार में कोई दिखता सुखी है।।
नहीं मोह का वक्त भाई बताओ।
दो आशीष मुझको मेरे बंधु आओ।।

*(बाहुबली वन की ओर चले जाते हैं मुनि दीक्षा लेकर 1 वर्ष का योग ले लेते हैं)*

माँ रोती थीं वनिताएं भी रोतीं कहतीं मत वन जाओ।
सब पुरवासी रो रहे खड़े भुजबलि तुम वापस आ जाओ।।
लेकिन वैरागी को सारे जग की ममता नहिं रोक सकी।
वे चले मोह तज मुनि बनने अन्तर की आशा बोल उठी।।33।।

बन गये विरागी बाहुबली निज आशा पूरी करने को।
इक वर्ष योग ले खड़े हुए नहिं शेष रहा कुछ करने को।।
ठंडी गर्मी वर्षा बसंत ऋतुएँ आ आकर चली गईं।
प्रभु निश्चल ध्यानारूढ़ खड़े बेलें भी चढ़ती चली गईं।।34।।

किन्नरियाँ अप्सरियाँ आकर बेलों को दूर हटा जातीं।
पर अधिक प्रेम से ही मानों फिर फिर प्रभु तन पर चढ़ जातीं।।

ऋद्धियाँ प्रभू के चरणों में स्वयमेव शरण लेने आईं।
यह देख बाहुबलि स्वामी की मुक्तीलक्ष्मी भी शरमाई।।35।।

भरतेश्वर बाहुबली दर्शन को निज परिकर सह जाते हैं।
वे अष्टद्रव्य का थाल सजा पूजन का थाल सजाते हैं।।
यह क्या आश्चर्य हुआ भरतेश्वर ने ज्यों ही जयकार किया।
प्रभु बाहुबली को तत्क्षण ही अक्षय अनंत विज्ञान हुआ।।36।।

देवों ने गंधकुटी रचना कर बाहुबली की पूजा की।
भरतेश्वर का नहिं हर्षपार रत्नों से प्रभु की पूजा की।।
प्रभु बाहुबली की दिव्य ध्वनी जग को संदेश सुनाती है।
संयम जीवन में अपनाओ सुखशांति तभी मिल पाती है।।37।।

कर्नाटक में श्रीश्रवणबेलगुल तीर्थ बना महिमाशाली।
चामुंडराय का मातृभक्ति इतिहास हुआ गौरवशाली।।
अंतिम श्रुतकेवलि भद्रबाहु ने यहीं समाधी ग्रहण करी।
गुरुभक्ती चन्द्रगुप्त मुनि की हो गई देवमय यह नगरी।।38।।

नौ सौ इक्यासी इसवी सन् की घटना यही सुनी जाती।
श्री नेमिचंद्र गुरु के शिष्यों में गोम्मट की गणना आती।।
गोम्मट ने अपनी मातृभक्ति से विंध्यगिरी पर्वत ऊपर।
निर्मापित की श्री बाहुबली की मूर्ति विश्व में हुई अमर।।39।।

गुरु नेमिचंद्र ने बाहुबली का नाम गोम्मटेश्वर रक्खा।
भक्ती विभोर हो स्तुति कर चरणों में निज मस्तक रक्खा।।
चामुंडराय की माता भी दर्शन कर तृप्त न होती थीं।
हो गया सफल नरभव मेरा नहिं इच्छा रही अधूरी थी।।40।।

युग युग से निर्मित बाहुबली की मूर्ति जगत में पूज्य हुई।
'चन्दनामती' प्रभु चरणों में जो आया इच्छा पूर्ण हुई।।
जब तक रवि शशि तारे जग में अपना प्रकाश फैलाएंगे।
प्रभु बाहुबली के गौरव की ज्योती हम नित्य जलाएंगे।।41।।

# ''सीता की अग्नि परीक्षा''

रामायण सुनकर हे बंधू! क्या ऐसा तुम्हें न लगता है।
मर्यादा पुरुषोत्तम का पद, क्या तुमको भ्रमित न करता है।।
उस राम नाम से बनी हुई, रामायण गाई जाती है।
सच पूछो उसमें सीता की ही, सहनशीलता आती है।।1।।

कलियुग की नारी तो सीधे, न्यायालय का पथ अपनाती।
अपने अपराधी पति को, कारावास के अन्दर पहुँचाती।।
नारी पर अत्याचार के व्यापक, समाचार छपने लगते।
पति के विरुद्ध चौपालों में, चर्चा बहुतेक पुरुष करते।।2।।

जितना सीता ने सहन किया, उतने ही कर्म प्रहार हुए।
वन में भी वह पति संग रही, महलों के सुख सब त्याग दिए।।
क्या यही परीक्षा उसे सती, बतलाने में पर्याप्त न थी ?
श्रीराम के द्वारा धोखे की, बातें उस प्रति अन्याय ही थीं।।3।।

सह लिया जहाँ तक सहा गया, उसने पति के अन्यायों को।
फिर आखिर उसने ठुकराया, उनकी भी मनोव्यथाओं को।।
बोली हे राम! मुझे तुमने, क्यों झूठ बोल वन भिजवाया।
मुझ गर्भवती नारी के प्रति, कर्त्तव्य तुम्हारा यह था क्या?।।4।।

सौहार्द दिखाते यदि किञ्चित्, तो ऋषि आश्रम में भिजवाते।
या किसी आर्यिका माता की, बसती में मुझको छुड़वाते।।
मेरी रक्षा भी हो जाती, कुछ सम्बोधन भी मिल जाता।
क्या पता तभी मेरा जीवन भी, साध्वी जैसा बन जाता।।5।।

तुम बोलो मौन भला क्यों हो, यदि शेर मुझे आ खा जाता।
तब तीन प्राणियों की हिंसा में, तुमको क्या आनन्द आता।।
कर्मों की प्रबल परीक्षा में, जैसे-तैसे उत्तीर्ण हुई।
अब तुम्हें तुम्हारे बच्चों को, देने हेतू अवतीर्ण हुई।।6।।

इनको जैसे भी बना पिता, माता दोनों का प्यार दिया।
निज दुख से दुखी हुई जब भी, इनमें तुम रूप निहार लिया।।

ये पुण्डरीकपुर के उपवन में, खेल-खेलकर बड़े हुए।
गुरुमुख से विद्याध्ययन किया, तुम सम्मुख देखो खड़े हुए।।7।।

अब इन्हें संभालो हे राजन्! इनके संग ऐसा मत करना।
इतने दिन माँ के संग रहे, अब अपने संग इनको रखना।।
हे मर्यादा पुरुषोत्तम! इनको, अब मर्यादा सिखलाना।
अन्याय करें नहिं अबला पर, यह संशोधन भी करवाना।।8।।

सन्तोष मुझे पतिदेव आज, ये राजपुत्र निज घर में हैं।
मैं मुक्त हुई इनकी जिम्मेदारी से ये रघुकुल में हैं।।
अब एक परीक्षा अंतिम मेरी, ले लो जो भी इच्छा हो।
अग्नी में पड़ूँ या विष खा लूँ, बोलो जो लगता अच्छा हो।।9।।

जनता को खुश करने हेतू, बस राम ने निर्णय कर डाला।
दो अग्निपरीक्षा हे सीते! यह धधक रही भीषण ज्वाला।।
नगरी के बच्चे-बच्चे ने, इस निर्णय को धिक्कारा था।
फिर भी सीता ने शान्तमना, होकर उसको स्वीकारा था।।10।।

लक्ष्मण, लव-कुश, हनुमान सभी, समझा-समझाकर हार गए।
सन्तों ने अपने तप की भी, सौगन्ध से थे विश्वास दिए।।
पर राम न माने थे किञ्चित्, वे अपनी हठ पर खड़े हुए।
अपनी सुकुमारी पत्नी के प्रति, निष्ठुर बनकर खड़े रहे।।11।।

सीता के मुख पर तेजस्वी, आभा उस समय छलकती थी।
कर नहीं तो डर कैसा उसकी, काया से क्रान्ति झलकती थी।।
मन में ईश्वर को नमन किया, पति को प्रणाम कर कूद गई।
हो गए राम मूर्च्छित तत्क्षण, सीता की यादें डूब गईं।।12।।

लोगों ने समझा सीता का, इतिहास यहीं हो गया खत्म।
लेकिन कुछ क्षण में जयजयकारों, के स्वर से गूँजा था गगन।।
देवों ने धरती की सतियों का, सदा-सदा सम्मान किया।
सीता के इस उपसर्ग में भी, आकर प्रत्यक्ष प्रमाण दिया।।13।।

अग्नि की धधकती ज्वाला को, जल के सरवर में बदल दिया।
सरवर के मध्य सिंहासन पर, सति को गौरव से बिठा दिया।।



वह जनकनंदिनी ध्यानलीन, बैठी है स्वर्णसिंहासन पर।
पुष्पों रत्नों की वर्षा हो रही, शीलशिरोमणि के ऊपर।।14।।

हे सीते! तुम तो धन्य धन्य, हर्षाश्रू सबके निकल पड़े।
साकेतपुरी के कण-कण से, अब मिलन के आंसू टपक पड़े।।
इस समाचार को पाते ही, श्रीराम भी अब दौड़े आए।
अपराध क्षमा कर दो देवी! हम तुम्हें लिवाने हैं आए।।15।।

तुम बिना महल भी सूना है, हे रानी! चलो संभालो तुम।
अब मेरे ऊपर भी अपना, पूरा अधिकार चलाओ तुम।।
हे वैदेही! अब तेरे बिन, इक पल मैं नहिं रह सकता हूँ।
इतने दिन कैसे कटे मेरे, यह कैसे मैं कह सकता हूँ ?।।6।।

मत देर करो मेरी सीता, देखो यह रथ तैयार खड़ा।
मेरे सपनों की रानी तेरे, सम्मुख तेरा राम खड़ा।।
जो दण्ड मुझे देना चाहो, स्वीकार मुझे सब करना है।
मत इंतजार अब करवाओ, सारे दुख सहज बिसरना है।।17।।

मुझको तो था विश्वास तभी, जब लंका से वापस लाया।
मुनियों के मन सम है विशुद्ध, मेरी सीता जी की काया।।
पर नगर अयोध्या की जनता, ने अन्यायी मुझको माना।
बस इसीलिए जंगल में तुमको, पड़ा मुझे था भिजवाना।।18।।

यह निश्चित ही अन्याय भरा, कर्त्तव्य राम बन कर डाला।
लेकिन मेरे मन में तब से ही, धधक रही थी विरह ज्वाला।।
तुमको बतलाकर कहो भला, कैसे तुमको तज सकता था ?
रघुकुल की इज्जत हे सीते! फिर कैसे मैं कर सकता था ?।।19।।

बीती को भूलो प्राणप्रिये! अब सुख के दिन फिर आए हैं।
तुम जैसी शीलशिरोमणि को, पाकर हम धन्य कहाए हैं।।
माँ चलो उठो लव कुश बोले, अब दुःखी पिता को शांत करो।
भाभी के चरणों में लक्ष्मण, पड़ गए नमन स्वीकार करो।।20।।

सबके भावों की भावुकता, लख भी सीता दृढ़ बनी रही।
बोली इसमें नहिं दोष किसी का, कर्मों की है गती यही।।

मैंने ही पूर्व भवों में कोई, अशुभ कर्म बाँधे होंगे।
उनका ही फल अब मिला मुझे, संचित कुछ और अभी होंगे।।21।।

हे नाथ! क्षमा करना मुझको, यह आज्ञा पल नहिं पाएगी।
अब आपकी सुकुमारी सीता, अपने मन से वन जाएगी।।
दीक्षा लेकर आर्यिका मात बन, स्त्रीलिंग नशाएगी।
निज आतमराम को पाने को, सीता महाव्रत अपनाएगी।।22।।

होकर अधीर श्रीरामचन्द्र, सीता के सम्मुख बिलख पड़े।
इतनी कठोर मत बनो प्रिये, ये पुत्र रो रहे खड़े-खड़े।।
सीता मानो अब दृढ़ता की, देवी बनकर ही आई थी।
इसलिए किसी के मोह की उस पर, नहीं पड़ी परछाईं थी।।23।।

अब कथन बंद करके उसने, निज केशलोंच प्रारंभ किया।
कुछ केश राम को दे सीता ने, द्वन्द्व जाल को बंद किया।।
बेहोश हो गए रामचन्द्र, सीता का त्याग न सह पाये।
सब परिजन पुरजन भी रोए, पर विचलित उसे न कर पाए।।24।।

वह तो चल दी उस उपवन में, जहाँ पृथ्वीमती विराजी थीं।
दशरथ की माँ सीता की दादी, सास बनी माताजी थीं।।
उनके चरणों में जा सीता, हो गई समर्पित भक्ती से।
हे माँ! मुझको दे दो दीक्षा, घर त्याग दिया अब युक्ती से।।25।।

साध्वी दीक्षा लेकर सीता, उनके ही संघ में बैठी थी।
होकर सचेत आ गए राम, देखा तो वहीं सीता भी थी।।
सब माताओं को नमस्कार कर, सीता को भी नमन किया।
हे मातः! कहकर पूरबकृत, दोषों को राम ने शमन किया।।26।।

यह जैनधर्म की रामायण में, सत्य कथानक आया है।
सीता ने पृथ्वीमति माता को, अपना गुरू बनाया है।।
यह किंवदन्ति चल गई तभी, सीता पृथ्वी में समा गई।
समझो वह भाव समर्पण था, नहिं धरती में वह समा गई।।27।।

धरती में समाने वाली तो, पापी आत्माएँ होती हैं।
सीता जैसी सतियाँ ऊरधगामी आत्माएँ होती हैं।।



उसने तो तपकर मरणसमाधी, से जीवन का अन्त किया।
फिर अच्युत स्वर्ग में जा प्रतीन्द्र, पद पाकर जीवन धन्य किया।।28।।

स्वर्गों के सुख को भोग पुनः, वह इन्द्र धरा पर आएगा।
मानुषयोनी में फिर तपकर, अविनश्वर सुख को पाएगा।।
है मोक्षमहल इक अति सुन्दर, उसका राजा बन जाएगा।
फिर सिद्धिप्रिया से कर विवाह, यहाँ कभी न वापस आएगा।।29।।

सच पूछो सीता के कारण, रामायण लिखी है कवियों ने।
सीता के प्रति आकर्षण है, भारत की सारी गलियों में।।
नारी ने अपने संग सदा, नर को भी पूज्य बनाया है।
हर कष्ट को सहने में नारी ने, कीर्तीमान बनाया है।।30।।

हैं वर्तमान में भी कितनी, सतियाँ भारत की निधियाँ हैं।
''चन्दनामती'' ये देश-धर्म के, प्रति बलिदानी कृतियाँ हैं।।
नारी है खान नरों की भी, जो वीरों को पनपाती है।
माँ-पत्नी-बहन आदि बनकर, अपना कर्त्तव्य निभाती है।।31।।

जब-जब रामायण पढ़ी सुनी, इक चिन्तन मन में आया है।
भारत की सतियों को जाने, क्यों पुरुषवर्ग ने सताया है।।
सोचो तो सृष्टिव्यवस्था में, स्त्री व पुरुष हैं सहभागी।
पुरुषों की अर्धांगिनी सदा, नारी है पति की अनुरागी।।32।।

दोनों का ही सम्मान उचित, अपमान किसी का नहिं होवे।
भावों में है अरमान यही, इस देश का गौरव नहिं खोवे।।
भारत की संस्कृति टिकी आज भी, नारी के पतिव्रत पर है।
सारे देशों में इसीलिए, भारत का गौरव ऊपर है।।33।।

# आज के मानव में कलियुग का रूप दिखाई देता है : काव्य रूपक

*तर्ज-एक थी राजुल.....*

आज के मानव में कलियुग का, रूप दिखाई देता है।
राम की धरती पर रावण का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।

कहते हैं माँ की ममता, बच्चे पर सदा बरसती है।
कोई कह नहीं सके कि वह, बच्चे की हत्या करती है।।
लेकिन आज की माँ में नागिन, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।1।।

सुना है कितना ही धन दे दो, किन्तु न प्राण कोई दे देगा।
क्योंकि प्राण के बदले मानव, दुनिया में क्या सुख देखेगा।।
लेकिन मानव बम में विष का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।2।।

देखो गौ माता बस तृण खा, मीठा दूध पिलाती है।
फिर भी कतलखाने में उन पर, छुरी चलाई जाती है।।
मानव में ही हत्यारों का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।3।।

खेत में खेती कर किसान, मेवा फल अन्न उगाता है।
कलियुग में नर अण्डा मछली, को कृषि कहकर खाता है।।
जिव्हा लोलुपता में उन्हें, सुख चैन दिखाई देता है।।आज के.।।4।।

तप संयम अध्यातम का, निर्यात जहाँ से हुआ सदा।
आज माँस निर्यात वहाँ से, करता मानव कलियुग का।।
इस भौतिक संपति में हिंसक, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।5।।

अपने शील से सीता ने जहाँ, नीर बनाया अग्नी को।
आज की नारी फिल्मों में, कर रही प्रदर्शित अंगों को।।
अब सीता में सूपनखा का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।6।।

मात पिता की विनय जहाँ पर, जन्मघूंटि से मिलती है।
आज वहाँ भी उनको अपनों, की प्रताड़ना मिलती है।।
इस कलियुग के रिश्तों में, अपमान दिखाई देता है।।आज के.।।7।।



कलियुग में भी सतयुग का दर्शन चाहो हो सकता है।
एक कहानी से देखो, युगपरिवर्तन हो सकता है।।
इन्सानी भावों में प्रभु का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।8।।

देखो इक राजा ने सुन्दर, बड़ा सरोवर बनवाया।
उसको दूध से भरने हेतू, उसने ढिंढोरा पिटवाया।।
सभी दूध डालें उसमें, आदेश सुनाई देता है।।आज के.।।9।।

राजाज्ञा पाकर जनता ने, अपने हर्ष को दरशाया।
सबके सपनों में अब मानो, क्षीर का सागर लहराया।।
लेकिन एक व्यक्ति के मन में, खोट दिखाई देता है।।आज के.।।10।।

सोचा उसने सभी दूध, डालें मैं तो जल डालूँगा।
पता किसी को नहीं लगेगा, चतुराई यदि कर लूँगा।।
रात्री में जल डाल के वह, संतुष्ट दिखाई देता है।।आज के.।।11।।

कलियुग का अभिशाप ये देखो, सबके मन में भी आया।
पानी डाल के दूध सरोवर, का देखना सबने चाहा।।
इसीलिए पूरा सरवर, जल भरा दिखाई देता है।।आज के.।।12।।

चला देखने राजा खुश हो, दूध भरा सरवर अपना।
अपनी प्यारी प्रजा को लेकर, सोचा पूर्ण हुआ सपना।।
मात्र कल्पना करके वह, संतुष्ट दिखाई देता है।।आज के.।।13।।

राजा पहुँचा निकट सरोवर, हक्का बक्का हुआ तभी।
लाल आँख करके मंत्री से, बोला आज्ञा क्यों न पली।।
बेचारे मंत्री में डर का, भूत दिखाई देता है।।आज के.।।14।।

शीश झुका मंत्री बोला, राजन्! अब कलियुग आ ही गया।
कर न सकेंगे आप व मैं कुछ, मानो सतयुग चला गया।।
चिन्तायुत राजा-मंत्री में, क्रोध दिखाई देता है।।आज के.।।15।।

चिन्तन कर राजा ने प्रजा पर, प्रेमपूर्ण दृष्टि डाली।
इस कलियुग को एक बार, सतयुग में बदल देने वाली।।
मानो अब जनता में पुनः, विश्वास दिखाई देता है।।आज के.।।16।।

बोल पड़े सब एक साथ, राजन्! इक दिन का अवसर दो।
सरवर क्या हम दूध का सागर, भर देंगे चिन्ता न करो।।
फिर सबके मुख पर अद्भुत, संतोष दिखाई देता है।।आज के.।।17।।

अब देखो उस राज्य में दूध का, भरा समन्दर लहराया।
बड़े-बड़े कलशों में दूध ले, सारा गाँव उमड़ आया।।
राजा देख सरोवर को, संतुष्ट दिखाई देता है।।आज के.।।18।।

ढोल ढमाके बजे बहुत, राजा ने कहा यह सतयुग है।
अपनी करनी से कर सकते, हम कलियुग में सतयुग हैं।।
इसी धरा पर आज भी राम का, राज दिखाई देता है।।आज के.।।19।।

दुनिया वालों देखो! मानव, स्वयं ही रूप बदलता है।
खुद को चतुर मान करके, कलियुग को दोषी कहता है।।
इसमें तो ईमान का केवल, दोष दिखाई देता है।।आज के.।।20।।

***बंधुओं! अब आप कलियुग में भी कहीं-कहीं दिखने वाले सतयुग की बात सुनेंगे–***

आज के कलियुग में भी सतयुग रूप दिखाई देता है।
जिनवर की प्रतिमा में प्रभु का रूप दिखाई देता है।।टेक.।।

भारत भूमी साधु-साध्वियों, के विचरण से धन्य सदा।
जिनवर के लघुनंदन मुनिवर शांतिसिंधु का जन्म हुआ।।
आज के सन्तों में भी वैसा, रूप दिखाई देता है।। आज के.।।21।।

संत शृंखला में इक गणिनी, ज्ञानमती माताजी हैं।
जिनने इस कलियुग में भी, नारी शक्ती बतला दी है।।
तभी आज उनमें ब्राह्मी का, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।22।।

दिल्ली में चौबिस कल्पद्रुम, मण्डल एक बार रचवाया।
भक्ती की गंगा में भक्तों, को अवगाहन करवाया।।
इन्हीं अनुष्ठानों से सुख, सन्तोष दिखाई देता है।।आज के.।।23।।

अन्तर्राष्ट्री ऋषभदेव, निर्वाण महोत्सव करवाया।
प्रधानमंत्री के द्वारा, उसका उद्घाटन करवाया।।
इस उत्सव में व्यसनमुक्ति, उद्घोष दिखाई देता है।।आज के.।।24।।



तीर्थ हस्तिनापुरी अयोध्या, कुण्डलपुर उद्धार किया।
तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का जग भर में प्रचार किया।।
इसीलिए तीर्थों पर नूतन, रूप दिखाई देता है।।आज के.।।25।।

टी.वी. के माध्यम से सब, घर-घर में सुनते गुरुवाणी।
निज जीवन निर्माण हेतु, जन-जन के लिए जो कल्याणी।।
गुरु भक्ती का अब जनता में, जोश दिखाई देता है।।आज के.।।26।।

ज्ञानमती माताजी ने फिर, शांति वर्ष उद्घोष किया।
राष्ट्रपति प्रतिभा जी ने, उस ज्योति को उद्योत किया।।
तभी "चंदनामती" धरम का, शोर दिखाई देता है।।आज के.।।27।।

# मोक्षसप्तमी पर नृत्य नाटिका

*तर्ज –आए महावीर भगवान.....*

**प्रश्न** –कैसा उत्सव आया आज, क्यों धूम मची मंदिर में।
बतला दो मेरे भ्रात, क्यों धूम मची मन्दिर में।।

**उत्तर** –सुन ले मेरी बहना आज, क्यों धूम मची मंदिर में।
है प्रभु पार्श्वनाथ निर्वाण, का उत्सव इस मंदिर में।।

**प्रश्न** –निर्वाण कहाँ से पाया, कहाँ प्रभु ने ध्यान लगाया।
क्या बात है उनमें खास, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

**उत्तर** –सम्मेदशिखर पर जा प्रभु, पारस ने ध्यान लगाया।
वहीं से प्राप्त किया शिवधाम, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।

**प्रश्न** –भैय्या मैं पूछूँ तुमसे, निर्वाण किसे कहते हैं?
इससे होता है क्या लाभ, क्यों धूम मची मंदिर में।।।।सुन.।।

**उत्तर** –आठों कर्मों से आत्मा, जब छूट बने परमात्मा।
कहते उसको ही निर्वाण, वही उत्सव है मंदिर मे।।सुन.।।
पद सिद्ध का तब मिल जाता, त्रैलोक्यपती बन जाता।
होता शाश्वत सुख का लाभ, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।

**प्रश्न** –इक बात और बतलाओ, लाडू रहस्य समझाओ।
क्यों इसे चढ़ाते आज, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

**उत्तर** –लाडू सर्वोत्तम माना, पकवानों में पकवाना।
यह है सब खुशियों का राज, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।
प्रभु के निर्वाण दिवस पर, लाडू ही चढ़ाते हैं सब।
तुम भी लाडू चढ़ा लो आज, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।

**प्रश्न** –इक प्रश्न उठा है मन में, भैय्या पूछूँ तुमसे मैं।
क्यों है पार्श्व अधिक विख्यात, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

**उत्तर** –उपसर्ग सहे पारस ने, इसलिए जान लिया सबने।
क्षमा गुण से हुए विख्यात, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।



**प्रश्न** –किस नगरी में जन्मे वे, क्या नाम पिता माता के।
कहाँ दीक्षा ली थी जाय, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

**उत्तर** –काशी में जन्म लिया था, पितु अश्वसेन माँ वामा।
वन अश्व में तप किया जाय, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।

**प्रश्न** –इक प्रश्न सहज उठता है, प्रतिमा पर फण रहता है।
उस फण का क्या है राज, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

**उत्तर** –कमठासुर ने पारस पर, उपसर्ग किया जाकर जब।
आये नागयुगल बन देव, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।
इक ने फण पर बैठाया, इक ने फण छत्र लगाया।
वही बनी पार्श्व पहचान, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।

**प्रश्न** –सम्मेदशिखर से कितने, तीर्थंकर मोक्ष गए हैं।
क्यों तीर्थ अधिक वह ख्यात, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

**उत्तर** –प्रभु वासुपूज्य आदीश्वर, नेमी व वीर को तजकर।
जिनवर बीस गए निर्वाण, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।
वहाँ सबसे ऊँचा मंदिर, हैं पार्श्व चरण जहाँ सुन्दर।
उससे तीर्थ हुआ विख्यात, वही उत्सव है मंदिर में।।सुन.।।

**दोनों मिलकर–**

तिथि मोक्षसप्तमी आई, पूजन इसलिए रचाई।
समझो तुम सब भी यह बात, क्यों धूम मची मंदिर में।।कैसा.।।

निर्वाण महोत्सव करके, सम्मेदशिखर को नम के।
चढ़ाएं लाडू प्रभु के पास, यही उत्सव है मंदिर में।।कैसा.।।

हम यही भावना भाएं, पारस प्रभु के गुण गाएं।
उन सम क्षमा प्रकट हो आज, यही उत्सव है मंदिर में।।कैसा.।।

# चातुर्मास (वर्षायोग) का महत्व : नृत्य नाटिका

*तर्ज –मैंने तेरे ही भरोसे.....*

**प्रश्न** –सुनो सुनो रे सखी री मेरी बात, चौमासा किसे कहते हैं?
बतला दो मुझे आज यह बात, चौमासा किसे कहते हैं?

**उत्तर** –मैंने सुनी है सखी री ऐसी बात, चौमासा साधु करते हैं।
वर्षाऋतु में होती है बरसात, हिंसा से साधु बचते हैं।।

**प्रश्न** –कौन-कौन से मास हैं इसके, मुझको सखी बताओ।
बोलो क्या-क्या लाभ हैं इसके, यही मुझे समझाओ।।
ताकि पाऊँ मैं भी उसका लाभ, चौमासा किसे कहते हैं।।सुनो.।।

**उत्तर** –मास अषाढ़ जुलाई से, दीवाली तक चौमासा है।
सोलहकारण दशलक्षण, पर्वों का इससे नाता है।।
श्रावक लेते हैं गुरुओं से धर्मलाभ, चौमासा सार्थक करते हैं।।मैंने.।।

**प्रश्न** –साधु और साध्वी की क्या, पहचान सहज में बतलाओ।
संघ चतुर्विध किसे कहा, जाता है सबको समझाओ।।
किनके दर्शन से मिलता है पुण्यलाभ, चौमासा किसे कहते हैं।।सुनो.।।

**उत्तर** –मोरपंख की पिच्छीयुत, जो मुनी आर्यिका कहलाते।
क्षुल्लक और क्षुल्लिका भी, साधू की श्रेणी में आते।।
ये चारों ही करते हैं चातुर्मास, इनके ही संघ में रहते हैं।।मैंने.।।

**प्रश्न** –इन गुरुओं के दर्शन की, कैसी विधि आगम में आई।
क्या कह इनको नमन करें, यह बात जानने में आई।।
जिससे होवे मेरे मन का समाधान, चौमासा किसे कहते हैं।।सुनो.।।

**उत्तर** –तीन पुंज चावल के चढ़ाकर, नमन करो अति श्रद्धा से।
मुनियों को बोलो नमोस्तु, वंदामि कहो माताजी से।।
क्षुल्लक क्षुल्लिका को करो इच्छामि, ये सभी साधक होते हैं।।मैंने.।।

**प्रश्न** –ज्ञान हुआ कुछ बहन मुझे अब, यही विधी अपनाऊँगी।
अपने गुरुओं के चरणों में, जाकर शीश नमाऊँगी।।
नवधा भक्ती से मैं दूँगी आहार, जिनागम यही कहते हैं।।सुनो.।।



**उत्तर** –यही सार मानव जीवन का, इसे समझ सब समझ गई।
बाकी सब निस्सार जगत में, गुरु संगत जब प्राप्त हुई।।
करो इसीलिए भक्ति दिन रात, चौमासा साधु करते हैं।।मैंने.।।

**प्रश्न** –कई दिनों से सुना था मैंने, ज्ञानमती माँ आएंगी।
अपने गणिनी संघ सहित, चौमासा यहाँ रचाएंगी।।
इसीलिए मैंने पूछी कुछ बात, चौमासा किसे कहते हैं।।सुनो.।।

**उत्तर** –गणिनी ज्ञानमती माता में, ज्ञान का है भण्डार भरा।
इनसे लाभ उठाने में, नहिं करना है अब देर जगरा।।
बनेगा यह ऐतिहासिक चातुर्मास, सभी से यही सुनते हैं।।मैंने.।।

**दोनों मिलकर–**

सभी बहन भाई मिल करके, जैनधर्म की जय बोलो।
माताजी के चातुर्मास में सब मिल ज्ञानामृत ले लो।।
करें प्रतिदिन मंगलाचार, चौमासा इसे कहते हैं।।सुनो.।।

हर समाज के सब नर नारी, माता तुमसे विनय करें।
पूर्णलाभ दो मात हमें, 'चन्दनामती' तुम चरण नमें।।
सेवा करेंगे तुम्हारी दिन रात, चौमासा सफल करने को।।सुनो.।।

ऋषभ वीर के महामहोत्सव, का जो बिगुल बजाया है।
उसका श्रेय सभी को मिलने, का यह अवसर आया है।।
होंगे स्वप्न सभी साकार, ऐसी हम आशा करते हैं।
बोलो ज्ञानमती माँ की जय जयजयकार, चरणों में श्रीफल धरते हैं।।सुनो.।।

# प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर काव्य कथानक

*(अष्टान्हिका, गुरुपूर्णिमा या दशलक्षण आदि पर्व के अवसर पर इन काव्यों के माध्यम से आचार्यश्री के जीवन का मंचन भी कर सकते हैं)*

## *(1)*

## *जन्म, बाल विवाह एवं ब्रह्मचारी जीवन*

भव्यात्माओं! संसार के रंगमंच पर अनन्त प्राणी अपना-अपना जीवन व्यतीत करके चले जाते हैं और पुनः-पुनः चारों गति में परिभ्रमण करते हुए चौरासी लाख योनियों में दुःख भोगते रहते हैं।

कभी कोई विरले पुण्यात्मा जीव होते हैं जो मानव जीवन में जैनेश्वरी दीक्षा धारण कर अपने जन्म को सार्थक कर लेते हैं। ऐसे पुण्यात्मा जीवों में एक थे– बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी मुनि महाराज। जिन्होंने दिगम्बर जैन मुनियों की निर्दोष चर्या का पालन करके मुनि परम्परा का पुनरुद्धार किया।

प्रस्तुत है उन्हीं गुरूणांगुरू का संक्षिप्त जीवनवृत्त–

**सुनो हम कथा सुनाते हैं-2,**
**प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गाथा गाते हैं।। सुनो...।।टेक.।।**

**दक्षिण भारत के येळगुळ, में भीमगौंड पाटिल थे।**
**वे सत्यवती पत्नी के, संग सुख दुख में शामिल थे।।**
**उन्हीं का पुण्य बताते हैं,**
**इस पुत्र को दे जन्म बड़ा वे हर्ष मनाते हैं।।सुनो..।।1।।**

**सन् अट्ठारह सौ बहत्तर, आषाढ़ कृष्ण षष्ठी थी।**
**तेजस्वी बालक को पा, माँ सत्यवती हर्षी थीं।**
**दान तब पिता लुटाते हैं,**
**नाम सातगौंडा रख पुत्र का, उत्सव मनाते हैं।।सुनो..।।2।।**

**शैशव से बाल्य अवस्था, पाई बालक ने जैसे।**
**इक कन्या के संग उसका, रच दिया ब्याह बस सबने।।**
**दुखद इक बात बताते हैं,**
**पत्नी की मृत्यू छह मास के ही बाद दिखाते हैं।।सुनो..।।3।।**



**इस बाल विवाह से उनका, संबंध न कोई रहा था।**
**ब्रह्मचारी रहकर उनने, दूजा न विवाह किया था।।**
**सातगौंडा बतलाते हैं,**
**जिनधर्म की रक्षा के लिए वे आगे आते हैं।।सुनो..।।4।।**

**पितु मात के मोह के कारण, घर त्याग नहीं कर पाए।**
**लेकिन स्वाध्यायादिक कर, नित मन वैराग्य बढ़ाए।।**
**धर्म का पथ अपनाते हैं,**
**वे ''चंदनामति'' माता-पिता का मन न दुखाते हैं।।सुनो..।।5।।**

## *(2)*

## *गृहस्थ जीवन एवं परोपकार भावना*

बंधुओं! आपने बीसवीं सदी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के विषय में प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की है कि दक्षिण भारत में उनका जन्म हुआ था। पुनः 9 वर्ष की अल्प आयु में ही उनका विवाह एक 6 वर्ष की कन्या से कर दिया गया और वह भी 6 माह के बाद मृत्यु का ग्रास बन गई अर्थात् उस युग में बालविवाह की परम्परा भारत की धरा पर पनप रही थी, जिस पर आगे चलकर सरकारी स्तर पर विरोध कानून भी लागू हुआ है।

सातगौंडा नाम के बालक ने उसके बाद समझदार होने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया अतः उनका पूरा जीवन बालब्रह्मचारी के रूप में ही व्यतीत हुआ।

उन्होंने 40 वर्ष तक घर में ही माता-पिता के पास रहकर अपना जीवन किस प्रकार कर्तव्यपालन में व्यतीत किया, यह आप सुनें इस काव्य में–

*तर्ज –आओ बच्चों.....*

**आवो बन्धू! तुम्हें बताएँ, परिचय प्रथमाचार्य का।**
**श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।**
**वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।टेक.।।**

**देव-शास्त्र-गुरु भक्त युवक थे, श्री सातगौंडा पाटिल।**
**मात-पिता की सेवा करके, जीत लिया था उनका दिल।।**
**कहते हैं उनके जीवन में, धैर्य व शौर्य अपार था।**
**श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।**
**वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।1।।**

**गाँव के श्रावक दिन भर खेत में, खेती करने जाते थे।**
**लेकिन सातगौंड पाटिल, दो घंटे खेत पे जाते थे।।**
**फिर भी उनको फसल से अपनी, मिलता खूब अनाज था।**
**श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।**
**वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।2।।**

**खेत में पक्षी दाना चुगते, उनको नहीं भगाते थे।**
**पानी भी उनको देकर, पक्षियों की प्यास बुझाते थे।।**
**इसी दया के कारण उनका, भरा सदा भण्डार था।**
**श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।**
**वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।3।।**

**उनका पुण्यपुराण 'चन्दनामती' जगत में गूँज रहा।**
**प्रौढ़-युवावस्था में उनको, ज्ञान लाभ भी खूब रहा।।**
**उनके मन में तो दीक्षा, लेने का पुण्य विचार था।**
**श्री चारित्रचक्रवर्ती, शांतीसागर आचार्य का।।**
**वन्दे गुरुवरं, वन्दे मुनिवरं-वंदे गुरुवरं, वंदे मुनिवरम्।।4।।**

## *(3)*
## *क्षुल्लक एवं मुनि दीक्षा*

प्यारे भाईयों एवं बहनों! परोपकार की उत्कट भावना से ओतप्रोत सातगौंडा पाटिल का पुण्य प्रभाव आपने सुना और जाना है कि वे पशु-पक्षियों तक के प्रति भी कितनी करुणा प्रदर्शित करते थे।

आगे जाकर सन् 1912 तक उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया, उनके दोनों बड़े भाइयों का विवाह हो गया। फिर वे स्वतंत्र होकर मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर हो गये अर्थात् अब उन्होंने जैनेश्वरी दीक्षा के लिए कदम बढ़ाए, उसी का प्रतिफल रहा कि हम सबने पाया शांतिसागर नामक एक जिनशासन सूर्य–

*तर्ज –अरे रे मेरी.....*

**सुनो इक संत कहानी, कहूँ निर्ग्रन्थ कहानी, श्री शांतिसागर मुनिराज की।।**
**शांतिसागर शांतिसागर बोलो बारम्बार, बोलो सभी मिलके उनकी जयजयकार।**
**मुनिचर्या इनसे ही हुई है साकार, उन गुरूणां गुरु को है नमस्कार।।सुनो.।।टेक.।।**



**ईसवी सन् उन्निस सौ बारह तक में, उनके माता-पिता गये स्वर्गलोक में।**
**दो दो बड़े भाइयों का ब्याह हो गया, सातगौंडा को अब घर से मोह न रहा।।सुनो.।।1।।**
**सन उन्निस सौ चौदह ज्येष्ठ शुक्ला तेरस थी, उत्तूर में आये देवेन्द्रकीर्ति मुनि श्री।**
**उनसे विनयपूर्वक क्षुल्लक दीक्षा ले लिया, अपनी मनोकामना को पूर्ण कर लिया।।सुनो.।।2।।**
**फिर तो कई नगरों का उद्धार हो गया, क्षुल्लक सातगौंडा का प्रचार हो गया।**
**सन् उन्निस सौ बीस में यरनाल आ गये, वहाँ अपने गुरु जी को फिर से पा गये।।सुनो.।।3।।**
**गुरुवर से दीक्षा का निवेदन किया था, अपने त्याग भाव का प्रदर्शन किया था।**
**फाल्गुन शुक्ला चौदस मुनिदीक्षा हो गई, शांतिसागर नाम से प्रसिद्धी हो गई।।सुनो.।।4।।**
**पुनः मूलाचार आदि ग्रंथ पढ़ लिया, अपने गुरु को भी उसी रूप कर लिया।**
**यह थी मुनि शांतिसागर की विशेषता, ''चन्दनामती'' ये रत्नत्रय का तेज था।।सुनो.।।5।।**

## *(4)*
## *सर्प उपसर्ग, दो शिष्यों का समागम एवं आचार्यपद*

जय बोलो प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज की जय।

मुनियों की सच्ची चर्या का पालन किया था मुनि श्री शांतिसागर जी ने, उनकी साक्षात् चर्या को अपनी आँखों से देखने वाले लोग आज भी देश में विद्यमान हैं। हम सभी चतुर्थकाल के मुनियों की बात तो सुनते और पढ़ते हैं कि अग्नि उपसर्ग, पशु आदि के उपसर्गों को मुनिगण सहन करते थे किन्तु पंचमकाल के इस युग में भी सर्प, मनुष्य और चीटियों का उपसर्ग सहने वाले आचार्य शांतिसागर महाराज सचमुच ही जिनकल्पी मुनियों की प्रतिकृति थे।

*तर्ज –तीरथ करने चली सती.....*

**दीक्षा लेकर बने शांतिसागर निजकर्म जलाने को।**
**कैसे होते हैं मुनिवर, यह बतला दिया जमाने को।।दीक्षा..।।टेक.।।**

**एक बार कोन्नूर गुफा में, शांतिसिंधु ध्यानस्थ हुए।**
**नागराज आकर मुनिवर के, पावन तन पर भ्रमण करे।।**
**मानो वे पाषाण बन गये, निज आतम निधि पाने को**
**निज आतम निधि पाने को.....।।दीक्षा...।।1।।**
**दो ब्रह्मचारी एक बार, मुनिवर के सम्मुख पहुँच गये।**
**बोले कलियुग में नहिं ऋद्धि, अतः आप मुनिवर नहिं हैं।।**

**गुरु ने आम्रवृक्ष का उदाहरण, दिया उन्हें समझाने को,**
**दिया उन्हें समझाने को।।दीक्षा...।।2।।**
**वे ही आगे बने वीरसागर व चन्द्रसागर मुनिवर।**
**शांतिसिंधु जैसा गुरु पाकर, किया उन्होंने जन्म सफल।।**
**बने तभी आचार्य प्रथम वे, चउविध संघ चलाने को,**
**चउविध संघ चलाने को।।दीक्षा...।।3।।**
**संघ सहित करके विहार, गुरुवर कुंथलगिरि पहुँच गये।**
**वहाँ देशभूषण कुलभूषण, मुनि चरणों के दर्श किये।।**
**उनकी प्रतिमा बनवाई, उनका इतिहास बताने को,**
**उनका इतिहास बताने को।।दीक्षा...।।4।।**
**जिनशासन का भाग्य खिल गया, ऐसे तपसी गुरु पाकर।**
**सहे बहुत उपसर्ग परीषह, गुरुवर ने मुनि पद पाकर।।**
**बने ''चन्दनामती'' और भी, मुनि मुक्तीपद पाने को,**
**मुनी मुक्तिपद पाने को।।दीक्षा...।।5।।**

### *(5)*

## *सेठ पूनमचंद घासीलाल द्वारा अणुव्रत ग्रहण एवं संघ भक्त बनकर मुनिसंघ को सम्मेदशिखर यात्रा कराना*

भव्यात्माओं! जिनशासन के इस सूर्य का प्रकाश पूरी धरती पर फैला और कई भव्यात्माओं ने मुनिदीक्षा धारणकर आचार्य शांतिसागर महाराज को अपना गुरु बनाया।

आचार्यश्री के सान्निध्य को पाकर कई श्रावकों ने अणुव्रत भी धारण किये, उनमें से बम्बई के एक सेठ पूनमचंद घासीलाल का नाम बहुत प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है।

सन् 1927 में आचार्यश्री ने सप्तऋषि मुनियों के साथ संघ सहित दक्षिण से उत्तर भारत की ओर विहार किया था उसका संक्षिप्त कथानक इस काव्य कथा के माध्यम से प्रस्तुत है–

*तर्ज–चलो सम्मेदशिखर चालो.....*

**सुनो इक पुण्यकथा सुन लो, पंचअणुव्रत की कथा सुन लो,**
**अणुव्रत का अतिशय लख तुम अणुव्रत धारण कर लो।।सुनो...।।टेक.।।**



**इक श्रावक ने गुरु से पंचअणुव्रत ग्रहण किया।**
**सत्य अहिंसा अरु अचौर्य, ब्रह्मचर्य का नियम लिया।।**
**परिग्रह का प्रमाण सुन लो,**
**पाँच पाप स्थूल त्याग का, चमत्कार सुन लो।।सुनो..।।1।।**
**परिग्रह सीमा बढ़ी तो श्रावक, मुनिसंघ में आए।**
**वे पूनमचंद घासीलाल जी, श्रेष्ठी कहलाए।।**
**गुरुभक्ती की कथा सुन लो,**
**श्री सम्मेदशिखर यात्रा का, भाव बना सुन लो।।सुनो..।।2।।**
**श्री आचार्य शांतिसागर का, संघ चला आगे।**
**संघभक्त वे श्रावक भी चले, यात्रा करवाने।।**
**यही इतिहास सभी सुन लो,**
**उत्तर भारत में मुनिसंघ विहार कथा सुन लो।।सुनो..।।3।।**
**यह सम्मेदशिखर की यात्रा, बनी चमत्कारी।**
**प्रथम पंचकल्याण महोत्सव, हुआ वहाँ भारी।।**
**गुरू उपकार कथा सुन लो,**
**परतंत्र के युग में स्वतंत्र मुनि संघ कथा सुन लो।।सुनो..।।4।।**
**राजाखेड़ा में प्राणांतक, हमला हुआ संघ पर।**
**फिर भी अभयदान दे सबको, क्षमा धरी उन पर।।**
**गुरू की महिमा तुम सुन लो,**
**संकट अरु उपसर्ग सहन की, शक्ति प्रगट कर लो।।सुनो..।।5।।**
**संघपती जौहरि श्री मोतीलाल ने दीक्षा ली।**
**जिनमंदिर बनवा गेंदनमल, ने भी दीक्षा ली।।**
**यही संस्कार कथा सुन लो,**
**ऐसे गुरु के चरण ''चन्दनामती'' सदा नम लो।।सुनो..।।6।।**

### *(6)*

## *बाहुबली प्रतिमा निर्माण एवं षट्खण्डागम को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण करने की प्रेरणा*

कहते हैं कि ''गुरु की महिमा वरणी न जाय, गुरु नाम जपो मन वचन काय'' अर्थात् एक गुरु के निमित्त से न जाने कितने प्राणियों का हृदय परिवर्तन

हो जाता है और वे हैवान से इंसान ही क्या भगवान् तक भी बन जाते हैं।

इसी प्रकार आचार्य श्री शांतिसागर महाराज ने जहाँ अनेक गृहस्थ मनुष्यों को सदाचारी बनाया, अनेक श्रावक-श्राविकाओं को व्रती, क्षुल्लक, मुनि, आर्यिका बनाया, वहीं उन्होंने कुम्भोज में भगवान बाहुबली की प्रतिमा निर्माण हेतु प्रेरणा दी, षट्खण्डागम ग्रंथ को ताम्रपट्ट पर उत्कीर्ण कराकर उसे युग-युग के लिए स्थायित्व प्रदान किया। इन्हीं सब बातों का वर्णन है इस काव्य कथानक में–

*तर्ज–एक था बुल और एक थी बुलबुल.....*

**प्रथमाचार्य शांतिसागर की, गुणगाथा सब मिल गाओ।**
**हे भव्यात्मन्! उनकी गौरव-गाथा सबको बतलाओ।।प्रथमाचार्य.....।।टेक.।।**

**श्री कुम्भोज में बाहुबली, प्रतिमा निर्माण प्रेरणा दी।**
**श्री समन्तभद्र मुनिवर को, तीर्थ विकास प्रेरणा दी।।**
**कहा उन्होंने कल्पवृक्ष सम प्रतिमा तीर्थ पे पधराओ।।प्रथमाचार्य....।।1।।**

**सन् उन्निस सौ चव्वालिस में, गुरुवर को यह ज्ञात हुआ।**
**ताड़पत्र पर लिखित धवल, ग्रंथों का बहुतहि घात हुआ।।**
**बोले श्रुत की रक्षा हेतू विद्वानों को बुलवाओ।।प्रथमाचार्य....।।2।।**

**संघपती ने खोज कराकर, उन ग्रंथों को मंगवाया।**
**ताम्रपट्ट पर उत्कीरण कर, उन्हें सुरक्षित करवाया।।**
**गुरु ने कहा अब हिन्दी में अनुवाद सभी का करवाओ।।प्रथमाचार्य....।।3।।**
**श्रुतरक्षा के प्रति गुरु का, उपकार सदा स्मरण करो।**
**फल्टण अरु बम्बई में विराजित, उन ग्रंथों को नमन करो।।**
**अपने मंदिर में भी हिन्दी सहित ग्रंथ को पधराओ।।प्रथमाचार्य....।।4।।**
**हीरक जन्म महोत्सव गुरु का, फल्टन नगरी में आया।**
**हाथी पर धवला ग्रंथों का, महाजुलूस निकलवाया।।**
**आज भी तुम ''चन्दनामती'' गुरु उपकारों को दरशाओ।।प्रथमाचार्य....।।5।।**

## *(7)*
## *आचार्य शांतिसागर जी का अंतिम प्रवचन*

महानुभावों! आचार्यश्री शांतिसागर महाराज ने क्षुल्लक और ऐलक अवस्था में 6 वर्ष बिताए और मुनि अवस्था में 35 वर्ष 6 माह तक कठिन तपस्या की। अर्थात् 41 वर्ष 6 माह का उनका जीवन पिच्छी-कमण्डलु सहित व्यतीत हुआ



तथा लगभग इतना ही समय उनका घर में भी वैराग्य भाव के साथ बीता था। मतलब यह है कि लगभग 82 वर्ष की आयु तक आचार्यश्री मनुष्य पर्याय में रहे और अंतिम समाधि से 10 दिन पूर्व 26वें उपवास में उन्होंने अपना अंतिम संदेश सम्पूर्ण जैन समाज के लिए प्रस्तुत किया था, जो टेपरेकार्डर में रेकार्ड हुआ और आज भी कैसेट-सी.डी. आदि के माध्यम से सुना जाता है–

*तर्ज–माई रे माई.....*

**प्रथमाचार्य शांतिसागर का, अन्तिम प्रवचन सुन लो।**
**हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।**
**बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।टेक.।।**

**जिनवर के लघु नन्दन मुनिवर, मुनिव्रत पालन करते।**
**उग्र-उग्र तप करने हेतू, किये अनेकों व्रत थे।।**
**दस हजार उपवास की संख्या, सुनकर चिंतन कर लो।**
**हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।**
**बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।1।।**

**बारह वर्षीय सल्लेखना, धारण की थी गुरुवर ने।**
**अन्त समाधि से दस दिन पहले, प्रवचन किया था उनने।।**
**वही अमर संदेश था अंतिम, ध्यान से उसको सुन लो।**
**हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।**
**बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।2।।**

**जीव व पुद्गल भिन्न भिन्न हैं, सार यही प्रवचन का।**
**पुद्गल में न रमो तुम जानो, ज्ञान है गुण चेतन का।।**
**कर्म निर्जरा करने हेतू, आतम चिन्तन कर लो।**
**हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।**
**बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।3।।**

**बिन संयम सम्यक्त्व के जीवन, में संभव न समाधी।**
**संयम धारण करो-डरो मत, मिटेगी तब भव व्याधी।।**
**कहा धर्म का मूल दया, 'चन्दनामती' सब सुन लो।**
**हो जाएगा जन्म सफल, गुरुवाणी मन में धर लो।।**
**बोलो गुरुवाणी की जय, बोलो जिनवाणी की जय।।4।।**

## *(8)*

## *आचार्य श्री की समाधि एवं ज्ञानमती माताजी को गुरुदेव का दर्शन लाभ*

बंधुवर! यह संक्षिप्त जीवन परिचय और आचार्यश्री का कृतित्व कुछ काव्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

सन् 1955 में चारित्रचक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागर जी महाराज ने कुंथलगिरि सिद्धक्षेत्र पर यमसल्लेखना ली थी। आज उनकी औदारिक काया संसार में हमारे समक्ष नहीं है किन्तु उनकी अमर यशःकाया सदैव जीवन्त रहेगी अतः उनके उपदेशों को अमल में लाकर सदैव गुरुभक्ति करते हुए अपने जीवन को सफल बनाने हेतु गुरुवर की अंतिम समाधि का चित्रण इस काव्य कथानक के माध्यम से श्रवण कीजिए–

*तर्ज –धीरे धीरे बोल.....*

**शांतिसिन्धु सूरिवर की वंदना करूँ,**
**वंदना करूँ-गुरुवन्दना करूँ।**
**वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।शांतिसिंधु...।।टेक.।।**

**सन् उन्निस सौ पचपन में कुंथलगिरि,**
**पर्वत पर अन्तिम समाधि घोषित करी।**
**जन सागर उमड़ा कुंथलगिरि तीर्थ पर,**
**लाखों जनता धन्य हुई गुरु दर्श कर।।**
**वन्दन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।**
**शांतिसिंधु...।।1।।**

**ज्ञानमती माताजी थीं तब क्षुल्लिका,**
**गुरु समाधि दर्शन हेतू पहुँची वहाँ।**
**संग में एक विशालमती थीं क्षुल्लिका,**
**और न जाने कितने श्रावक श्राविका।।**
**वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।**
**शांतिसिंधु...।।2।।**

**छत्तिस दिन की यम सल्लेखना पूर्ण की,**
**भादों शुक्ला दुतिया की तिथि आ गई।**



**कहा ''ॐ सिद्धाय नमः'' बस चल दिये,**
**नश्वर तन को छोड़ स्वर्ग में बस गये।।**
**वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।**
**शांतिसिंधु...।।3।।**

**धर्मसूर्य हो गया अस्त मानो यहाँ,**
**किन्तु रश्मियों को अपनी बिखरा गया।**
**इसीलिए मुनि परम्परा जीवन्त है,**
**तभी ''चन्दनामती'' धरा पर सन्त हैं।।**
**वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।**
**शांतिसिंधु...।।4।।**

**शांतिसागराचार्य वर्ष यह चल रहा,**
**गुरुवर का उपकार स्मरण कर रहा।**
**ज्ञानमती माताजी की सम्प्रेरणा,**
**है यह सबके मन में जागे चेतना।।**
**वंदन करूँ, सुमिरन करूँ, वे प्रथमाचार्य महान थे, इस युग के लिए वरदान थे।।**
**शांतिसिंधु...।।5।।**

# माता मोहिनी और पुत्री मैना का संवाद

*तर्ज-बार-बार तोहे क्या समझाऊँ.....*

**माता मोहिनी** – बार-बार समझाऊँ बेटी, मान ले मेरी बात।
तेरे जैसी सुकुमारी की, दीक्षा का युग है न आज।।

**मैना** – भोली भाली माता मेरी, सुन तो मेरी बात।
हम और तुम मिलकर ही, युग को बदल सकते आज।।

**माता मोहिनी** – तूने तो बेटी अब तक, संसार न कुछ देखा है।
फिर भी मान लिया क्यों इसको, यह सब कुछ धोखा है।।
खाने और खेलने के दिन, क्यों करती बर्बाद।
तेरे जैसी सुकुमारी की, दीक्षा का युग है न आज।।1।।

**मैना** – प्यारी माँ! इस नश्वर जग में, कुछ भी नया नहीं है।
जो कुछ भोगा भव भव में, बस दिखती कथा वही है।।
ग्रन्थों से पाया मैंने, हे माता ज्ञान का स्वाद।
हम और तुम मिलकर ही, युग को बदल सकते आज।।1।।

**माता मोहिनी** – ये सुन्दर गहने मैना, मैं तुझको पहनाऊँगी।
अपनी गुड़िया सी पुत्री की, शादी रचवाऊँगी।।
सजधज कर जब बनेगी दुलहन, शरमाएगा चाँद।
तेरे जैसी सुकुमारी की, दीक्षा का युग है न आज।।2।।

**मैना** – तेरी प्यारी बातों में माँ, मैंना नहिं आयेगी।
सोने चाँदी के गहनों को, वह न पहन पाएगी।।
रत्नत्रय का अलंकार बस, मुझे पहनना मात।
हम और तुम मिलकर ही, युग को बदल सकते आज।।2।।

**माता मोहिनी** – मेरे बस की बात नहीं, तेरे भाई-बहन समझाना।
सब रोकर बोले हैं जीजी, को लेकर ही आना।।
तू ही मेरे घर की रौनक, तू मेरी सौगात।
तेरे जैसी सुकुमारी की, दीक्षा का युग है न आज।।3।।

**मैना** – माँ मैंने अपने मन में, दृढ़ निश्चय यही किया है।
गृह पिंजड़े से उड़ने का, मैंने संकल्प लिया है।।
तू प्यारी माँ देगी आज्ञा, मुझे है यह विश्वास।
हम और तुम मिलकर ही, युग को बदल सकते आज।।3।।

**माता मोहिनी** – आज है पुत्री शरदपूर्णिमा, तेरा जनमदिन आया।
आज के दिन तूने अपना, यह निर्णय मुझे सुनाया।।
पत्थर दिल करके बेटी मैं, देती आज्ञा आज।
सुखी रहे मैना मेरी, यह ही है आशीर्वाद।।4।।

**मैना** – आज ही सच्चा जनम हुआ है, मेरा मैंने माना।
शरदपूर्णिमा का महत्त्व अब, ठीक से मैंने जाना।।
ब्रह्मचर्य सप्तम प्रतिमा ले, मैंने किया गृह त्याग।
दीक्षा ग्रहण कर मुझको, असली मिलेगा साम्राज।।4।।

**माता मोहिनी** – जनम से जिनके धन्य हुई है, शरदपूर्णिमा रात।
संयम के द्वारा उसी, पूनो का सार्थक प्रभात।।
जग वालों देखो वही कन्या, ज्ञानमती कहलाई।
आज उन्हीं की पावन जन्मजयंती बेला आई।।
सदी बीसवीं की ये गणिनी, प्रमुख हुईं विख्यात।
हम सब मनाएँ इनकी, जनम जयंती आज।।5।।

# मैना से ज्ञानमती : काव्य कथा

इक रात को इक माता पुत्री का आपस में संवाद चला।
तुम राग विराग कथाएं सुनकर बोलो किसका स्वाद भला।।

मां 'मोहिनी' थी बेटी 'मैना' दोनों ममता की मूरत थीं।
ममकार नहीं था दोनों में केवल मकार की सूरत थीं।।
'मैना' संज्ञा सार्थक करने हेतू मैना का स्वर बदला।।तुम.।।1।।

माता की ममता पिघल पिघल कर आँसू बनकर निकल रही।
बेटी का दृढ़ निश्चय सुनकर मोहिनी और भी विकल हुई।।
मां बोली कच्ची कली मेरी तू क्या जाने परिणाम भला।।तुम.।।2।।

पुत्री बोली कच्ची कलियों ने भी यह त्याग निभाया है।
देखो चन्दनबाला ब्राह्मी मां ने इतिहास दिखाया है।।
मैं भी वह पथ अपनाऊंगी दो आज्ञा माँ! इक बार भला।।तुम.।।3।।

जैसे जम्बूस्वामी ने अपनी चार पत्नियों के संग में।
वैराग्य कथा जारी रक्खी नहिं रमें रानियों के रंग में।।
फिर प्रातः महल तजा उसने दीक्षा लेकर जीवन बदला।।तुम.।।4।।

वैसे ही मैना ने अपनी माता को कथा सुनाई थी।
श्री पद्मनन्दि आचार्य रचित दुर्लभ पंक्तियां सुनाई थीं।।
मां कबसे हम सबका चारों गतियों में परिवर्तन न टला।।तुम.।।5।।

कभी इन्द्र का पद पाया मैंने कभी नरक निगोदों में भटका।
तिर्यंच मनुज पर्यायों में बस यूँ ही पड़ा रहा अटका।।
बहु पुण्ययोग से श्रावक कुल में सच्चे ज्ञान का दीप जला।।तुम.।।6।।

मां बोली ये सब शास्त्रों की बातें तुमने अपना ली हैं।
पर सदी बीसवीं में बोलो किस कन्या ने दीक्षा ली है।।
तुम जैसी सुकुमारी कन्या के बस की नहीं विराग कला।।तुम.।।7।।

फिर एक चुनौती प्यार भरी दे मैना मां से बोल पड़ी।



यदि तुम मेरी सच्ची मां हो तो दे दो स्वीकृति इसी घड़ी।।
हे मां! अब तक तो ममता दी अब समता की नव ज्योति जला।।तुम.।।8।।

विश्वास मात को था मेरी बेटी दृढ़ नियम निभाएगी।।
पर सोच रही मेरी बच्ची कैसे यह सब सह पाएगी।
इतिहास अगर यह रच देगी तो बालाओं का मार्ग खुला।।तुम.।।9।।

सच्ची मां का कर्तव्य सोच माता ने स्वीकृति दे डाली।
अवरुद्ध कंठ से बोल पड़ीं बेटी मैं बड़ी भाग्यशाली।।
हो गई विजय वैराग्य पक्ष की राग मोह तब हार चला।।तुम.।।10।।

वैराग्य के ये अंकुर मैना ने बचपन से ही उगाए थे।
उनको पुष्पित करने मानो इक मुनिवर अवध में आए थे।।
बाराबंकी में देशभूषणाचार्य गुरू का संग मिला।।तुम.।।11।।

सन् बावन की आश्विन शुक्ला चौदश रात्री की यह घटना।
तब शरदपूर्णिमा को प्रातः मैना ने पूर्ण किया सपना।।
निज जन्मदिवस ही ब्रह्मचर्यव्रत पा मानो शिवद्वार खुला।।तुम.।।12।।

मां बेटी की ये चर्चाएं जग को आदर्श सिखाती हैं।
कर सको न यदि तुम त्याग तो पर को मत रोको समझाती हैं।।
''चन्दना'' पुनः उस माता ने अपने जीवन को भी बदला।।तुम.।।13।।

# मातृभक्ति

**रचयित्री-बाल ब्र.कु. माधुरी शास्त्री**[1]

यह भारत आज नहीं युग से, नारी से रहा न खाली है।
नारी के ही कारण इसकी, गौरव गरिमा बलशाली है।।
जहाँ ब्राह्मी और सुन्दरी की, माता यशस्वती-सुनन्दा हैं।
वहाँ मोहिनी माता ने पाया, मैना सा पूनम चन्दा है।।1।।

संतान मात की गोदी में, पलकर शैशव को प्राप्त करे।
विधि का विधान देखो यह भी, माता खुद उन्हें प्रणाम करे।।
इन अजब निराली बातों का, साक्षात दर्श करवाती हूँ।
माँ रत्नमती जी का किंचित्, मैं जीवन चरित सुनाती हूँ।।2।।

तीर्थंकर अभिषव से पवित्र, साकेतपुरी इक नगरी है।
कण-कण पवित्र इस स्थल का, नहिं इस सम दूजी नगरी है।।
श्री भरतराज का एकछत्र, शासन फैला जब से जग में।
इस वसुन्धरा का भारत भू, यह नाम पड़ा तब से सच में।।3।।

षट्खंड वसुधा को जीत प्रभू ने, चक्रवर्ति पद प्राप्त किया।
पुनरपि भुजबलि श्री बाहुबली पर, चक्ररत्न को चला दिया।।
सब राज्य विभव को त्याग बाहुबलि, गिरि कैलाश पधारे थे।
तब भरत अयोध्यापति बनकर, कुण्ठित मन राज्य संभारे थे।।4।।

इस नगरि अयोध्या के मधि में, सीतापुर जिला निराला है।
महमूदाबाद ग्राम जहाँ पर, नभ से टूटा इक तारा है।।
भक्तों की भीड़ लगी रहती, मंदिर मेले रथयात्रा पर।
घंटे बाजों की ध्वनि प्रभु का, संदेश सुनाती है घर-घर।।5।।

मंदिर के ही निकटस्थ भवन, श्रेष्ठी सुखपाल रहा करते।
दाम्पत्य सुखों से पूर्ण तथा, श्रावक षट्कर्म सदा करते।।
द्वय पुत्र पुत्रिद्वय के संग में, परिवारिक आनंद बाँटा था।
निज के धार्मिक संस्कारों को, सब सन्तानों में डाला था।।6।।

1. वर्तमान में आर्यिका श्री चंदनामती माताजी (पूर्व नाम कु. माधुरी द्वारा सन् 1980 में रचित)



राजदुलारी मोहिनी इन दो, कन्या रत्नों को पाकर के।
पितु मात के हर्ष की वृद्धि हुई, इनका लालन-पालन करके।।
महिपालदास भगवानदास, इक महल के दो स्तंभ बने।
इनसे शोभित सुखपालदास, होते मन में संतुष्ट घने।।7।।

राजदुलारी बाल्य अवस्था, तरुणावस्था प्राप्त किया।
व्यवहारिक रीतिरिवाजों ने, माता से उसको पृथक् किया।।
वह सास-ससुर के घर पहुँची, तब नवजीवन प्रारंभ किया।
वैवाहिक प्रथा पुरानी है, उसको इनने आरंभ किया।।8।।

मोहिनी सभी को मोह रही, दोनों भाई संग खेल रही।
सब लाड़ प्यार में पली मोहिनी, माँ के मन को मोह रही।।
पर कोई पुत्री माता के संग, कितने दिन रह सकती है।
पुत्री पर का धन है निश्चित, वह तो पर की ही शक्ति है।।9।।

मोहिनी किशोरा को लख कर, माँ-बाप सोचते हैं मन में।
इस योग्य गुणों वाला वर हो, जिससे जोड़ी वरदान बने।।
वर की तलाश तो दूर रही, वर पक्ष तरफ से माँग हुई।
सुन्दर सुयोग्य वर को लखकर, मन की सब पूरी आश हुई।।10।।

बाराबंकी है जिला जहाँ, इक ग्राम टिकैतनगर शोभे।
जिनमंदिर के ही निकट भवन में, धनकुमार श्रेष्ठी रहते।।
सब पुत्र-पुत्रियों के संग में, आनन्दमग्न हो रमण करें।
इन सबमें छोटेलाल पुत्र के, संग मोहिनि संबंध करें।।11।।

यह बात जची सबके दिल में, बस शीघ्र कार्य प्रारंभ हुआ।
वर-वधू की राशि मिला करके, शुभ लग्न में यह संबंध हुआ।।
मोहिनि उस घर को छोड़ चली, जिसको निज मान रही अब तक।
बेटी जब तक अविवाहित है, घर से संबंध रहे तब तक।।12।।

फिर तो पति के ही चरणों में, उसका जीवन न्यौछावर है।
पति के ही घर को अपना कर, उसमें निज पर का भान करे।।
यह है रिश्ता नाता जग का, कब से चलता ही आया है।
इस बिन संसार और मुक्ति का, मार्ग नहीं बन पाया है।।13।।

दो वर्ष अनंतर मोहिनि ने, इक कन्या रत्न प्रदान किया।
जो मैना से बन ज्ञानमती, सारे जग का कल्याण किया।।
जन-जन को ज्ञानदान देकर, निज सम्यग्ज्ञान प्रचार करें।
जिनकी वाणी रस अमृत से, नर निर्झर अमृत प्राप्त करें।।14।।

मैना के दीक्षित जीवन से, इनके मन में वैराग्य हुआ।
सामान्य संयमित जीवन कर, दो प्रतिमा के व्रत ग्रहण किया।।
निज व्रत को पालन करके भी, पति आज्ञा में अग्रणी रहीं।
कर्तव्यपरायण हो करके, सब पुत्र पुत्रि को पाल रहीं।।15।।

कुछ काल अनंतर ही इनके, घर में इक घटनाचक्र घटा।
इक पुत्री मनोवती ने भी, मैना के पथ पर कदम रखा।।
सब भाई-बंधु और मात पिता, समझा-समझा कर हार गए।
उस अडिग प्रतिज्ञा के समक्ष, सबने ही मस्तक झुका दिए।।16।।

माता मोहिनि के ऊपर यह, क्या वज्राघात प्रहार हुआ।
वे समझ नहीं पा रहीं कि यह, किस कालचक्र का वार हुआ।।
कुछ क्षण विचार करतीं वे भी, संसार पंक से निकलूँ मैं।
पर पुनः नारिजीवन के कर्तव्यों, का ध्यान करें मन में।।17।।

वह मनोवती बन अभयमती, जग अभयदान का पात्र बना।
गुरु ज्ञानमती से ज्ञान ग्रहण कर, जीवन का कल्याण किया।।
मोहिनी गृहस्थ में रहकर के, षट्कर्मों का पालन करतीं।
नित धर्मनीति से चार पुत्र, नव पुत्री का लालन करतीं।।18।।

ज्यों समय बीतता जाता है, पितु मात सभी घबड़ाते हैं।
कोई पुत्र या पुत्री न जाए चला, बस यही भावना भाते हैं।।
पर क्या कोई नर है जग में, विधि का विधान जो टाल सके।
अनहोनी भी होके रहती, नहिं होनहार कोई टाल सके।।19।।

जैसे तैसे कर सहन किया, तब पिता ने इन आघातों को।
पच्चीस दिसंबर सन् उनहत्तर, चले स्वर्ग तज प्राणों को।।
सब नरनारी के बीच समाधी-मरण हुआ बहुशांती से।
जिनमुनि का आशीर्वाद मिला, नवकार मंत्र पढ़ते-पढ़ते।।20।।



उस दिन से माँ के जीवन में, 'माधुरी' आ गया परिवर्तन।
इस जग में अपना कौन बचा, जिसमें करती मैं अपनापन।।
पर पुत्रों की विक्षिप्त दशा को, देख हृदय कुछ द्रवित हुआ।
कुछ दिन गृह आश्रम में रह, कामिनी पुत्रि का ब्याह किया।।21।।

माधुरी और त्रिशला इन दो, पुत्री का और सहारा था।
अविवाहित बेटा था रविन्द्र, जो एकमात्र गृहतारा था।।
भादों दशलक्षण महापर्व, जो एक वर्ष में आता है।
अजमेर महानगरी में नर-नारी का लग रहा तांता है।।22।।

आचार्य धर्मसागर जी का, चउविध संघ वहाँ विराज रहा।
श्री ज्ञानमती माताजी के, उपदेशामृत का ठाठ वहाँ।।
कैलाश पुत्र निज परिकर सह, माँ को संग लेकर निकल पड़े।
मुनिसंघ दर्श के इच्छुक हो, आहारदान के भाव लिये।।23।।

दश दिवस वहाँ पर रह करके, चउविध दानों का लाभ लिया।
संघ साधू की परिचर्या कर, उपदेशामृत का पान किया।।
इक दिन कैलाशचन्द्र बोले, माँ अब घर को चलना चहिए।
गृहकाज और व्यापार सभी की, देखभाल करना चहिए।।24।।

माँ बोलीं तुम सब घर जाओ, थोड़े दिन मुझको रहने दो।
इन सबकी त्याग-तपस्या से, मुझको भी शिक्षा लेने दो।।
घबड़ाओ मत बेटा मैं तो, कुछ ही दिन में घर आऊँगी।
मेरा शारीरिक स्वास्थ्य कहाँ, जो दीक्षा मैं ले पाऊँगी।।25।।

मैं तो केवल इस बाला की, प्रतिभाशक्ती को देखूँगी।
इस अल्प आयु में केशलोंच, कैसे करती यह देखूँगी।।
माँ की इन बातों को सुनकर, बेटे को कुछ तो धैर्य बंधा।
बोले, माँ मैं कुछ ही दिन में, छोटे भाई को भेजूँगा।।26।।

दोनों छोटी बहनों को ले, कैलाश चल दिए थे घर को।
लेकिन इक संशय बार-बार, होता रहता उनके मन को।।
माँ कभी न सोचे यह मन में, मेरा इस जग में कौन रहा।
मैं भी माताजी बन जाऊँ, यह सांसारिक संबंध रहा।।27।।

कुछ दिवस बीतते ही देखो, यह कैसा हुआ धमाका था।
माँ मोहिनि भी दीक्षा लेंगी, यह आया घर संदेशा था।।
इस समाचार को सुन करके, मानो सबको मूर्च्छा आई।
यह अनहोनी कैसे होगी, यह कैसी अशुभ घड़ी आई।।28।।

कैलाश-प्रकाश-सुभाष सभी, तत्क्षण ही घर से निकल पड़े।
माँ की दीक्षा रुकवाने को, आचार्यश्री के चरण पड़े।।
क्या ऐसी भी दीक्षा होती, जिसमें न किसी की सम्मति हो।
किसकी हस्ती है जो मेरी, माँ को दीक्षा दे सकती हो।।29।।

आचार्यश्री पड़ गए धर्मसंकट में सोच करें मन में।
इक ओर मोहिनी खड़ी सुदृढ़, हाथों में श्रीफल ले करके।।
चतुराहारों का त्याग किया, जब तक दीक्षा नहिं पाऊँगी।
सांसारिक संबंध पुत्र-बहू, मैं वापस घर नहिं जाऊँगी।।30।।

सब पुत्र-पुत्रियाँ बिलख रहीं, माँ तुमने क्या सोचा मन में।
पितु का साया तो उठ ही गया, माँ भी निर्मम हो गई हमसे।।
कुछ दिन तो चलो रहो घर में, हम सबको धैर्य बंधाओ तुम।
माँ-बाप बिना असहाय बालकों, को कुछ तो समझाओ तुम।।31।।

बेटियाँ सभी रोतीं कहतीं, माँ पीहर कैसे जाएंगे।
माँ बिन क्या घर अच्छा लगता, अरमान सभी खो जाएंगे।।
दामाद सभी रो रहे खड़े, माँ ऐसा अभी न सोचो तुम।
छोटे भाई भगवानदास, रो रहे बहन कुछ बोलो तुम।।32।।

सब कुटुंबियों का रुदन देख, अजमेर भी विह्वल हो उठता।
जन-जन की आँखों में अश्रू, यह दृश्य परम कारुणिक रहा।।
इक बार सभी के होठों से, यह शब्द अवश्य निकल जाता।
ऐसी दीक्षा मत होने दो, इनको दे दो इनकी माता।।33।।

लेकिन मोहिनी प्रतिज्ञा का, पालन करके दिखलाएगी।
मोहिनी आज निर्मोहिनि बन, गृहपिंजड़े से उड़ जाएगी।।
माँ को देखा जब निराहार, तो सबका ही दिल कांप गया।
लाखों प्रयत्न करके हारे, तब माँ के चरण प्रणाम किया।।34।।



माँ जैसी मरजी हो कर लो, आहार चलो तुम ग्रहण करो।
हम निराहार नहिं देख सकें, तुम क्यों शरीर कमजोर करो।।
देखो सुभाष बेहोश पड़ा, इस पर तो थोड़ा तरस करो।
सब पुत्र-पुत्रियों को खुद ही, क्यों दुख सागर में मग्न करो।।35।।

लेकिन माँ जैसे पत्थर की, नहिं एक अश्रु है आँखों में।
वैरागिन बन दीक्षा लेऊँ, इक यही आश है बस मन में।।
मगशिर वदि तीज तभी आई, यह आशा पूरी करने को।
मोहिनी बन गईं "रत्नमती", तब मोक्षलक्ष्मी वरने को।।36।।

कर रहीं ज्ञानमती केशलोंच, अपने सम उन्हें बनाने को।
लाखों जन समुदायों के मधि, जैनी चर्या समझाने को।।
परिजन-पुरजन सब खड़े हुए, आँखों से अश्रू बहा रहे।
नहिं बोल सके लेकिन कुछ भी, बस मौन सम्मती दिला रहे।।37।।

आचार्यश्री ने सोच-समझकर, एक बार पूछा फिर से।
मोहिनी तुम्हें तो मोह नहीं, किसी पुत्र-मित्र संबंधी से।।
तब उठीं मोहिनी हिम्मत से, चउसंघ की साक्षी ले करके।
सब जीवों से कर क्षमाभाव, मन में समता धारण करके।।38।।

फिर निश्चल होकर बैठ गईं, गुरुवर मुझको दीक्षा दीजे।
श्रीवीतराग के चरणों में, हो मति ऐसी शिक्षा दीजे।।
आर्यिका व्रतों को धारण कर, स्त्रीलिंग से मुक्ती पाऊँ।
बनकर निर्ग्रंथ तपश्चर्या कर, निज में ही मैं रम जाऊँ।।39।।

मुनिसंघ ने भी विमर्श करके, तब "रत्नमती" यह नाम दिया।
रत्नों की खान कहाती हैं, यह रत्नप्रसूता मात महा।।
चल दिए कुटुंबी सभी दुखित, मन माँ का आशीर्वाद लिए।
अब मात बन गई जगतमात, यह कह सब गृह प्रस्थान किए।।40।।

माधुरी यह दिल में सोच रही, मैं ही अब क्यों घर में जाऊँ।
आजीवन ब्रह्मचर्य लेकर, माँ की छाया में रह जाऊँ।।
नहिं रोक सके कोई बंधू, उसकी भी अटल प्रतिज्ञा को।
सब मान रहे इसको कोई, भव-भव में करी तपस्या हो।।41।।

यह दृश्य देख करके रवीन्द्र भी, सोचे तत्त्वव्यवस्था को।
स्त्रीपुत्रादि नहीं कोई, संग जाते जीव अकेला हो।।
कुछ दिन घर जाकर भाई के, संग रह सबको संतुष्ट किया।
दो वर्षों के पश्चात् धर्मसागराचार्य का दर्श किया।।42।।

श्रीफल ले करके हाथों में, जा गुरुवर चरण प्रणाम किया।
भवबंधन से मुक्ती हेतू, शुभ ब्रह्मचर्य व्रत प्राप्त किया।।
इस समाचार के मिलने पर, घर में भी हाहाकार हुआ।
भाई-भाभी सब रोते थे, मानो क्या वज्राघात हुआ।।43।।

यह दैव बड़ा निर्दयी बली, कैसा यह रंग दिखाता है।
छोटे-छोटे भाई बहनों को, हम सबसे छुड़वाता है।।
इस तरह सोचते सब भाई, सांसारिक भोग न रुचते हैं।
फिर भी गृहस्थ में रह करके, पूजादानादिक करते हैं।।44।।

श्री ज्ञानमती माता सदृश ही, रत्नमती आर्यिका बनीं।
माता पुत्री संबंध नहीं, रह गया धर्मनीती समझीं।।
कुछ दिन आचार्य संघ रह करके, धर्मसाधना करती थीं।
गुरु का आशीर्वाद पा करके, निज को धन्य समझती थीं।।45।।

आर्यिकासंघ मंगल विहार, दिल्ली की ओर करा जब ही।
माँ रत्नमती भी इस ही संघ में, ज्ञानमती के संग रहीं।।
दिल्ली महानगरी इन्द्रप्रस्थ, कहलाती है इस भूतल पर।
पच्चीस सौवें निर्वाणोत्सव की, धूम मच रही इस थल पर।।46।।

दिल्लीवासी के भाग्य जगे, माँ ज्ञानमती दर्शन करके।
निर्वाणोत्सव के अवसर पर, ऐसी विदुषी को पा करके।।
फिर क्या था इस सुन्दर सुवर्ण, अवसर पर चार चाँद लगते।
भारत के कोने-कोने से, कितने ही संत तभी चमके।।47।।

श्री धर्मसागराचार्य देशभूषण आचार्य पधारे थे।
मुनि विद्यानंद माँ ज्ञानमती, ये साधूजगत सितारे थे।।
इन गुरुओं के दर्शन कर करके, रत्नमती पुलकित होतीं।
कुछ दिवस बाद माँ ज्ञानमती संग, हस्तिनागपुर चल देतीं।।48।।



जहाँ जम्बूद्वीप विशाल तीर्थ, हो रहा जगत में न्यारा है।
इसके मधि मेरु सुदर्शन गिरि, जिनवर अभिषव से प्यारा है।।
मेरू के सिद्ध जिनालय के, दर्शन-वंदन करती रहतीं।
शास्त्रिक पौराणिक बातों का, साक्षात् दर्श करती रहतीं।।49।।

ये रत्नमती माताजी के, जीवन की सब स्मृतियाँ हैं।
माँ ज्ञानमती और अभयमती, सब इनकी ही तो कृतियाँ हैं।।
गर बाँस नहीं होते तो नहिं, बज सकती थी बांसुरी कभी।
जग उऋण नहीं हो सकता है, उपकारों से "माधुरी" कभी।।50।।

इस जग में सूरज और चंदा का, वास प्रकाश रहे जब तक।
माता की दिगदिगन्तव्यापी, चहुँ ओर कीर्ति फैले तब तक।।
माँ रत्नमती के चरणों में, सुमनांजलि अर्पित करती हूँ।
मेरा प्रयास यह और फले, सर्वस्व समर्पण करती हूँ।।51।।

# कहानी चार अनुयोगों की
## काव्य कथा

एक बार की बात सुनो भाई, इक बच्चा माँ के संग चला।
पथ में चलते-चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।। टेक.।।

होता क्या है कुछ दूर पहुँचकर, बच्चा ठोकर खाता है।
माँ की अंगुली को छोड़ वहीं, मुन्ना रोने लग जाता है।।
माँ बोली कल तेरे भैया को चोट लगी, वह नहिं रोया।
तू भी तो उसका भाई है चल खेल खिलौना भी खोया।।
प्रथमानुयोग ऐसे आदर्शों, को बतलाता सदा चला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।1।।

बच्चे का रोना नहीं रुका, माँ के इस सम्बोधन पर भी।
तब माँ भी और तरीके से, समझाने लगी सड़क पर ही।।
कल तूने अपने भैया को हंस-हंसकर और चिढ़ाया था।
उसके फल में ही गिरा आज तू इसी मार्ग पर आया था।।
करणानुयोग शुभ-अशुभ कर्म के सुख-दुःख फल को रहा चला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।2।।

इतना कहते ही और चिढ़ गया मुन्ना रोकर कहता है।
भैया पर मैंने हंसा कभी, वह भी तो मुझ पर हंसता है।।
माँ भी कुछ गुस्से में बोली, तुमने नीचे क्यों नहिं देखा।
पथ देख के चलने वाला मानव, नहिं गिरता हमने देखा।।
चरणानुयोग पथ देख-देख चलने की सिखलाता है कला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।3।।



तो भी वह बालक चुप न हुआ, आँसू का झरना फूट पड़ा।
रोना सिसकी में बदल गया, माँ के आंचल पर कूद पड़ा।।
माँ तो ममता की मूरत है, उसने मुन्ने को उठा लिया।
तू मेरा राजा बेटा है, नहिं चोट तुझे लगती भइया।।
द्रव्यानुयोग आत्मा को राजा बेटा कह जड़ से बदला।
पथ में चलते चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।4।।

ऐसे ही सरस्वती माता, जग को यह कला सिखाती है।
चारों अनुयोगों में निबद्ध, जिनवाणी राह दिखाती है।।
प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग स्वाध्याय करो।
क्रम-क्रम से फिर द्रव्यानुयोग में, आत्मा का अध्याय पढ़ो।।
'चंदनामती' जग इसी तरह से, सीखेगा अध्यात्म कला।
पथ में चलते-चलते माँ ने, सिखलाई कैसी ज्ञान कला।।5।।

# गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी एवं आर्यिका श्री चंदनामती माताजी की काव्य वार्ता

*तर्ज –सावन का महीना.....*

**चन्दनामती** – तू पूनो का चन्दा, और मैं मावस की रात।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।1।।

**श्री ज्ञानमती माताजी** – मैंने तुझे चखाया, ज्ञानामृत का जो स्वाद।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।2।।

**चन्दनामती** – जीवन के इन स्वर्ण क्षणों को, नहिं सोचा था बचपन में।
देखा पहली बार तुझे जब, विस्मय होता था मन में।।
मैं क्या जानूँ तेरी, पदवी है जग में ख्यात।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।3।।

**श्री ज्ञानमती माताजी** – ग्यारह बरस उमर में तू, मेरे दर्शन को आयी थी।
उस क्षण ही मैंने तुझको कुछ, ज्ञान की बात सिखाई थी।।
वही ज्ञान की शिक्षा, हो आई तुझको याद।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।4।।

**चन्दनामती** – बाल उमर में मुझको माता, तुमने जो संस्कार दिये।
उसका ही फल मैंने तुमसे, तीन रत्न स्वीकार किये।।
तू है ज्ञान की गंगा, पावनता तेरी ख्यात।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।5।।

**श्री ज्ञानमती माताजी** – मेरे ज्ञान की सरिता से तुम, चाहे कितना ज्ञान भरो।
रत्नत्रय की वृद्धी करके, निज पर का कल्याण करो।।
गुरु आज्ञा में बिताए, तुमने अपने दिन रात।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।6।।

**चन्दनामती** – जिस जननी ने जन्म दिया, मैं उसको कभी न भूलूँगी।
तेरे वचनों के मोती मैं, अपने दिल में भर लूँगी।।
युग युग तक तू मुझको, दे अपना आशिर्वाद।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।7।।



**श्री ज्ञानमती माताजी** – महावीर की परम्परा में, कुन्दकुन्द आचार्य हुए।
इस क्रम में श्री शांतिसिंधु इस सदि के प्रथमाचार्य हुए।।
उनके दर्शन करके, पाया मैंने सन्मार्ग।
इसीलिए तो मेरी तेरी, जल्दी बन गई बात।।8।।

**चन्दनामती** – शांतिसिंधु के पट्टशिष्य, श्री वीरसिंधु की शिष्या तुम।
दृढ़ता औ संकल्प की मूरत, हरतीं जग का मिथ्यातम।।
कहे 'चन्दना' जनम जनम में, चाहूँ तेरा साथ।
बोलो माता मेरा तेरा, हो गया कैसे साथ।।9।।